UNIVERSAL LIBRARY

OU_182938

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 80 P18H Accession No. H 3127

Author पाण्डेय सुधाकर

Title हिन्दी - साहित्य

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिन्दी-साहित्य

=१९५४=

सम्पादक
सुधाकर पाण्डेय

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,
पो० बक्स नं० ७०, ज्ञानवापी,
बनारस ।

मूल्य : अढ़ाई रुपया

क्यों ?

'हिन्दी-प्रचारक' के साहित्य अंक की एक प्रति भी शेष नहीं। माँग पर माँग आ रही है। बाध्य होकर उस सामग्री का पुनर्मुद्रण इस रूप में किया जा रहा है। अनेक विद्वानों ने इसे पुस्तक का रूप देने के लिए आदेश भी दिया है। पत्र-पत्रिकाओं की सूची उसमें बढ़ा दी गयी है। यदि सभी परिस्थितियाँ समान भी रहीं तो संभवतः हिन्दी में पुस्तकाकार किया गया यह पहला आयोजन और भी नवीन रूप ग्रहण करे। इसके लिए इसी भाँति श्री कृष्णचन्द्र बेरी, ओमप्रकाश बेरी, दीनानाथ कश्यप, 'प्रेम' हरिद्वारी और मूलचन्द जी का सहयोग भविष्य में प्राप्त होगा, ऐसा विश्वास है।

विनीत

काशी, बसंत-पंचमी–२०११।

सुधाकर पाण्डेय

उन साहित्यकारों को जिन्होंने १९५४ में रचना की

अनुक्रमणिका

१–हिन्दी-साहित्य (वस्तु-स्थिति)–संपादक
२–हिन्दी जगत और उसकी समस्याएँ––(संमेलन की दृष्टि में)–श्री जगदीशस्वरूप, आदाता–हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग
३–केन्द्रीय सरकार और हिन्दी–(सूचना-विभाग भारत सरकार)
४–संसद में हिन्दी की प्रगति–पन्नूलाल द्विवेदी
५–संस्मरण साहित्य और रेखा-चित्र–लक्ष्मीशंकर व्यास, एम० ए०, आनर्स
६–आलोचना तथा निबंध–'प्राणप्रिय'
७–कहानी–संपादक
८–नाटक तथा एकांकी–सम्पादक
९–कविता– ,,
१०–साहित्यकार–हरिशंकर शर्मा
११–विज्ञान साहित्य–शिवगोपाल मिश्र एम० एस०-सी०, रिसर्च स्कालर
१२–उपन्यास–संपादक
१३–विविध-साहित्य
१४–पत्र-पत्रिकाएँ–संपादक
१५–घटनाचक्र
१६–विभिन्न संस्थाएँ
१७–१९५४ के प्रमुख प्रकाशन
१८–कुछ पत्र-पत्रिकाएँ–सूची

हिन्दी साहित्य

वस्तु-स्थिति

साहित्य में किसी प्रवृत्ति विशेष का उद्भव घटना के रूप में एकाएक नहीं हुआ करता, अपितु वातावरण में बहुत पहले ही उसके संस्कार का अंकुर अज्ञात रूप से अंकुरित हुआ करता है। जब वह दृष्टिगत होने लगता है, तो साहित्य-निर्माण की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से सामने आती हैं। इन प्रवृत्तियों का जनक वातावरण हुआ करता है। आज के भारतीय समाज के वातावरण की पूर्व पीठिका १९५४ के वातावरण के निर्माण के मूल में है। कहना न होगा कि स्वतंत्रता के बाद निर्माण के जिस आयोजन का अनुष्ठान भारत ने किया है, वह निश्चय ही हमारे संकल्पों की गौरव-गाथा का आख्यान करता है; किन्तु दुःख की बात है कि उस गौरव को निर्माण के रूप में मूर्त्तित करने का उल्लास जनता में नहीं दीख पड़ रहा है। इस दृष्टि से यदि यह देखा जाय तो यह वातावरण इस वर्ष भी बना रहा। यद्यपि राजनीतिक कीर्ति की विशाल पताका भारत की विश्वमें जितनी ऊँचाई पर इस वर्ष फहरी उतनी संभवतः अन्य किसी देश की नहीं। इस सर्जनात्मक आयोजन में जनजीवन की उदासीनता की यदि छान-बीन की जाय तो निश्चय ही यह मानना पड़ेगा कि देश में आत्मा को जगानेवाला साहित्यकार भी कोई ऐसी कर्म-चेतना का आलोकपूर्ण दीप न जला सका, जिससे जन-मन के भीतर प्रतिष्ठित विरक्ति की भावना को अनुरक्ति की ओर उन्मुख किया जा सके। इसका भी सामान्य कारण वातावरण ही है। जहाँ देश आर्थिक दृष्टि से निरंतर सम्पन्न होता जा रहा है, वहीं कलाकारों के सामने जीवन-मरण की समस्या आर्थिक जीवन के निर्वाह के लिये विभीषिका स्वरूप खड़ी है। यद्यपि राज्य तथा केन्द्र की सरकारें कुछ अर्थों में इस बात के लिये सजग हैं कि ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाय ताकि जीवन का चतुर्दिक स्वस्थ विकास देश में सम्पन्न हो सके। उनमें कुछ का प्रयत्न स्तुत्य भी है। पर वे यह मान बैठी हैं कि केवल बजट बनाकर अर्थ का वितरण कर देने मात्र से कलाकारों का जीवन ऐसा हो सकेगा कि वे चेतनापूर्ण वातावरण की प्रतिष्ठा के प्रति जनता में आस्था की भावना उत्पन्न कर सकेंगे। यह बिलकुल भ्रम है। पात्र और वर्णका विचार निर्माणात्मक कार्यों में न करना कार्य की प्रगति को अवरुद्ध करना है। सामान्यतः सरकार द्वारा किये गये प्रयत्न—वे पुरस्कार हों या अनुदान, ऐसे हाथों में जाते हैं, जो आर्थिक दृष्टि से प्रायः मजबूत रहा करते हैं। इसमें सरकार का नहीं उस यंत्र का दोष है जो सरकार द्वारा निर्माण करने के लिये संस्थापित किया जाता है। जिन लोगों के हाथ में वितरण और दायित्व का अधिकार आता है, सामान्यतः वे उन यंत्रों द्वारा सरकारी यंत्र के पुर्जे बन पाते हैं जो कर्म नहीं, आस्था नहीं, कृतित्व नहीं वरन परस्पर सौपानिक वृत्ति के द्वारा प्रतिष्ठित रहते हैं। जो लोग उनकी प्रगति के प्रसार तथा विचार के अवयव होते हैं वे ही उससे लाभान्वित हो पा रहे हैं। लाभ की भावना व्यक्ति में चेतना जगा सकती है, लेकिन समाज के लिये तो त्याग और न्याय की भावना ही चेतना जाग्रत करने में समर्थ हो सकती है। इस यांत्रिक माया का परिणाम विषम भेद, परस्पर कलह तथा सत्ता-प्राप्ति में परिसीमित हो उठता है। कहना न होगा कि यह सत्ता उन लोगों को प्राप्त है, जिनकी पहुँच उस यंत्र तक है जो जनता में जीवन संचारित करने के लिये प्रतिनिधि चुना गया है। साधक और तपस्वी वृत्ति के साहित्यकार, जिनके भीतर निर्माण की अदम्य क्षमता होती है, हाथ पसारने के आदी नहीं हुआ करते। वे तो अमृत पान करनेवाले जीव हुआ करते हैं, फिर भी मनाय ही है; उन्हें यह देखकर कि साधना का, सत्य का, सम्मान नहीं हो रहा है एक प्रकार की विरक्ति की भावना से जी मसोस कर रह जाना पड़ता है। इस जी मसोसने का परिणाम उनके कृतित्व पर पड़ता है, इसे सहज ही देखा जा रहा है।

वैभव के बुल्ले जो नहीं पकड़ पा रहे हैं, उनमें तीन प्रकार की भावनाएँ दीख पड़ रही हैं। प्रथम तो ऐसे लोग हैं, जो यह चाहते हैं कि साहित्य-रचना के बल पर, जीवन की आर्थिक भूमि पर साहित्य का महल रचा जाय। कहना न होगा कि ऐसे लोग अपने कृतित्व को, जो जीवन और अन्तरात्मा की वाणी है, उसी प्रकार बेचना चाहते हैं जिस प्रकार ग्राहक की इच्छा पर जन-पद कल्याणियाँ अपनी भाव-भंगिमा बेचा करती हैं। ऐसे लेखकों में अनेक प्रतिष्ठित लेखक भी इस वर्ष दीख पड़े जिन्होंने अतीत में साधना की है। साधना के परिणाम से उन्हें आत्म संतोष नहीं मिला अपितु वैषम्य की पीड़ा से आक्रान्त हो अर्थो-

पार्जन को ही जीवन का सर्वस्व उन्होंने समझ लिया। हजारों वर्ष की परवशता ने भारत की अधिकांश जनता के मानस में मानसिक कीटाणुओं का आवास बना दिया है। उसकी रुचिने हलके-फुलके मनोरंजन को ही आनन्द का चरम उत्कर्ष समझ लिया है। इन कीटाणुओं से ग्रसित व्यक्ति घेरे में बन्दी रहने ही में जीवन का चरम साफल्य समझते हैं। कहना न होगा कि अधिकांश कलाकार, जो जन-जीवन के सजग प्रहरी ही नहीं, अपितु जन-मन के वास्तविक नेता हैं, वे भी अर्थ के लोभ में उसके इंगित पर साहित्य का निर्माण कर रहे हैं। इस साहित्य के नियमन में वे अस्वस्थ वृत्तियाँ साकार हो प्रस्फुटित हो रही हैं जो अस्वस्थ मन से नाता रखती हैं। उनमें नेतृत्व की क्षमता कहाँ, वे तो साहित्य को मिट्टी का खिलौना समझते हैं; उन्ह पैसा चाहिये, जो सबसे अधिक पैसा दे दे वह सबसे अच्छा ग्राहक और वही सबसे अच्छा साहित्य भी। ऐसी ही अवस्था में कामवासना प्रपीड़ित नग्न साहित्य का निर्माण बड़े-बड़े लोग बड़े-बड़े सिद्धान्तों की दोहाई देकर कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति सर्वत्र दीख पड़ रही है। जब व्यक्ति मदान्ध हो जाता है, तो सत्य-दर्शन नहीं कर सकता। वह तो मद के स्वर में बोलता है, उठता है, बैठता है तथा अपना जीवन चलाता है। इस मद की मादकता में ऐसे बड़े-बड़े कलाकार बह गए हैं, जिनसे बड़ी-बड़ी आशाएँ अतीत में हिन्दी ने की थीं।

केवल इतना भर ही नहीं, केवल पैसा ही साहित्य-रचना का माप दंड नहीं, आज साहित्य की स्वतंत्रता सत्ता पर भी आघात दीख पड़ रहा है। प्रत्येक युग और प्रत्येक काल में विभिन्न विचारधाराओं ने साहित्य पर आक्रमण कर उसका उपयोग अपने हित में करने का सतत प्रयत्न किया है। भक्ति-काल में दर्शन ने, रीति-काल में कामवासना ने; पर साहित्य की सत्ता सदैव अपनी बनी रही। वह तो ज्ञान के सभी अंगों से विभिन्न रस लेकर अमृत की सृष्टि करता रहा है, आनन्द और उल्लास का लोक बसाता रहा है। आज भी वैसी ही स्थिति बहुत स्पष्ट रूप में सामने आ रही है। कोई सोशलिस्ट प्रगतिशील, कोई कम्युनिस्ट प्रगतिशील, कोई सर्वोदयवादी बनने में गौरव का अनुभव कर रहा है। राजनीतिक स्वार्थ के लिये बनी इन राजनीतिक पार्टियों का सिद्धांत समय-समय पर परिवर्तित होता रहता है तथा इनका मूल ध्येय देश की शासन-सत्ता पर आधिपत्य जमाना रहता है। यद्यपि जनमंगल सबका प्रमुख ध्येय हुआ करता है; किन्तु ये उसी कार्य में जनमंगल देखती है जिस कार्य के द्वारा ये सत्ता प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें। इनके सामने सत्ता हुआ करती है, साधना नहीं। राजनीतिक सत्ता का लोभ कितना मादक और सारहीन होता है इसे प्रसादजी ने बड़ी अच्छी तरह अपने नाटकों में अभिव्यक्त कर दिया है। फिर भी उनके प्रति आकर्षण व्यक्ति को हो ही जाता है। साहित्य में जितने व्यक्ति कार्य करते हैं वे सबके सब ऐसे नही हुआ करते जिन्हें सामाजिक सत्ता के क्षणिक चमत्कार का प्रभाव मोहित न करता हो। वे उससे अपने को बचा नहीं पाते और अपने को सबल करने के लिये उनके सिद्धान्तों पर साहित्य का निर्माण करते हैं; क्योंकि इससे दल विशेष के लोग तो उनकी प्रशंसा कर ही दिया करते हैं, तथा उनके साहित्य को महान् बतानेवाले कुछ लोग मिल जाया करते हैं। राजनीति चंचला है, साहित्य की साधना सतत तपस्या है; चंचला और तपस्या का संयोग योग की सृष्टि नहीं कर सकता, चकाचौंध भले ही पैदा करदे। यही चकाचौंध अनेक तरुणों के तथा प्रौढ़ों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु भी इस वर्ष बना रहा। राजनीतिक सत्ता ही केवल प्रमुख रूप से साहित्य को नहीं बाँध रही थी अपितु बाजार के आधार पर बनी दृष्टि भी विभिन्न सिद्धान्तों के घेरे में साहित्य को जकड़े रही। जब तक धारा का स्वच्छंद प्रवाह न होगा, तब तक साहित्य नियमन नहीं कर सकता और जो साहित्य नियमन नहीं कर सकता वह प्राणवान नहीं हो सकता और मरी वस्तु के ग्राहक ही कितने।

दूसरे प्रकार के साहित्यिक ऐसे दीखे जो न तो किसी विचारधारा के हैं, न उन्होंने अपनी कोई विचारधारा बनाई है; अपितु कुछ न कुछ लिख दिया करते हैं। इस कुछ न कुछ लिखने का महत्व कुछ न कुछ ही है। तीसरे प्रकार के साहित्यिक ऐसे दीखे जो फर्माइशी माल तैयार करनेवाले हैं। उनसे राम की कहानी से लेकर विनोबा के सर्वोदयवाद तक पर लिखाया जा सकता है। संस्कृत न जानते हुए भी, उनसे संस्कृत के महान् काव्य-शास्त्रों का अनुवाद कराया जा सकता है। ये हविस के भूखे तो हैं ही, साथ ही पैसा भी इनमें से कुछ के मूल में है। इस प्रकार पैसा सामान्यतः लोगों को नचा रहा है।

इसके लिए आज की शिक्षा-व्यवस्था का उत्तरदायित्व सर्वाधिक है। शिक्षा का ज्यों-ज्यों विकास होता है त्यों-त्यों स्वस्थ वृत्ति के लोगों में साहित्य के अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ती है; किन्तु हमारी शिक्षा-व्यवस्था ऐसी नींव पर आद्धृत है, जो पढ़ने-लिखने की ओर नहीं अपितु डिग्री प्राप्त करने में ही जीवन की चरम सफलता समझती है; क्योंकि शिक्षा के विकास का मापदंड डिग्रियाँ हुआ करती हैं। वह डिग्री प्राप्त करने के बाद कोई ऐसी भावना मन में नहीं भरती जो ज्ञान-पिपासा के प्रति सजग एवं सतत सचेत रखे। इसका परिणाम यह होता है कि वैसे ही साहित्य का प्रणयन और विकास

होता है जो परीक्षा तथा अध्ययन के विषय सूची में निर्धारित हो सकें।बुद्धों को कष्ट देने का कार्य और भी कम उन बेकार व्यक्तियों ने कर दिया है जो रात भरमें परीक्षा पास करने के लिए पुस्तक लिख दिया करते हैं। अतएव अधिकांश उपाधि धारी सज्जन इन्हीं एक रात की शिक्षा के ज्ञान से संवलित हो उस सत्ता के अंग बन उठते हैं, जिस सत्ता द्वारा ज्ञान के विकास का नियमन किया जाता है। इनमें से जिन कुछ लोगों को पढ़ने की लत खुदानखास्ता लग जाती है वे चाहते हैं कि अधिक से अधिक अंक परीक्षा में प्राप्त कर लें। एटम के इस युग में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले सहज ही यह समझ लेते हैं कि अंकों का दाता कौन महादानी होगा। उस महादानी की कृतियों को वे घोट डालते हैं, जगह-जगह बिना अपनी बुद्धि को प्रयोग में लाये,स्मृति का प्रयोग अपनी कापियों पर मूर्त कर देते हैं। अच्छे अंक प्राप्त हो जाते हैं, ऊँची डिग्रियां मिल जाती हैं। सुसज्ज उपाधि-पत्रों से विभूषित इनमें से अनेक उस यंत्र के पहिये बन जाते हैं, जिस पर शिक्षा का दायित्व है। फिर वे उन्हीं साधनों का उपयोग यंत्र संचालन में करते हैं जिन साधनों के भीतर वे संचालित होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे इतने बड़े तत्वदर्शी हो जाते हैं कि सोपान की मजबूती, ऊँचाई, लम्बाई और चौड़ाई बिना पढ़े ऐसी वाणी में अभिव्यक्त करते हैं जैसे संसार का सर्व ज्ञान सम्पन्न, सर्व ग्रन्थ अध्येता वही हों। ऐसी प्रवृत्ति उनके अवरोध का कारण बनती है, जो वास्तव में रचना में लगे हुए लोग होते हैं। ये उनका पांव पकड़ कर चूमते नहीं, खींचते हैं तथा सारी शक्ति गिराने और उठाने में लगा देते हैं। इस शक्ति का दर्शन इस वर्ष भी साहित्य में हुआ है और इतने व्यापक पैमाने पर हुआ है जितना गत वर्षों में नहीं। कितनी स्वस्थ प्रगति की निशानी है, यह इससे जाना जा सकता है। इसका परिणाम यह भी होता है कि जो लोग वास्तव में साहित्य के क्षेत्र में रुचि संस्कार की भावना से आते हैं वे इस रंग-मंच पर अपने को उपयुक्त न पाकर घिसक जाने ही में जीवन का कल्याण समझते हैं।

और बहुत बड़ी विपत्ति साहित्य-रचना में गुटबन्दी है। ये गुट 'लिहो लिहो' की भांति उसी प्रकार नाटक कर रहे हैं, जिस प्रकार का नाटक लड़कों के दल उद्धत हो जाने पर किया करते हैं। साहित्य व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त होता है भले ही व्यक्ति सामाजिक प्राणी हो। जहां वह समाज से लेता है, वहीं समाज को देता भी है। लेन-देन की यह क्रिया तभी स्वस्थ वृत्ति ग्रहण कर सकती है, जब लेने-देने वाले दोनों के अन्तस्थल शुद्ध हों। सन् ५४ में अधिकांश ऐसी स्थिति नहीं दीख पड़ी।

उपर्युक्त अंशों को देखकर सहज ही ऐसी कल्पना कोई भी व्यक्ति कर सकता है कि वर्तमान साहित्य के प्रति मुझ में निराशा की भावना है। वास्तवता ऐसी नहीं है। वस्तु स्थिति तो यह है कि इन विकारों के बोध के बिना स्वस्थ साहित्य के उद्भव की कल्पना अप्रासंगिक होगी। जब अन्धकार प्रगाढ़ हो जाता है, जब चेतना थक कर सो जाती है तो उस अन्धकार की प्रगाढ़ता में और चेतना की सुषुप्ति में ऊषा का अनुराग जीवन पाता है। नयी लाली से आकाश रंजित होता है, सूर्य की किरणें फूटती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् साहित्य के क्षेत्र में भी ऊषा के अनुराग के उन्नयन की लालिमा निकट आती दीख पड़ी है और उसका स्पष्ट आभास १९५४ के साहित्य से मिला है। यद्यपि परिणाम का प्रकाश इतना ज्वाजल्यमान नहीं है कि सब कुछ स्पष्ट दीख पड़े; किन्तु भिनसार का काकली स्वर अपना संदेश सुना गया है। ये सन्देशवाहक वे हैं जो हिन्दी की सतत साधना से आकर्षित हो भारती के मन्दिर में श्रद्धा की प्रभाती गाने के लिए जुटे हैं। यह अंजलि दान उन पुजारियों और महंतों द्वारा नहीं हुआ है, जो हिन्दी के मन्दिर के ठीकेदार हैं; बल्कि हिन्दी के उन प्राचीन भक्तों तथा श्रद्धा विलसित उन नवयुवकों के द्वारा हुआ है जो मंदिर और मठ की कमाई पर अपने जीवन को नहीं चला रहे हैं अर्थात् जो हिन्दी को अर्थ-साधन की देवी नहीं मानते। हिन्दी के क्षेत्र में ऐसी शक्तियों की स्पष्ट अवतारणा १९५४ में हुई है जिनकी रोजी रोटी का साधन हिन्दी नहीं, अपितु हिन्दी में रचना करना वे गौरव की बात समझते हैं। इस गौरव के कारण आस्था का जो स्वर उनमें दीख पड़ा है उसमें निश्चय ही ऊषा के अनुराग की आभा है। प्रेमचन्द, शुक्ल जी तथा प्रसाद जी के बाद सबल साहित्यिक स्वर दब-सा गया था किन्तु उसका उभार इस वर्ष स्पष्ट दीखा। कुछ बीज इस वर्ष ऐसे दीख हैं जो भविष्य में निश्चय ही पल्लवित और पुष्पित होकर फलदार छाया प्रदान करेंगे ऐसा विश्वास हो चला है। साहित्य के विभिन्न अंगों के विकास का यदि सिंहावलोकन किया जाय तो जिन वृत्तियोंको मुख्यतया प्रश्रय मिला है उनकी स्पष्ट आभा दीख पड़ेगी।

जहाँ तक कविता का संबंध है कविता के भीतर स्वस्थ रचनाओं का, जो जन मंगल पर आद्धृत है, विकास दीख पड़ेगा किन्तु छायावाद के ढंग की रचनाएँ आज भी बहुतायत से हुई हैं क्योंकि छायावाद की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा अपनी ओर अनायास कवियों को खींच लेती है, विशेष कर नवयुवकों को। नये-नये प्रयोगों की बाढ़ उस व्याकुल चेतना का प्रतीक है जो नया पथ ढूंढ़ने के लिए संकल्प व्याकुल रहती है। प्रयोगवाद तो 'तार-सप्तक'के द्वितीय खंड के बाद ही हिन्दी में समाप्त हो गया है, प्रयोगवाद के प्रति जनरुचि आकर्षित नहीं है। में जन रुचि के आकर्षण को बहुत बड़ी बात नहीं मानता किन्तु यह इस बात का साक्षी तो है ही कि कविताएँ कम दोषी इसके लिए नहीं है। प्रौढ़से लेकर नवीन कवियों तक का स्वर फूटा है, वादों-विवादों के घेरे में और स्वच्छंद विहग की भांति भी। उसमें वे रचनाएँ स्वस्थकर बन पड़ी हैं, जिनमें सच्ची अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। अधिकांश रचनाएँ चकाचौंध उत्पन्न करने वाली ही हैं, उनमें मनोरंजन की भी क्षमता नहीं। यह देखकर अवश्य दुख हुआ कि कुछ प्राचीन रस सिद्ध कवि तुकबन्दी की ओर बढ़ रहे हैं और कुछ ऐसे कवि जिनकी रचनाएँ स्वस्थ हैं किन्तु वे नामी सरनामी नहीं हैं, उनकी दाद देने वालों की कमी है।

इस अभाव को १९५४ के कवि ने भी समझा है और उसने इस वृत्ति को समाप्त करने के लिए तरह-तरहके आयोजन भी किए हैं। कविता संबंधी पत्रों तथा संग्रहों का प्रकाशन भी हुआ है तथा ऐसा आयोजत किया गया है जिनका यथा स्थान उल्लेख किया जायेगा। अनेक कविताओं में देश और काल की अभिव्यक्ति भी हुई है। कुछ लोगों ने अपनी प्राचीन थाती अवधी और ब्रज भाषा को भी सम्पन्न करने का नये सिरे से प्रयत्न किया है तथा उनमें काव्य रचना हुई है। उनके पत्र निकले हैं तथा उन रचनाओं को प्रश्रय देने के आयोजन भी किए गए हैं। कविताओं का बाजार बिल्कुल ही फीका रहा। यद्यपि हिन्दी के सभी पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ छपती रहीं हैं। हिन्दी में कविताओं के मांग की कमी प्रतिभाशील विकासोन्मुख कवियो के लिए अत्यन्त बाधक प्रमाणित हुआ है। एक प्रवृत्ति जो विशेष रूप से इधर दिखी है वह है प्रबन्धों की ओर कवियों का ध्यान जाना। कुछ अच्छे प्रबन्ध भी आये हैं। व्यंग-काव्य की स्वस्थ प्रवृत्ति भी प्राचीन ताना-बाना छोड़कर पल्लीवाद के घेरे से बाहर निकल कर स्वस्थ भावभूमि पर आयी है, यह शुभ लक्षण है।

रंगमंच का अभाव हिन्दी के नाटकों के विकास में सबसे बाधक प्रमाणित हुआ है। पूर्ण नाटक हिन्दी में हर वर्ष इतने भी नहीं प्रकाशित होते कि उन्हें उंगुलियों पर गिना जा सके। नाटक के क्षेत्र में पुराण और इतिहास की ओर व्यापक रूप से ध्यान दिया गया है यद्यपि उसका विकास उल्लेख्य नहीं हुआ है। एकांकी नाटकों का प्रणयन विकास के पथ पर है। इस क्षेत्र में भी किसी महान् प्रतिभा का दर्शन नहीं हुआ यद्यपि रचना होती रही। इस वर्ष गीति-नाट्य भी लिखे गये। हिन्दी में गीति-नाट्यों का अभाव बहुत बड़ी खलने वाली वस्तु है किन्तु उसका भी विकास मंच, स्वर और अभिनय कला के विकास के साथ ही सम्पन्न माना जा सकेगा, उसकी कमी बनी हुई है यद्यपि उसके विकास का चतुर्दिक प्रयत्न संस्थाओं तथा सरकार द्वारा समय-समय पर किया गया। कथा-साहित्य में उपन्यास का बाजार सर्वाधिक गरम रहा। उपन्यासों के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये गए। सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक तथा वर्तमान के चित्र उपस्थित करनेवाले अनेक प्राणवान उपन्यास सामने आये। नये लेखकों ने इस क्षत्र में सफलता की प्रतिष्ठा स्थापित की। प्राचीन लोगों पर समय का असर दीख पड़ा। हास्य का उपन्यास एक भी न दीख पड़ा यद्यपि उपन्यासों में व्यंग तत्व की महत्ता का बोल बांका रहा। कहानी के क्षेत्र में कुछ नये रचनाकार दीख पड़े, कुछ पुराने। हास्य रस की कहानियों के संग्रह भी प्रकाशित हुए। पत्रों ने कहानी विशेषांक भी निकाले। समाचारपत्रों में कहानियां भी प्रकाशित होती रहीं। नयी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गयीं। विज्ञान के लिए पुरस्कार की घोषणा भी की गयी किन्तु इन कहानियों का अध्येता सहज ही बता सकता है कि इनमें ऐसी वृत्तियों का पल्लवन और विकास नहीं दीखा जो बहुत बड़ी घटना के रूप में ग्रहण किया जा सके, या ऐतिहासिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। कुछ नये कहानीकारों के प्रति आशा अवश्य जगी। अनुवाद का कार्य भी तेजी से होता रहा। अधिकांश अनुवाद बँगला से हुए। अनेक उपन्यासों के तो कई अनुवाद प्रकाशित हुए, जिनमें कुछ ने ऐतिहासिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। अन्य भाषाओं से भी अनुवाद कार्य होता रहा। इन अनुवाद कार्यों में विशिष्टता केवल कुछ ही रचनाओं में दीख पड़ी तथा सामान्यतः प्रकाशकों ने बाजार का ही ध्यान अधिक रखा है। गंदे तथा कुरुचिपूर्ण वासना वाले उपन्यासों की बाढ़ भी गत वर्षों की सीमा से आगे बढ़ी हुई दीखी। पत्र-पत्रिकाएँ भी उससे मुक्त न थीं। बड़े-बड़े लेखक भी उससे विलग न थे। यद्यपि क्रम यही चलता रहा कि एक-दूसरे को वे ऐसा लिखने वाला बताते रहे। अनुवादों में कुछ ऊँचे दर्जों की चीजें आयीं। यद्यपि

बंगला के अतिरिक्त जिन भाषाओं से अनुवाद-कार्य हुआ उनकी मात्रा बहुत कम रही, तो भी उपन्यासों का चयन अच्छा किया गया। अनुवाद भी अच्छे हुए। विदेशों में आजकल जिस ढंग से विविध शास्त्र उपयोगी कथा साहित्य का प्रणयन हो रहा है यथा विज्ञान उपन्यास भविष्य संचेतन उपन्यास, हिन्दी में नहीं दीख पड़े। हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की कमी भी खटकने वाली वस्तु थी और उस पर एकाध लेखकों का ही एकाधिकार था। वह एकाधिकार इस वर्ष निश्चय ही टूटा है यद्यपि ऐतिहासिक उपन्यासों में एकाध गन्दे कामुकता पूर्ण चित्रों से भरे पड़े हैं।

कथा साहित्य की बहुत बड़ी विशेषता रही है कि वह यथार्थ जीवन की ओर व्यापक दृष्टि से बढ़ा है। इसमें विकृत की बात सेक्स का बहुत ज्यादा उभाड़ ही माना जा सकता है। ऐसा आभास लगता है कि अधिकांश लेखकों ने यह समझ रखा है कि रूप के नंगे चित्रों का सामाजिक मर्यादा का उलंघन कर चित्रण करना ही सेक्स है। स्वस्थ सेक्स की अवतारणा बुरी बात नहीं मानी जा सकती। यह स्वस्थ वृत्ति तभी पल्लिवित हो सकती है, जब वास्तव में लेखक भारत के सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित सेक्स की मान्यताओं का अतिक्रमण न करे। इस विकृति का मूल कारण अंग्रेजी कथा-साहित्य की वृत्तियों का अन्धानुकरण जान पड़ता है, बिना सामाजिक वृत्ति का ध्यान रखे हुए। जासूसी उपन्यासों की सीमा दिनोत्तर संकुचित होती जा रही है; फिर भी कुछ एक उपन्यास इस क्षेत्र में आये या अनूदित हुए। उपन्यासों में अनेक शैलियां दीखी, वे अनेक प्रकार की हैं। अधिक में मौलिकता शैली की दृष्टि से न दीख पड़ी अनुकरण निश्चय ही दीखा। इस अनुकरण में मौलिकता का घोल अधिक स्वास्थ्यकर होगा।

निबन्ध की अनेक पुस्तकें इस वर्ष साहित्य के क्षेत्र में अवतरित हुई, जिनमें शैक्षिक निबन्धों की मात्रा अधिक रहीं, उनकी सीमा परीक्षा तक ही सीमित है। कुछ गंभीर अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति के निबन्ध भी दीख पड़े। ये निबन्ध ऐतिहासिक अनुसंधानों से लेकर सम-सामयिक विषयों तक हैं। विभिन्न बोलियों के संबंध में तथा साहित्य के संबंध में लिखे गये लेख हिन्दी की संपत्ति है। अनेक निबन्ध तो इतने उत्कृष्ट हैं जिन्हें गौरव के साथ हिन्दी के उत्कृष्ट निबन्धों में रखा जा सकता है तथा उनका स्थायी साहित्यिक महत्व है, शैली और विचार विवेचन दोनों दृष्टियों से। वाद-विवाद वाले तथा विद्वानों की विद्वता की चुनौती देने वाले लेखों की भी कमी नहीं रही। वे इस स्तर तक लिखे गये कि अमुक विद्वान की मान्यताएँ मूर्खता हैं, अध्ययन के अभाव का द्योतक हैं आदि आदि। विचारों के भेद-विभेद के कारण विद्वान लेखकों में पनपती हुई यह वृत्ति कौन-सा नवीन आदर्श प्रतिष्ठित करने के लिए उतावली हो रही है यह कोई भी अध्येता दुख के साथ ही ग्रहण कर सकेगा। आदर्श के नाम पर सत्ता रूढ़ रहने की माया में अनेक लेखकों ने इतना अधिक खोखलापन भर लिया है कि उनकी साहित्य कीर्ति को प्रतिष्ठित रखने वाला साहित्य सूखे फल-सा १९५४ में दीख पड़ा। आलोचना तथा साहित्य से संबंधित निबन्धों के अतिरिक्त विविध विषयों पर भी निबन्ध दीख पड़े। समाज से संबंधित तथा विविध शास्त्रों से संबंधित निबन्ध परिचयात्मक ही रहे, उनमें तथ्य की दृष्टि से विशेष कोई ऐसी बात नहीं कही गयी जो इतिहास के निर्माण में योग-दान कर सके। यह निश्चय है कि विविध विषयों की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकली यथा दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष, समाज-सेवा, कृषि-उद्योग, अर्थशास्त्र जिनमें से कुछ की सेवाएँ अत्यन्त गौरवशालिनी हैं। उनमें आये निबन्ध विषय का परिचय करा देते हैं किन्तु विदेशों में निकलने वाली उन विषय की पत्रिकाओं से किसी दृष्टि से भी उनका मुकाबला नहीं किया जा सकता। जहाँ तक साहित्य के सर्जनात्मक निबन्धों का प्रश्न है, संस्मरण और रेखाचित्र गत वर्ष से अधिक लिखे गये।

इन संस्मरणों में संस्मरण की मनमोहिनी छटा उन लोगों के व्यक्तित्व के उभाड़ में सहायक न हो सकी जिनके संबंध में ये लिख गये। कुछ निश्चय ही उच्च कोटि के संस्मरण आये। संस्मरणों में कहीं-कहीं तो संस्मरण लेखक का व्यक्तित्व इतन व्यापक रूप में अभिव्यक्त हुआ कि जिसके संबंध में संस्मरण लिखा जा रहा है वह दब गया। ऐसी प्रवृत्ति अधिक अच्छी नहीं कही जा सकती। फिर भी कुछ अच्छी चीजें आयीं। इसमें संदेह भी नहीं। कुछ भाषण साहित्य संबंधी अत्यन्त उच्च कोटि के हुए जो वास्तव में अत्यन्त मूल्यवान निबन्ध हैं।

आलोचना के क्षेत्र में स्वस्थ और अस्वस्थ दोनों प्रकार की कृतियाँ दीख पड़ीं। ये कृतियाँ अन्वेषण, अनुसंधान, संपादन, तथा अनुकरण पर आधृत तो हैं ही, साथ ही इनमें से कुछ ने हिन्दी की आलोचना साहित्य के बहुत बड़ी संपत्ति प्रदान की है। ये आलोचना ग्रन्थ, जो मूल्यवान हैं, स्वस्थ सामग्री देते हैं। यद्यपि यनिवर्सिटियों की उपाधि के लिए लिखे गये अधिक

प्रबन्ध जैसे तैसे ही हैं। परीक्षाओं के कारण आलोचना की मांग बढ़ी है, और उसकी पूर्ति हिन्दी साहित्य कर रहा है। इसमें सन्देह के लिए स्थान नहीं रहा, यद्यपि बहुत बड़ी सफलता उसे नहीं मान सकते। प्रगति के पथ पर हिन्दी का आलोचना-साहित्य है इसमें संदेह नहीं किया जा सकता।

राष्ट्र-भाषा हिन्दी हो जाने से इस बात की आवश्यकता का अनुभव प्रायः सभी हिन्दी के सेवक कर रहे हैं कि विभिन्न भारतीय भाषाओं का प्रौढ़ साहित्य हिन्दी में आ जाय। विशेष कर दक्षिण की भाषाओं का। इसके लिए विविध पत्र-पत्रिकाओं ने अपने यहां तो आयोजन किया ही, उनके साहित्य का लघु इतिहास प्रकाशित भी हुआ। इसी को लेकर एकाध पत्रिका भी निकल रही है तथा दक्षिण की भाषाओं विशेषकर गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, आदि से अनुवाद---कार्य भी हुए।

यात्रा संबंधी कुछ सुन्दर पुस्तकें इस वर्ष लिखी गयीं, जिनका बहुत बड़ा अभाव हिन्दी में था। सरकारों के प्रोत्साहन तथा समय की मांग के कारण उपयोगी साहित्य की ओर भी विशेष रूप से इस वर्ष ध्यान दिया गया। प्रौढ़ों के लिए तथा बालकों के लिए अच्छे साहित्य की सृष्टि इस वर्ष हुई है। इतिहास संबंधी ग्रन्थ 'जिनमें अनेक मौलिक भी हैं' हिन्दी में लिखे गये हैं। साहित्य के अन्य अंगों तथा वांगमय के प्रायः सभी अंगों पर साहित्य का प्रणयन गत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष अत्यन्त अधिक रहा।

हिन्दी का प्रकाशक भी इस वर्ष जितना जागरूक रहा संभवतः अपने जीवन के इतिहास में वह कभी भी न था। संगठित होकर उसने अपने स्वार्थ के लिए व्यापक आन्दोलन किया। इस संगठन का प्रभाव यद्यपि सीमित क्षेत्र तक ही रहा; किन्तु जागर्ति उसमें बनी रही। कलात्मक मुद्रण तथा सस्ते प्रकाशन की ओर उन्होंने ध्यान दिया और एकाध प्रकाशकों ने तो विदेशी प्रकाशकों को भी पुस्तकों का कम मूल्य रखने में चुनौती दे दी। कुछ तो ऐसा राजनीतिक स्वार्थ के कारण हुआ और कुछ विशुद्ध सेवा---भावना की दृष्टि से।

लेखक भी इस वर्ष अत्यन्त जागरूक रहा। उसके प्रति जो विधातक कार्यवाही करने के लिए उद्यत हुए, उनसे वह जमकर लोहा लेता रहा, यह हिन्दी के विकास के लिए शुभ लक्षण है। सिनेमा विदेशों में हिन्दी के प्रचार में, अत्यन्त सहायक रहे। यद्यपि उनका सांस्कृतिक धरातल बहुत ऊँचा उठा हुआ नही माना जा सकता, तो भी उनकी देन इस अर्थ में विकासोन्मुखी है कि इस वर्ष भाषा और गीतों में काफी संस्कार और परिष्कार दीख पड़ा।

विभिन्न सरकारों तथा संस्थाओं द्वारा पुरस्कारों का आयोजन इस दृष्टि से सफल हो रहा है कि उनके द्वारा हिन्दी साहित्य में रचना करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

इन सब वृत्तियों को देखते हुए, अनेक कमजोरियों के होते हुए, इस वर्ष का हिन्दी साहित्य गत वर्षों की अपेक्षा काफी समृद्ध और उन्नत हुआ। साथ ही यह भी निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इस वर्ष की अनेक रचनाएँ तो ऐसी हुई हैं जिनका अनुवाद किसी भी भारतीय या विदेशी साहित्य में अनूदित होकर सम्मान ही प्राप्त करेगा। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि सन् १९५४ में साहित्य में जिस बीज का पल्लवन किया गया है, निश्चय ही वह उज्ज्वल भविष्य का द्योतक तथा सूचक है।

---:o:---

हिन्दी जगत और उसकी समस्याएँ

[हिन्दी साहित्य सम्मेलन की दृष्टि में]

हिन्दी के सर्वतोमुखी उत्थान और विकास के लिये यह पिछला वर्ष अनेक दृष्टियों से सफल रहा है। केन्द्रीय तथा राज्य-शासनों में यद्यपि हिन्दी को अग्रसर करने के सम्बन्ध में कोई ठोस योजना नहीं कार्यान्वित की गई, किन्तु जो कुछ कार्य वहाँ से हुए, उनका ही अभिवादन करके हम सन्तोष कर लेंगे।

केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा हिन्दी प्रचार

केन्द्रीय शासनने कुछ दिनोंसे हिन्दी कार्योंके लिये एक अलगसे विभाग खोल दिया है, जहाँ से हिन्दीकी पुस्तकोंपर पुरस्कार एवं कुछ निर्माण का भी कार्य हो रहा है। इसी वर्ष से विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी की प्रगति का कार्य वहाँ की राज्य सरकारों के अधीन कर दिया गया है। यह व्यवस्था उचित ही है; क्योंकि प्रदेशीय समस्याओं का जितना गहरा ज्ञान राज्य शासनों को होगा उतना केन्द्रीय शासनों को नहीं हो सकता। इस नूतन व्यवस्था में यह भी प्रेरणा दी गयी है कि राज्य सरकारें हिन्दी-प्रचार के इस कार्य में अपनी सीमा में हिन्दी का कार्य करनेवाली संस्थाओं तथा संघटनों से सहायता लें और उनकी आर्थिक सहायता करें। दक्षिण भारत में यह कार्य 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास' को सौंपा गया है, जो सर्वथा उचित है। क्योंकि सभा ने अतीत में दक्षिण भारत में हिन्दी का जो कार्य किया तथा आज भी कर रही है, वह प्रशंसनीय है। किन्तु हमें खेद है कि समस्त अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी का एकमात्र कार्य करनेवाली संस्था 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की भी इस कार्य में सहायता नहीं ली गई। इतना ही नहीं कई राज्यों में, जहाँ बहुत पहले से ही राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की शाखाएँ हिन्दी का ठोस कार्य कर रही थीं, वहाँ के लिए भी उनकी सहायता न लेकर इस कार्य में कुछ नूतन संघटनों को मान्यता अथवा अथवा प्रेरणा दी गयी। इस सम्बन्ध में हमारा निवेदन केवल यही है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति एवं समृद्धि के कार्यों में हमारी सरकार को इस प्रकार के पक्षपात-मूलक कार्यों से दूर रहना ही हिन्दी के लिए श्रेयस्कर है। हिन्दी जगत में ही नहीं अहिन्दी भाषी प्रान्तों में भी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और उसकी शाखा समितियों के कार्यों का परिणाम प्रकट है। उसने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में पिछले अठारह वर्षों में हिन्दी का जो ठोस प्रचार कार्य किया है, उसकी संक्षिप्त चर्चा इस अवसर पर कर देना अनुचित न होगा।

पिछले कुछ वर्षों में इस समिति की परीक्षाओं में कितने परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए और इसके कुल कितने प्रचारक विभिन्न अंचलों में हैं, कदाचित् उनकी वृहत् संख्या ही राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के महत्व का निर्देश करती है। अब तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की विभिन्न परीक्षाओं में बारह लाख, अठारह हजार पाँच सौ सोलह परीक्षार्थी बैठ चुके हैं जिनमें से दो हजार तीन सौ इक्यासी राष्ट्रभाषा रत्न की उपाधि भी प्राप्त कर चुके हैं। इसके चार हजार सोलह प्रशिक्षित प्रचारक हैं जो अपने-अपने क्षेत्रों में हिन्दी की प्रत्येक गतिविधि का संचालन करते हैं। खेद है कि केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के द्वारा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अथवा उसकी शाखा समितियों को उचित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। यदि उन राज्यों में, जहाँ उक्त समिति की शाखाएँ बहुत पहले से ही यह कार्य कर रही हैं, हिन्दी प्रचार का यह कार्य उनके सहयोग एवं परामर्श पर किया जाता तो इससे किसी प्रकार का असन्तोष न होता और हिन्दी का अधिक हित होता। फिर भी, हमें प्रसन्नता है कि सरकार हिन्दी की ओर ध्यान दे रही है। हिन्दी का कार्य होना चाहिये—वह चाहे जिसके द्वारा हो और चाहे जहाँ से हो।

केन्द्रीय शिक्षा-विभाग और परिभाषिक शब्दकोश

पारिभाषिक शब्दकोषों के निर्माण का कार्य हिन्दी की उन्नति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। केन्द्रीय शासन ने आरम्भ में इस ओर कुछ ध्यान दिया था, किन्तु इधर की प्रगति से हम परिचित नहीं हैं। कुछ वर्ष हुए, हिन्दी-भाषी प्रान्तों में विश्व-विद्यालयों तथा हिन्दी प्रान्तों की राज्य सरकारों ने इस कार्य के महत्व को समझा था, और कुछ प्रयत्न आरम्भ भी किया था। इतना ही नहीं, कुछ विश्वविद्यालयों तथा सरकारों की ओर से इस कार्य के लिए अधिकारी विद्वानों के हाथों में कार्य सौंपा भी

जा चुका था, किन्तु उसी समय केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने उन्हें इस कार्य से विरत होने का परामर्श इसलिये दिया कि वह स्वयं इस कार्य को हाथ में लेने का संकल्प करने वाली थी। यह एक अच्छी बात थी। उस समय सबको प्रसन्नता और आशा हुई थी कि सर्व-साधन सम्पन्न केन्द्रीय शासन के तत्वावधान में होने से यह कार्य न केवल शीघ्र ही होगा, वरन् सभी प्रान्तों में उसकी एक समान मान्यता भी होगी। किन्तु हमें खेद है कि केन्द्रीय शिक्षा विभाग की ओर से ३, ४ वर्ष बीत जाने पर भी इस प्रकार का ठोस कार्य अभी तक देखने को नहीं मिला, जिसके द्वारा यह विश्वास हो कि विश्वविद्यालयों तथा प्रान्तीय सरकारों को इस कार्य से विरत होने का केन्द्रीय सरकार का परामर्श लाभकर हुआ हो। हमारी तो धारणा यह है कि यदि उन्हें रोका न गया होता, तो विभिन्न विषयों में अब तक कितने ही पारिभाषिक शब्दकोषों का निर्माण हो चुका होता और इस प्रकार हिन्दी की प्रगति में एक लम्बा मार्ग तय हो गया होता।

इस प्रसंग में हम केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित "प्राविजनल लिस्ट आव टेकनिकल टर्म्स इन हिन्दी फार सेकेंडरी स्कूल्स" के क्रम में प्रकाशित बाटनी (वनस्पति विज्ञान), केमिस्ट्री (रसायन), फिजिक्स (भौतिक विज्ञान), मैथेमेटिक्स (गणित) तथा सोशल साइन्स (समाज विज्ञान) इन पाँच विषयों की उन संक्षिप्त पुस्तिकाओं की ओर हिन्दी-जगत् का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। उक्त पुस्तिकाओं में अंग्रेजी के ततद् विषयों के पारिभाषिक शब्द हिन्दी में दिये गए हैं। जहाँ तक इन पुस्तिकाओं में दिये गये शब्दों की बात है, वे उपयुक्त तथा सूझ-बूझ से रखे गए हैं। किन्तु इस वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली के बोर्ड द्वारा जो सिद्धान्त स्थिर किये गये हैं और जो इन्हीं पुस्तिकाओं पर विज्ञापित हैं, वे हिन्दी हित की दृष्टि से उपयोगी हैं---इसमें गहरा संदेह है।

बोर्डका मत है कि जहाँ तक हो सके हिन्दी अथवा भारत की दूसरी प्रमुख भाषाओं की पुस्तकों में अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाय। वनस्पति-शास्त्र, प्राणि-शास्त्र और भूगर्भ-शास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीय शब्द ज्यों के त्यों ले लिए जायं। इस प्रकार गणित और अन्य विज्ञानों में प्रयोग किये जानेवाले प्रतीक, चिह्न और सूत्र बिना किसी परिवर्तन के ग्रहण कर लिये जायं। तात्पर्य यह कि रोमन लिपि में लिखे हुए अक्षर और अंक ही हिन्दी पुस्तकों में भी प्रयुक्त किये जायं। इतना ही नहीं उसका यह भी मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दों को केवल नागरी लिपि में लिखा जाय और उसका मूलरूप रोमन लिपि में कोष्टक में दिया जाय।

बोर्ड के ये सिद्धान्त इतने स्पष्ट हैं कि इन पर पृथक् व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। निवेदन यही है कि इस प्रकार के सिद्धान्तों के रहते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी का उत्थान नहीं हो सकता। जिस अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली की आड़ में हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का कार्य रोका जा रहा है वह अन्तर्राष्ट्रीय है क्या चीज, और उसका प्रवर्तन होता होता है कहाँ से? आरम्भ में यह भ्रम था कि वस्तुतः ऐसा कोई संघटन होगा और अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दावली ही दूसरे देशों में भी प्रयुक्त होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली की संज्ञा से प्रसिद्ध होती होगी। किन्तु बाद में कुछ पता लगाने पर भी उस अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली अथवा उसके प्रवर्तन का कार्य करनेवाली संस्था का कुछ पता नहीं लगा और यह निश्चय हो गया कि इस भारी भरकम नाम से हिन्दी की प्रगति रोकने का ही कार्य लिया जा रहा है। हमारे इस कथन को निम्नलिखित तथ्यों से बल मिला है।

नई दिल्ली में संसदीय हिन्दी परिषद ने विभिन्न देशों के दूतावासों से सम्पर्क स्थापित करके यह पता लगाया कि वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली नाम की कोई और चीज है या नहीं है, किन्तु पता लगा कि ऐसा कुछ नहीं है। एशिया के अनेक देशों में अपने यहाँ की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है और वहाँ इसके कारण विज्ञान की प्रगति ढीली नहीं है। ईरान, स्याम, जापान, चीन आदि देशों में वहाँ की भाषा में ही विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती है और वहाँ के प्रायः सभी पारिभाषिक शब्द वहाँ की अपनी भाषा में ही हैं। अब ऐसी परिस्थिति में हमारे देश के लिए यह एक लज्जा की बात होगी कि उसकी पारिभाषिक शब्दावली का माध्यम वह भाषा रहे जिसकी शिक्षा के क्षेत्र में अब उसे कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिये।

निश्चय ही तब तक हिन्दी की यथेष्ट उन्नति नहीं समझनी चाहिए, जब तक हिन्दी में ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं का अध्ययन कार्य नहीं होने लगता।

यह सत्य है कि हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का कार्य बहुत कठिन है और आरम्भ में धीरे-धीरे ही यह होगा किन्तु पूरा तो यह तभी होगा, जब उक्त भ्रान्त सिद्धान्तों के प्रति विद्वानों की जागृति हो। हमारे देश में उच्चकोटि के

वैज्ञानिक हैं, किन्तु दुर्भाग्यवश उनमें ऐसे लोगों का अभाव है कि जो हिन्दी के द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रकाश जनता तक पहुँचाने के इच्छुक हों। दूसरे राष्ट्रों में भी अपनी ख्याति के पहुँचाने के लिये वे अंग्रेजी को ही महत्व देते हैं। इसका परिणम यह हो रहा है कि जहाँ दूसरे देश के लोग हमारे उन सम्माननीय विद्वानों का समादर करते हैं, वहीं हमारे देश के करोड़ों लोग उनकी प्रतिभा के प्रसाद से वंचित रहते हैं। देश के भविष्य के लिए उनकी यह हिन्दी-उपेक्षा हानिकर सिद्ध हो रही है। किन्तु आशा है, नई पीढ़ी के वैज्ञानिक हिन्दी की शक्ति का उचित मूल्यांकन करेंगे और अपनी प्रतिभा से हिन्दी को गौरवान्वित करेंगे।

विज्ञान-विषयक पाठ्य ग्रन्थ

हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों की पाठ्य पुस्तकों का अभाव सर्वत्र चर्चा का विषय बना है। वस्तुतः जब तक विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पढ़ाने योग्य सभी विषयों की पाठ्य पुस्तकें सुलभ नहीं हो जातीं,तब तक शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी की उन्नति कठिन है। सम्मेलन स्वयं इस दिशा में यत्नशील है और कुछ प्रान्तीय सम्मेलन तथा अन्य हिन्दी संघटनों का भी इस हिन्दी के साधन-सम्पन्न प्रकाशक भी इधर सचेष्ट हैं; किन्तु अधिकारी विद्वानों एवं लेखकों की बात यहाँ भी प्रमुख रुप से विचारणीय है। हिन्दी सम्मेलन ने देश के अधिकारी विद्वानों से ऐसी अंग्रेजी की पुस्तकों की सूची तैयार करके भेजने की प्रार्थना की है, जिनका अनुवाद अविलम्ब हो जाना चाहिए। इसी प्रकार ऐसे विद्वानों की भी सूची मांगी गयी है जो अपने विषय की मौलिक रचनाएँ हिन्दी में दे सकते हैं। और कुछ नयी पाठ्य पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित भी हुई हैं, किन्तु इतने से कोई काम भी चल नहीं सकता। आशा है, हिन्दी के हितैषी इस अभाव की पूर्ति में सर्वात्मना लग जायँगे।

सम्मेलन का अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश

पारिभाषिक शब्दकोशों की समस्या के समान ही अनुवाद कार्यों के लिए हिन्दी जगत् को अच्छे हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश की भी आवश्यकता बहुत दिनों से थी। सम्मेलन ने गत वर्षों में ही इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया था और हमें प्रसन्नता है कि अंग्रेजी-हिन्दी कोश का निर्माण-कार्य अब प्रायः समाप्ति पर है। जैसा कि पिछले वर्ष के विवरण में बताया जा चुका है हमारा यह कोश न केवल अब तक के प्रकाशित अंग्रेजी-हिन्दी कोशों से श्रेष्ठ और उपयोगी है, वरन् इसकी प्रमाणिकता भी असंदिग्ध है। हमने यत्न किया है कि इस कोश में इतर प्रान्तीय भाषाओं के उन शब्दों को भी इसमें स्थान मिले जो हिन्दी की रीति-नीति के सर्वथा अनुकूल हों। इस शब्दकोश में चैम्बर्स और ऑक्सफोर्ड की कन्साइज डिक्शनरियों के सभी शब्दों को रखा गया है और अनुवाद कार्य में इस बात की सतर्कता रखी गयी है कि कोई भी आवश्यक शब्द छूटने न पाये तथा व्यर्थ के शब्दों को स्थान न दिया जाय। उच्चारणक्रम तथा व्याकरणादि के निर्देश भी इसमें दिये गये हैं तथा इसके मुद्रण एवं प्रकाशनमें में कलात्मकता एवं सुन्दरता का भी ध्यान रखा गया है। यह कोश सुपर-रायल साइज में १२०० पृष्ठों का होगा। इसके मुद्रण का कार्य आरम्भ हो चुका है, अब तक इसके ४ फार्म छप चुके हैं, अगले वर्ष के मध्य तक हमारा यह कोश प्रकाशित हो जायगा।

संसदीय हिन्दी परिषद् के गत वार्षिक अधिवेशन में इस कोश के छपे हुए ३ फार्म की एक पुस्तिका प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू को दी गयी। उन्होंने इसे ध्यान से देर तक देखा और अपने भाषण में सम्मेलन के इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए बताया कि—"हिन्दी में ऐसे कोशों की बड़ी कमी थी। अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में हमें जब अंग्रेजी-हिन्दी कोशों की आवश्यकता पड़ती थी, तो बाजार में उपलब्ध कोशों को देखकर बड़ी निराशा होती थी। विश्वास है, सम्मेलन का यह कोश कमी को पूरा करेगा। उसके इस सत्प्रयत्न की हम प्रशंसा करते हैं।"

हिन्दी-कोश

हिन्दी में हिन्दी-कोशों की कमी नहीं है, इधर कुछ अच्छे कोश प्रकाशित हुए हैं;किन्तु विदेशों की साहित्यिक भाषा के कोशों को देखते हुए अभी तक एक ऐसे हिन्दी कोश की आवश्यकता बनी हुई है, जिसमें देशज शब्दों का संकलन भी हो। साथ ही देश की प्रत्यक प्रान्तीय भाषा के उन शब्दों को भी उसमें सन्निविष्ट किया जाय जो वहाँ के हिन्दी लेखकों द्वारा प्रयुक्त होते हैं अथवा जो हिन्दी की रीति-नीति के अनुकूल होने के कारण हिन्दी में प्रयुक्त हो सकते हैं। ऐसे शब्दों

की संख्या भी कम नहीं है जो अभी तक कोशों में स्थान तो नहीं प्राप्त कर सके हैं;किन्तु लोकगीतों तथा लोककथाओं आदि में प्रयुक्त होते हैं । सम्मेलन की दृष्टि से ऐसे शब्दों के संकलन की ओर भी है । लोकगीतों अथवा लोककथाओं की प्रकाशित पुस्तकों से हजारों ऐसे शब्द संकलित किये गये हैं जो आज के प्रकाशित शब्दकोशों में नहीं हैं । इसी प्रकार कतिपय आधुनिक कवियों, उपन्यासकारों, नाटककारों तथा जीवनी-लेखकों की कृतियों से भी नये हजारों शब्दों का संकलन किया गया है । प्रान्तीय भाषाओं के उपर्युक्त प्रारम्भ के शब्दों के संकलन के लिए तत्तद् प्रान्तों के प्रान्तीय सम्मेलनों, राष्ट्रभाषा प्रचार समितियों तथा हिन्दी का कार्य करनेवाली संस्थाओं के अधिकारियों से अधिकारी सज्जनों की सूची मांगी गयी है तथा इन-इन प्रान्तों के हिन्दी-हितैषी महानुभावों से सहयोग देने की प्रार्थना की गयी है । आशा है, यदि हिन्दी-कोश में ऐसे शब्दों का संकलन हो जायगा, तो हिन्दी से प्रान्तीय भाषाओं की दूरी बहुत कुछ अपने आप ही कम हो जायगी ।

नागरी प्रचारिणी सभा का प्रयास

इस दिशा में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा भी प्रयत्न आरम्भ हो रहा है । सभा अपने 'हिन्दी शब्द सागर' का नूतन संस्करण प्रकाशित करने जा रही है और उसे इस कार्य के लिए केन्द्रीय सरकार ने आर्थिक सहायता भी दी है । सभा हिन्दी साहित्य के विस्तृत इतिहास एवं प्रमाणिक विश्वकोश (इनसाइक्लोपीडिया) के कार्यों पर भी अग्रसर होनेवाली है । इन तीनों महत्वपूर्ण ग्रन्थों की हिन्दी साहित्य में अविलम्ब आवश्यकता थी । विश्वास है, अगले कुछ वर्षों में इनका सुन्दर प्रकाशन हो जायगा तथा इनसे हिन्दी साहित्य की गौरव-वृद्धि होगी । केन्द्रीय शासन ने सभा को इस कार्य के लिए अपेक्षित आर्थिक सहायता का जो आश्वासन दिया है, उससे हिन्दी जगत् को विशेष प्रसन्नता है कि केन्द्रीय शासन ने योग्य हाथों में इस कार्य को सौंपने का सद्विचार कर अपने कर्तव्य का पालन किया ।

हिन्दी टेलीप्रिंटर

इधर केन्द्रीय शासन द्वारा हिन्दी में कुछ नवीन योजनाओं का भी सूत्रपात हुआ है, जिनसे हिन्दी-जगत् में प्रसन्नता है । हिन्दी में दूरमुद्रक यन्त्रों (टेलिप्रिंटरों) की व्यवस्था न होने से हिन्दी पत्रों का स्तर उतना ऊँचा नहीं रखा जा सकता था, जितना अंग्रेजी पत्रों का है । अब तक हिन्दी समाचारपत्रों को अंग्रेजी दूरमुद्रक यन्त्र इसलिये रखने पड़ते थे कि हिन्दी में इसकी कोई तार लाइन नहीं थी । परिणाम यह होता था कि संवाद न केवल विलम्ब से प्रकाशित होते थे वरन् उसमें अनुवादादि के अनेक विघ्नों के कारण कठिनाई भी होती थी । प्रत्येक हिन्दी समाचारपत्र को अनेक सहायक संपादक इसलिये रखने पड़ते थे कि वे अंग्रेजी संवादों का अनुवाद करें । अब हिन्दी दूरमुद्रक यन्त्रों के लिये भी सरकार ने हिन्दी तार लाइनों को देने की व्यवस्था स्वीकार कर ली है । दिल्ली से पटना, कलकत्ता, लखनऊ आदि प्रमुख हिन्दी भाषी नगरों में ही आरम्भ में यह व्यवस्था चालू की गयी है; किन्तु विश्वास है धीरे-धीरे इस तार लाइन का अधिक विस्तार होगा तथा हिन्दी समाचारपत्रों का स्तर भी ऊँचा उठेगा ।

देवनागरी में तार

हिन्दी-तार-व्यवस्था अब तक कुछ प्रमुख नगरों तक ही सीमित थी किन्तु अब उसकी संख्या भी बहुत बढ़ गयी है और विश्वास है कि अगले कुछ ही वर्षों में प्रत्येक तार-घर से हिन्दी तार की व्यवस्था कर दी जायगी । हिन्दी-तार-व्यवस्था का अब व्यवसायी वर्ग एवं साधारण जनता में भी आदर बढ़ रहा है । आरम्भ में कुछ दिनों तक तो लोगों को इस बात का पता नहीं था कि हिन्दी-तार-व्यवस्था के क्या लाभ हैं ? सम्मेलन ने इस दिशा में पर्याप्त प्रचार किया । समाचारपत्रों में अनेक बार विज्ञप्तियाँ प्रकाशित करवाईं, साइन बोर्ड बनवाये तथा जनता का ध्यान आकृष्ट किया ।

सम्मेलन के डाक-घर से भी हिन्दी तार देने की व्यवस्था अभी पिछले महीने से चालू की गयी है । यद्यपि अभी यह व्यवस्था टेलीफोन के द्वारा ही संचालित हो रही है किन्तु आशा है, शीघ्र ही तार लाइन भी लगा दी जायगी ।

सैनिक विभागों में हिन्दी के प्रवेश का सुसंवाद कुछ दिनों पूर्व सुनाई पड़ा था । समाचारपत्रों से ज्ञात हुआ कि प्रतिरक्षा विभाग सैनिकों के मध्य हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार कार्यों पर ध्यान दे रहा है । इसी प्रकार विदेश-स्थित दूतावास में भी हिन्दी की प्रतिष्ठा के कुछ कार्य हुए हैं । पार्लमेन्ट के हिन्दी नामकरण 'लोकसभा' से यह संकेत प्राप्त होता है कि धीरे-धीरे हिन्दी की

ओर हमारे राष्ट्रनायकों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है किन्तु यह सब उस गति से नहीं हो रहा है, जिस गति से कार्य करने की आवश्यकता है। यदि हम चाहते हैं कि अगले १० वर्षों में अंग्रेजी के स्थानपर सर्वत्र हिन्दी की प्रतिष्ठा करें, तो निश्चय ही आज की गति को दस गुनी अधिक तीव्रतर बनाना आवश्यक होगा।

लोकसभा की क्या चर्चा करें, वहाँ तो अहिन्दी भाषी सदस्यों की कठिनाइयाँ विचारणीय हैं; पर अभीतक हिन्दी भाषी राज्यों की विधानसभाओं तथा परिषदों में भी ऐसे सदस्यों की कमी नहीं है जो अंग्रेजी द्वारा ही अपनी प्रतिभा तथा सूझ-बूझ का परिचय देने में अपना गौरव समझते हैं। यही दशा सरकार के सचिवालयों की भी है। पुराने सचिव तथा उनके अन्तर्गत कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ता एवं उनके सब साधन चिर-अभ्यास के कारण अंग्रेजी के हिमायती हैं, वे तब तक हिन्दी को अग्रसर करना नहीं चाहते जब तक उनका मन्त्री हिन्दी-प्रेमी न हो। इस संयोग का कुपरिणाम यह हो रहा है कि शासन के कार्यालयों में अंग्रेजी अब भी अपना आसन जमाए हुए है और हिन्दी उपेक्षित है। यदि हिन्दी में भी पत्र भेजा जाता है तो उसका उत्तर अंग्रेजी में प्राप्त होता है। यही नहीं, केन्द्रीय शिक्षा विभाग तो इस बात के लिये विवश करता है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक विवरण, अनुमान पत्र (बजट) आय-व्यय निरीक्षक की रीपोर्ट—यह सब सामग्री उसे अंग्रेजी में भेजी जाय। अपने जन्म काल से ही हमारा अभ्यास हिन्दी में ही इन सब वस्तुओं को तैयार करने का रहा है, किन्तु आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए हमें हिन्दी रिपोर्टों आदि के साथ अंग्रेजी में भी सब भेजना पड़ता है। केन्द्रीय सरकार के अन्य विभागों में अंग्रेजी के प्रति इतनी निष्ठा नहीं है, किन्तु केन्द्रीय शिक्षा विभाग में ऐसा एक भी उच्च पदाधिकारी नहीं है, जो साधारण बोलचाल के सिवा अच्छी हिन्दी जानता हो।

हमें बड़ी व्यथा के साथ इस प्रश्न को यहाँ उठाना पड़ रहा है। क्योंकि यह एक ऐसा कलंक है, जिसका महत्व वर्षों बाद भी प्रकट होता रहेगा। अन्ततः वह दिन तो समीप ही है जब हिन्दी शासन में सर्वत्र प्रयुक्त होने लगेगी, किन्तु उसकी यह आरम्भिक कठिनाइयाँ तब भी नहीं भूलेंगी। यही कारण है कि इस महत्व के प्रश्न पर एकाधिक बार हिन्दी जगत् का असन्तोष प्रकट भी हुआ। कतिपय हिन्दी संघटनों एवं हिन्दी प्रेमियों ने इस बात की खुली माँग की कि केन्द्रीय शिक्षा विभाग में हिन्दी की उन्नति के लिए पृथक् मंत्रालय की स्थापना की जाय। अथवा यह न भी संभव हो तो हिन्दी के लिए पृथक् आयोग (कमीशन) नियुक्त किया जाय, किन्तु इसकी भी सुनवाई नहीं हुई। लोकसभा के पिछले सूत्र में कतिपय संसद् सदस्यों की ओर से भी यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया था किन्तु दुर्भाग्यवश अपेक्षित संख्या पूरी न होने के कारण वह गिर गया। किन्तु शीघ्रता के साथ हिन्दी की उन्नति करने के लिए यह तो एक न एक दिन करना ही होगा। आज भले ही हम प्रमाद करें किन्तु संविधान की शर्तों की रक्षा के लिए हिन्दी का कार्य द्रुतगति से और चतुर्भुज होकर अग्रसर करना पड़ेगा। शासन की वर्तमान स्थिति ऐसी नहीं है कि उस पर निर्भर रहा जाय और यह आशा की जाय कि दस वर्ष बीतते ही हिन्दी को अनायास अंग्रेजी के आसन पर आसीन कर दिया जायगा। केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन के कर्णधारों को इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर गहराई से विचार करना होगा और पंचवर्षीय योजना की भांति हिन्दी के विकास के लिए भी उसे सभी क्षेत्रों में तत्परता से कार्य आरम्भ करना होगा।

राज्य-शासनों में हिन्दी

एक दूसरी समस्या की ओर भी तत्परता से ध्यान देना चाहिये। अनेक राज्य शासनों में हिन्दी को राज्यभाषा घोषित कर दिये जाने के बाद भी अभी तक कचहरियों में हिन्दी की प्रतिष्ठा नहीं हो सकी। प्रार्थना-पत्र हिन्दी में अवश्य दिए जाते हैं किन्तु कानूनी शब्दों का जहाँ तक प्रश्न है, वे फारसी अथवा अंग्रेजी के ही रखे जाते हैं। नागरी लिपि में फारसी अथवा अंग्रेजी शब्दों को देखकर हिन्दी की प्रतिष्ठा नहीं समझनी चाहिये। हिन्दी में कानून के आवश्यक शब्दों के कई अनुवाद ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु हिन्दी में कोई ऐसी पत्रिका अभी तक नहीं प्रकाशित होगी, जिसमें विभिन्न हाईकोर्टों द्वारा अभियोगों के निर्णय दिये जाते हों। इसी प्रकार हिन्दी में कानून के सम्पूर्ण शब्दों के अभाव की भी कठिनाई है। जब तक इन दोनों अभावों की पूर्ति नहीं हो जाती कचहरियों में हिन्दी का प्रवेश दुर्गम ही बना रहेगा।

सम्मेलन इस दिशा में भी कार्य करने जा रहा है। आरम्भ में नित्य के व्यवहार में आनेवाले कानून के सम्पूर्ण शब्दों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना है और इसके बाद अन्य कार्य आरम्भ किये जायेंगे।

यह तो हुई हिन्दी जगत् की कुछ समस्याएँ, जिनपर तत्परता से कार्य करने की आवश्यकता है। किन्तु इधर जो कुछ

कार्य हुए हैं, उनको देखकर सन्तोष होता है। कतिपय राज्य सरकारों की ओर से हिन्दी के अभ्युत्थान और प्रोत्साहन के कार्य सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस वर्ष भी हिन्दी की अनेक मौलिक रचनाओं पर पुरस्कार प्रदान किये हैं। इसी प्रकार बिहार एवं विन्ध्यप्रदेश की ओर से भी अच्छे पुरस्कार दिये गये हैं। बम्बई और मैसूर राज्यों ने अपने-अपने प्रदेशों में प्रारंभिक विद्यालयों में मातृभाषा के साथ-साथ हिन्दी की शिक्षा भी अनिवार्य घोषित कर दी है। उक्त राज्य सरकारों को इस निर्णय के लिए हम बधाई देते हैं और इतर राज्य सरकारों से इस नीति के अनुसरण की प्रार्थना करते हैं।

इस वर्ष हाईस्कूल इण्टर मीडिएट बोर्ड, उत्तर प्रदेश ने सम्मेलन की परीक्षाओं को दी गयी पुरानी सुविधाओं को इसलिये हटा दिया कि अब अंग्रेजी अनिवार्य विषय नहीं रह गया है। अतः केवल अंग्रेजी में हाईस्कूल तथा इण्टर की परीक्षा लेना उचित नहीं है। किन्तु इस सुविधा के छिन जाने का प्रभाव सम्मेलन के परीक्षार्थियों पर भी पड़ा है। हिन्दी का कार्य करने वाली संस्थाओं ने इसका विरोध किया तथा सम्मेलन के पदाधिकारियों का एक शिष्ट-मंडल उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्रियों के समक्ष उपस्थित करने के लिए लखनऊ गया था। शिष्टमण्डल ने लखनऊ में उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री पन्त जी, श्रम-मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द जी, सूचना एवं सिंचाई मन्त्री श्री कमलापति त्रिपाठी तथा शिक्षा-मन्त्री श्री हरगोविन्दसिंह से भेंट की और उनसे सरकारी नौकरियों आदि में सम्मेलन की परीक्षाओं को मान्यता दिये जाने का अनुरोध किया। मन्त्रियों को ध्यान से सब बातें सुनीं और सहानुभूति पूर्वक विचार किये जाने का आश्वासन दिया। किन्तु कुछ कठिनाइयाँ भी उन्होंने बतायीं, जिनको दूर करना हमारा परम कर्तव्य है। प्रथम कठिनाई तो यही है कि उसकी परीक्षाओं के पाठ्य विषयों के अध्यापन की नियमित व्यवस्था नहीं है। सम्मेलन इस दिशा में भी सचेष्ट है। प्रयाग तथा दिल्ली में उसके सुव्यवस्थित साहित्य विद्यालय चल रहे हैं तथा आगरा, काशी, पटना, गोरखपुर, जयपुर, इन्दौर प्रभृति नगरों में भी अच्छे साहित्य विद्यालय चल रहे हैं, जिनमें से अधिकांश को प्रतिवर्ष सम्मेलन द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है। आशा है, अगले वर्ष में विद्यालयों की संख्या और अधिक बढ़ेगी।

[**जगदीश स्वरूप, आवाता**]

माई बेस्ट विशेज फौर दी सक्सेस आफ योर साहित्य अंक।

—एस० राधाकृष्णन, नई दिल्ली।

यह मासिक पत्रिका, खासकर, अहिन्दी प्रान्तों में काम करनेवाले हिन्दी अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। एक हिन्दी के उत्तम प्रकाशनों का विवरण बराबर मिलता रहेगा। आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है। आपके 'साहस' में उन्नति होवे।

—रा० शास्त्री

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचारक सभा, मद्रास

"हिन्दी प्रचारक" बहुत ही श्रेष्ठ निकलता जा रहा है, भविष्य में उसका स्थान अद्वितीय होगा इसमें सन्देह नहीं। आपका प्रयत्न राष्ट्रीय है। मेरे योग्य सेवा लिखें।

—परमेश्वर 'द्विरेफ़'

पिलानी राजस्थान।

"हिन्दी-प्रचारक" का उद्देश्य स्तुत्य है। उसके साहित्य अंक के लिए मेरी शुभ कामनाएँ अर्पित हैं। आशा है, उसकी निर्मल सेवा हमारे लिए कल्याणकारी प्रमाणित होगी।

—सियारामशरण गुप्त

६, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली।

'हिन्दी-प्रचारक' का साहित्यांक बहुत सुन्दर निकलेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

—किशोरीदास वाजपेयी, कनखल।

आपका पत्र सुन्दर निकल रहा है और हम सभी लोग उसकी शुभकामना करते हैं।

—महेन्द्र

'साहित्य-संदेश' आगरा।

केन्द्रीय सरकार और हिन्दी

[सूचना विभाग—भारत सरकार]

संविधान के ३४३वें अनुच्छेद द्वारा देवनागरी लिपि में हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा घोषित की गयी है । यह भी व्यवस्था दी गयी है कि १५ वर्षों की अवधि के बाद अंग्रेजी की जगह हिन्दी को ले लेनी चाहिये ।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये दो बातें बहुत जरूरी थीं । पहली यह कि राष्ट्रीय कामकाज चलाने के लिये विज्ञान, शिल्प-ज्ञान और प्रशासन संबंधी पर्यायवाची हिन्दी शब्दों का यथासंभव शीघ्रता के साथ विकास किया जाय, और दूसरी यह कि अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार का प्रयास हो।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने उक्त १५ वर्षों का कार्यक्रम, ५–५ वर्षों के ३ अध्यायों में बाँट कर योजना बनायी है । पहले ५ वर्षों के कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की रचना पर विशेष जोर दिया गया है । अब तक १०,००० वैज्ञानिक तथा शिल्पिक शब्द प्रकाशित हो चुके हैं । १३,००० अन्य शब्द तैयार हो चुके हैं और शीघ्र ही उनके प्रकाशित किये जाने की आशा है । यह कार्य शिक्षा मंत्रालय का हिन्दी विभाग कर रहा है । साथ ही अ-हिन्दी भाषी क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा के स्कूलों में हिन्दी को एक अनिवार्य विषय बना देने का भी प्रयास पहले ५ वर्षों में ही शुरू किया गया । आसाम, बंबई, कुर्ग, हैदराबाद, सौराष्ट्र और तिरुवांकुर, कोचिन राज्यों में उक्त स्कूलों में हिन्दी अनिवार्य की भी जा चुकी है ।

दूसरे ५ वर्षों के अध्याय में पारिभाषिक शब्दावली के गढ़न का कार्य पूरा करने और अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में सभी छात्रों को हिन्दी से परिचित कराने की योजना बनायी गयी है । हिन्दी में वयस्क साक्षरता आंदोलन की भी व्यवस्था है, जो अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में छेड़ा जायगा ।

उपर्युक्त दो अध्यायों का काम पूरा हो जाने पर तीसरे पंचवर्षीय अध्याय के अन्तर्गत, केन्द्रीय सरकार के प्रशासनिक कार्यों और केन्द्र तथा राज्यों के बीच की लिखा-पढ़ी के लिये अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का भी प्रयोग शुरू हो जायगा। अंतिम ५ वर्षों की अवधि में वे सारी कठिनाइयाँ एवं त्रुटियों को भी दूर करने का अवसर रहेगा, जो उस समय तक हिन्दी के प्रयोग से उत्पन्न हों । इस प्रकार १५ वर्षों के अन्त में हिन्दी पूर्ण रूप से अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर सकेगी और शिक्षा-स्तर ह्रास अथवा प्रशासनिक कार्य में बाधा पड़ने का खतरा भी न रहेगा ।

प्रथम अध्याय में हुआ कार्य

प्रथम अध्याय की अपनी योजना पूरी करने के लिये केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने १९५० में एक वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की स्थापना की । इस बोर्ड की १८ विशेषज्ञ समितियाँ विभिन्न वैज्ञानिक एवं शिल्पिक शब्दावलियों के गढ़न-कार्य में संलग्न हैं। माध्यमिक शिक्षा के लिये अंकगणित, भौतिक, रसायन, वनस्पति तथा समाज के विज्ञानों के लिये ये शब्दावलियाँ पूर्ण रूप में तैयार हो चुकी हैं । परिवहन, प्रतिरक्षा, रेल, डाक व तार तथा कृषि विषयों की शब्दावलियाँ भी अस्थायी सूचियों के रूप में प्रस्तुत की जा चुकी हैं । पशु-विज्ञान, प्रतिरक्षा सेवाओं, इंजीनियरी, चिकित्सा, आदि के विषय में शब्द-गढ़न का कार्य अन्य समितियाँ संभाल रही हैं । बोर्ड, कोर्स की किताबें और मैनुअल तैयार कराने का भी काम कर रहा है, जिनमें उक्त वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग किया जाय ।

हिन्दी साहित्य का विकास

सर्वोत्तम हिन्दी पुस्तकों के लिये २९,००० रु० के पुरस्कार देने की भी व्यवस्था की गयी है । नौ-सिखिया वयस्कों के लिये उपयोगी पुस्तकों की कम से कम १,००० प्रतियाँ सरकार द्वारा खरीदे जाने की भी एक योजना बनायी गई है । इनमें से सर्वोत्तम पुस्तकों के लिये भी पुरस्कार दिये जायंगे । पहले ५ पुरस्कार एक-एक हजार रुपये के होंगे और शेष ५–५ सौ रु०

के। नौसिखियों के लिये विशेष उपयोगी पैम्फलेटों के भी प्रकाशन की व्यवस्था है और अब तक ऐसे १६० पैम्फलेट प्रकाशित किये जा चुके हैं ।

साधारण जनता के लिये आधुनिक संसार संबंधी जानकारी सरल हिन्दी भाषा में उपलब्ध करने के लिये एक जन-ज्ञान कोश (पीपुल्स इन साइक्लोपीडिया) भी तैयार कराई जा रही है और इसका पहला खण्ड छपने वाला है । इसके अलावा सरकार एक भारत का इतिहास, एक विश्व का इतिहास और एक जीवन-कहानी भी हिन्दी में प्रकाशित कराने का प्रबन्ध कर रही है। प्राचीन हिन्दी ग्रंथों (हिन्दी क्लासिक्स) के सस्ते संस्करण प्रकाशित करने के लिये, काशी की नागरी प्रचारिणी सभा को २५,००० रु० का अनुदान दिया गया है, जो ५ वर्षों में मिलेगा। सरकार सस्ता साहित्य मंडल तथा अन्य प्रकाशन संस्थाओं से किताबें खरीद कर उनकी सहायता करने का भी विचार कर रही है ।

शब्दकोश और रीडर

हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में समान रूप से प्रचलन में आनेवाले शब्दों का भी एक कोश तैयार कराया जा रहा है । ऐसे हिन्दी शब्द जो असमी, कन्नड़, पंजाबी, तामिल, बंगला, गुजराती, कश्मीरी, मलयालम और तेलगू में समान रूप से पाये जाते हैं, संकलित किये जा रहे हैं । इलाहाबाद की हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी 'कानसाइज आक्सफोर्ड डिक्शनरी' के आधार पर एक संक्षिप्त हिन्दी शब्दकोश तैयार कर रही है, जिसके लिये सोसायटी को ६०,००० रु० दिया गया है । शब्द-सागरकाएक संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण निकालने के लिये काशी की नागरी प्रचारिणी सभा को १,००,००० रु० देने का निश्चय किया गया है। आशा है कि यह काम ५ वर्षों में समाप्त किया जायगा ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

हिन्दी भाषा का एक मूल (बेसिक) व्याकरण तैयार कराने के लिये ५ सदस्यों की एक समिति नियुक्त की गयी है । हिन्दी से उर्दू और उर्दू से हिन्दी शब्दकोश तथा तेलगू, मराठी, कन्नड़ व उर्दू साहित्यों के इतिहास हिन्दी में प्रस्तुत करने के लिये हैदराबाद की हिन्दी प्रचार सभा को आर्थिक सहायता प्रदान की गयी है । एक हिन्दी ज्ञान-कोश तथा अहिन्दी भाषी लोगों के लिये हिन्दी रीडरें तैयार कराने की योजना विचाराधीन है ।

हिन्दी का विषय अनिवार्य

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने राज्यों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिये, अप्रैल, १९५० में कई सुझाव दिये थे तदनुसार राज्य सरकारों से प्रार्थना की गयी है कि स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई के लिये वे समुचित व्यवस्था करें । विंध्य प्रदेश त्रिपुरा, तिरुवांकुर-कोचीन, सौराष्ट्र, पंजाब, उड़ीसा, हैदराबाद, दिल्ली, कुर्ग, बम्बई, असाम और अंडमान व निकोबार द्वीपों में माध्यमिक शिक्षा के स्कूलों में हिन्दी पहले से ही एक अनिवार्य विषय बनाई जा चुकी है। विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई के विषय पर विस्तार सहित विचार करने के लिये जनवरी १९५३ में विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों का एक सम्मेलन बुलाया गया था, जिसमें कई उपयोगी सिफारिशें की गयी हैं। पंचवर्षीय योजना के अधीन सरकार ने हिन्दी विभागों के विस्तार के लिये बनारस व दिल्ली विश्वविद्यालयों को क्रमशः ३७,५०० रु० तथा १०,००० रु० दिया है। 'हिन्दी चेयर' की स्थापना के लिये आंध्र विश्वविद्यालय के लिये भी अनुदान स्वीकार किया गया था, पर विश्वविद्यालय ने प्रार्थना की कि वह अनुदान 'संस्कृत चेयर' खोलने पर खर्च किया जाय ।

देश की विभिन्न हिन्दी संस्थाओं द्वारा ली जानेवाली परीक्षाओं के स्तरों की जाँच करने और उन्हें मान्यता प्रदान करने के प्रश्न पर विचार करने के लिये ११ सदस्यों की एक समिति नियुक्त करने का भी निश्चय किया है ।

देश में हिन्दी का प्रचार-कार्य और जोरदार बनाने के लिये हिन्दी-शिक्षा समिति का, जो एक सलाहकारी संस्था है, फिर से संगठन किया गया है । इसमें सभी अहिन्दी भाषी राज्यों के प्रतिनिधि, दो संसद-सदस्य, कई हिन्दी राज्यों तथा महत्वपूर्ण हिन्दी संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित किये गये हैं। पूर्वी राज्य और दक्षिणी भारत के राज्यों में हिन्दी का प्रचार करने के लिये क्रमश आगरे की अखिल भारतीय हिन्दी परिषद और मद्रास की दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के जरिये दो तदर्थ योजनाएँ क्रियान्वित करायी जा रही हैं।

केन्द्रीय सरकार के उन कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने के लिये जो हिन्दी नहीं जानते, १९५२ में, हिन्दी पढ़ाने की निःशुल्क कक्षा खोली गयी थी। इसका कोर्स ६ महीने का है और पढ़ाईके बाद 'हिन्दी प्रबोध परीक्षा' ली जाती है। १९५४ से ६५० उम्मीदवारों ने यह परीक्षा पास की, जबकि १९५३ में केवल ३६ ने पास की थी।

भारत सरकार ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सांकेतिक लिपि की संतोषजनक प्रणाली विकसित करने के लिये ध्वनि-विज्ञान विशारदों तथा अन्य विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त की है। सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि एक निश्चित की-बोर्ड के कुछ हिन्दी-टाइपराइटर बनवाये जायं और छपाई की सटीकता व तेजी की दृष्टि से उनकी पूरी-पूरी जाँच की जाय। जिन लोगों ने अधिक अच्छे की-बोर्डों के टाइपराइटर तैयार किये होंगे, वे भी इस प्रकार की जाँच के लिये उन्हें भेज सकेंगे।

तदर्थ अनुदान

हिन्दी के प्रचार के लिये सरकार ने निम्नलिखित संस्थाओं को तदर्थ अनुदान (एड होक ग्रांट्स) भी दिये हैं:—अखिल भारतीय परिषद, आगरा, ५,००० रु०, साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, १०,००० रु०, मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार सभा, बंगलोर, ५,००० रु०, हिन्दुस्तानी हिन्दी सभा, हैदराबाद, १०,००० रु०, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी, इलाहाबाद, २५,००० रु० हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बंबई, १०,००० रु०' हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद, १,४६,००० रु०, और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा ६६,००० रु०।

पंचवर्षीय योजना के अधीन, हिन्दी के प्रचार व विकास के लिये केन्द्र द्वारा स्वीकृत राज्य-योजनाओं को १९५४–५५ में कायान्वित करने के लिये भी नीचे लिखे अनुसार सहायताएँ प्रदान की गयी हैं:—

उड़ीसा, १७,०४९ रु०, पश्चिमी बंगाल, १४,६०० रु०, बिहार, ४७,५२० रु०, तिरुवांकुर-कोचीन, ८८,४४० रु० और आसाम, १३,९९२ रु०।

हिन्दी-तार-सेवा

डाक और तार के महानिर्देशक की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि कुछ लोग यह समझते हैं कि हिन्दी में तार पर अंग्रेजी के तार की अपेक्षा अधिक खर्च करना पड़ता है। यह सही नहीं है। डाक और तार विभाग ने हिन्दी-तार-सेवा को यथा-सम्भव सस्ती बनाने का पूरा खयाल रखा है और शब्दों पर महसूल लगाने के विशेष नियम बनाये हैं।

हिन्दी तारों पर महसूल लेने की सामान्य विधि इस प्रकार है:—

(१) मात्रा अक्षर से अलग नहीं मानी जाती।

(२) १० अक्षरों का एक शब्द माना जाता है।

(३) १० अक्षरों तक की पूरी क्रियाएँ एक शब्द मानी जाती हैं।

(४) विभक्तियों की गिनती अलग नहीं होती जैसे 'मकानमें'।

(५) प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानसंपादक, सहायकसंपादक आदि समासान्त पद एक शब्द माने जाते हैं परन्तु ऐसे पद मिलाकर लिखे होने चाहिये और अक्षरों की संख्या दस से अधिक न होनी चाहिये।

दूसरी गलत धारणा यह है कि हिन्दी में तार उतना जल्दी नहीं पहुँचते जितना अंग्रेजी के। हिन्दी के तारों के लिये तो कुछ मार्ग विशेष रूप से अलग कर दिये गये हैं। इससे ये तार हर समय और आसानी से भेजे जा सकते हैं। ऐसे तारों के भेजने और बांटने में भी शीघ्रता पर ध्यान न दिया जाता है।

अब हिन्दी में भी तार के संक्षिप्त पते रजिस्टर कराये जा सकते हैं। जो पते पहले से ही अंग्रेजी में रजिस्टर हैं, उनको हिन्दी में रजिस्टर कराने के लिये केवल ५ रु० देना पड़ता है। अलग से हिन्दी में पते रजिस्टर कराने का महसूल वही २० रु० वार्षिक या १२ रु० छमाही है।

बधाई के तार भी हिन्दी में भेजे जा सकते हैं। बधाई के २५ वाक्य हैं, जिनमें से कोई सा चुनकर उसकी संख्या का निर्देश किया जा सकता है। हिन्दी में छपे ऐसे तार बधाई के सुसज्जित फार्मों पर सुन्दर लिफाफों में रखकर बांटे जाते हैं।

हिन्दी-तार-सेवा १९४९–५० में आरम्भ हुई थी। अब बहुत से कर्मचारियों ने हिन्दी-तार की शिक्षा प्राप्त कर ली है, और अधिकाधिक संख्या में प्रशिक्षित करने के लिये ६ केन्द्रों में विशेष कक्षाएँ खोली गई हैं। इस समय ६२२ तार-कार्यालयों में हिन्दी-तार का काम होता है।

जनता को इस विषय का पूरा ज्ञान कराने के लिये, जिन तार-कार्यालयों में हिन्दी-तार का काम होता है वहाँ विभाग शीघ्र ही एक पुस्तिका वितरित करेगा।

नागरी दूर-मुद्रक का विकास

टेलि-प्रिंटर' (दूर से छापने वाला अर्थात् दूर-मुद्रक) उस यंत्र का नाम है, जिसके द्वारा किसी दूरस्थ स्थान से तार द्वारा भेजने वाला संवाद निर्दिष्ट स्थान पर छपा हुआ (टाइप किया हुआ) प्राप्त हो जाता है। यह यंत्र किसी भी अच्छे समाचारपत्र के कार्यालय में देखा जा सकता है। खुट-खुट-खुट की ध्वनि के साथ संवाद के संवाद एक सरकते हुए कागज पर छपते रहते हैं और समुचित सम्पादन के बाद समाचारपत्रों के स्तम्भों में स्थान प्राप्त करते हैं।

संसार में शायद अब तक केवल रोमन लिपि (अंग्रेजी) की ही टेलीप्रिंटर मशीनों का निर्माण हुआ था। देवनागरी (हिन्दी) दूसरी लिपि है, जिसमें संवादों के तुरन्त आदान-प्रदान के लिये अब टेलीप्रिंटर मशीन तैयार हुई है।

नागरी लिपि में वर्तमान दूर-मुद्रक (टेलि-प्रिंटर) यंत्र तैयार करने का श्रेय बहुत-कुछ डाक तार विभाग के इंजीनयरिंग की गवेषणा एवं उनके परिश्रमशील प्रयास को है। फिर भी, नागरी दूर-मुद्रक यंत्र अभी विकास की अवस्था ही में है, और प्रति वर्ष उसमें कुछ न कुछ सुधार हो रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

स्वाधीनता के बाद, हिन्दी में भी तार भेज सकने की व्यवस्था आवश्यक समझी गयी और इसके लिये हिन्दी मार्क्स-प्रणाली (मार्क्सकोड) का निर्माण हुआ। अनेक प्रयोगों के बाद १९४९ में हिन्दी में तार भेजने की व्यवस्था, हिन्दी तार-सेवा के आरम्भ के साथ हो गई। अब प्रतिवर्ष, ५६९ तारघरों से लगभग ३०,०००तार हिन्दी में भेजे जाते हैं।

हिन्दी मार्क्स-प्रणाली की सफलता से हिन्दी दूर-मुद्रक का विचार उठा। रोमन लिपि के मौजूदा टेलीप्रिंटर में आवश्यक फेर-बदल करके नागरी लिपि का दूर-मुद्रक तैयार करने के प्रारम्भिक प्रयत्नों में कई कठिनाइयाँ आयीं। सबसे बड़ी कठिनाई, नागरी वर्णमाला के सभी अक्षरों एवं मात्राओं को, रोमन लिपि के छोटे-से की-बोर्ड पर न ला सकने के कारण पैदा हुई। इस समय प्रचलित (अंग्रेजी की) टेलीप्रिंटर मशीन ५–यूनिट-कोड के आधार पर काम करती हैं। इनपर कुल ६०मुद्रियाँ (कीज) होती हैं, जो केवल ५३ ही अक्षर बैठाने के लिये उपलब्ध हैं। नागरी में वर्णों के अतिरिक्त मात्राएँ भी हैं, जिन्हें वर्ण के आगे पीछे, ऊपर या नीचे लगाने की जरूरत पड़ती है। स्पष्ट है कि अंग्रेजी के की-बोर्ड पर ये सब नहीं आ सकती थीं।

कई बार संशोधन

यह भारी कठिनाई दूर करने के लिये पहले 'स्वरखड़ी' प्रणाली के आधार पर नागरी लिपि में कुछ संशोधन किये गये और नागरी के वर्ण टेलीप्रिंटरों पर अंग्रेजी अक्षरों के स्थानों पर बिठा दिये गये। इस प्रकार नागरी का जो दूर-मुद्रक तैयार हुआ, उसका प्रयोग पहले-पहल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दिल्ली-अधिवेशन के समय १९५१ में किया गया। किन्तु इसमें अभी बहुत सुधार की जरूरत थी। अगले वर्ष कई परिवर्तन करके दो दूर-मुद्रक और तैयार किये गये। इन दोनों ही मशीनों का प्रयोग कांग्रेस के नानल नगर अधिवेशन में, १९५२ में किया गया। ये मशीनें भी संतोषजनक नहीं थीं। अतएव और संशोधन किये गये, और फलत: वर्तमान माडल की छ: दूर-मुद्रक मशीनें तैयार की गयीं। १९५३ की टेलीग्राफ शताब्दी प्रदर्शनी में इनका भी प्रदर्शन किया गया था।

वर्तमान माडल

नागरी के वर्तमान दूर-मुद्रक (टेलीप्रिंटर) में ६० कीज (मुद्रियों) का की-बोर्ड है। मात्राएँ लगाने के लिये ९ मृत मुद्रियाँ (डेड कीज) भी हैं। ये मुद्रियाँ, मात्राएँ लगाने के लिये अक्षर छपने के बाद दबायी जाती हैं, न कि पहले, जैसा पिछले

[शेष पृष्ठ २२ पर]

संसद में हिन्दी की प्रगति

[मन्नूलाल द्विवेदी]

यद्यपि भारत संघ की राज्य भाषा के रूप में हिन्दी अंगीकृत की जा चुकी है, पर प्रारंभिक दिनों में संविधान के नीति सम्बन्धी उपबन्धों को कार्यान्वित करने में कुछ विशेष न किया गया। संविधान को कार्यान्वित होते हुए पांच वर्ष समाप्त हो रहे हैं और इसलिये दिन प्रतिदिन के कामों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की आवश्यकता अनुभव की गई है और लोक सभा ने इस दिशा में मार्ग प्रदर्शन किया है। भारत संघ की भाषा के रूप में हिन्दी के विकास के लिये १९५४ का वर्ष संसद के इतिहास में उल्लेखनीय है। न केवल प्रश्न, कार्यसूची, लोकसभा के बुलेटिन आदि ही सदस्यों को हिन्दी में उपलब्ध होते हैं, बल्कि विभिन्न कार्यों के लिये काम में लाए जाने वाले सभी प्रपत्र भी अब हिन्दी में उपलब्ध होने लगे हैं। इसमें न केवल उन्हीं सदस्यों को सुविधा मिली है, जिनका अंग्रेजी का ज्ञान बहुत कम या नहीं के बराबर है बल्कि हिन्दी न जानने वाले सदस्यों को भी हिन्दी के साथ सम्पर्क में आने और विभिन्न प्रकार के संसदीय पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन कर हिन्दी के मुहावरों आदि को जानने का पर्याप्त अवसर मिला है।

संसद अध्यक्ष श्री मावलंकर का सदस्यों को आदेश

इन सब सुविधाओं के बावजूद भी संसद में प्रायः सारा ही काम अंग्रेजी में होता है। इसका उद्देश्य यह था कि संसद सदस्यों को हिन्दी सीखने का पूरा अवसर प्रदान किया जाय। किन्तु अब पाँच वर्षों की समाप्ति पर हिन्दी को अपने पैरों पर खड़ा करना नितांत आवश्यक हो गया है ताकि संसद में उसका अधिकारपूर्ण प्रयोग हो सके। यदि यह न किया गया, तो १९६५ की पहली तारीख से, जो कि अंग्रेजी-समाप्ति की अंतिम तिथि है, राज्य भाषा के रूप में हिन्दी को किसी जादू की छड़ी से कार्यान्वित न किया जा सकेगा। अतः संसद में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिये अध्यक्ष तथा सरकार ने सही दिशा में कदम उठाया है। १ दिसम्बर १९५४ से हिन्दी को एक नई दिशा मिली है, जब कि अध्यक्ष ने यह घोषणा की कि भविष्य में उत्तरों और वक्तव्यों आदि के अंग्रेजी अनुवाद की सुविधा न दी जाएगी। अध्यक्ष ने कहा कि उनकी समझ में नहीं आता कि कैसे सदस्यगण संविधान के प्रति सच्चे रह सकते हैं यदि वे १५ वर्ष तक अंग्रेजी काम में लाते रहे और उसके बाद पहली जनवरी १९६५ से एक साथ हिन्दी में काम करने लगें। सदस्यों को यह पृष्ठभूमि सदा याद रखनी चाहिये। यदि कोई सदस्य किसी उत्तर को समझना कठिन पाता है तो यह उसका अपना ही दोष है। संविधान ५ साल तक काम में लाया जा चुका है, और आशा की जाती है कि सदस्यगण हिन्दी समझने की अपनी तरफ से कुछ न कुछ कोशिश अवश्य करेंगे।

अध्यक्ष ने यह भी कहा: "जहाँ कहीं मैंने यह महसूस किया कि कोई सदस्य बिलकुल हिन्दी नहीं समझ पाता या निकट भविष्य में उसके द्वारा हिन्दी सीखे जाने की कोई संभावना नहीं है, मैंने अन्य भाषाओं और हिन्दी में भी अनुवाद करने की अनुमति दी है। मेरा ख्याल है कि यह माँग करना कि अंग्रेजी में उत्तर अनूदित किये जाएं, क्योंकि कोई सदस्य हिन्दी नहीं समझता, संविधान की अश्रद्धा करना होगा। यदि कोई सदस्य हिन्दी समझना ही नहीं चाहता तो उसके लिये अनुवाद न कराया जायगा।"

जब अध्यक्ष ने यह कहा कि हिन्दी में बोलने के प्रयत्न पर अन्य सदस्यों को हंसते हुए देखकर उन्हें बहुत दुःख होता है, तो अध्यक्ष के इस कथन का करतल ध्वनि द्वारा स्वागत किया गया। संसद के सदस्यों ने संविधान के प्रति सच्चे रहने की शपथ ली है और इसलिये हिन्दी के विकास में उन्हें सच्चाई और गंभीरता के साथ प्रयास करना चाहिये।

प्रधान मंत्री नेहरू जी द्वारा मार्गदर्शन

अध्यक्ष द्वारा इस नीति की घोषणा के बाद से बहुत से सदस्यों को हिन्दी में बोलने का प्रोत्साहन मिला है। प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और उनकी सरकार भी पीछे नहीं रही है। हिन्दी के विकास के लिये क्रमशः पर सबल कदम उठाए जा रहे हैं ताकि १५ वर्ष की निर्धारित अवधि के अन्त पर हिन्दी को उचित स्थान प्राप्त हो सके। सब सरकारी विभागों को आदेश मिल चुका है कि हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाय। संसद में मंत्रियों व उपमन्त्रियों से कहा गया है कि हिन्दी में पूछे गये प्रश्नों व पूरक प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाय। प्रधान मंत्री ने भी सदन में प्रश्नों व पूरक प्रश्नों का हिन्दी में उत्तर

देकर इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया है। गत अधिवेशन में अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर बहस शुरू करते हुए प्रधान मंत्री ने एक घंटे से अधिक समय तक हिन्दी में ही भाषण दिया था । पिछले अधिवेशन में भी, जो अभी समाप्त हुआ है, जब कभी कोई उपमंत्री हिन्दी में उत्तर देने में असमर्थ होता तो वह उसको चेतावनी देते पाए गए । कई बार जब कोई मंत्री हिन्दी में उत्तर देने में असमर्थ रहा तो प्रधान मंत्री ने स्वयं प्रश्नों का हिन्दी में उत्तर दिया। प्रधान मंत्री के इस रुख ने संसद का वातावरण बदल दिया है और नतीजा यह है कि हिन्दी जानने वाले सदस्य, जो अभी तक हिन्दी में बोलने में हिचकते थे, आश्चर्यचकित हो गए हैं। इस नीति के फलस्वरूप हिन्दी न जाननेवाले मंत्रियों तक ने हिन्दी सीख ली है और अब वे अच्छी तरह हिन्दी में प्रश्नों का उत्तर देते हैं। उन्होंने हिन्दी न जानने वाले सभी सदस्यों के सामने एक उदाहरण रखा है ।

संसदीय हिन्दी परिषद का सुकार्य

संसदीय हिन्दी परिषद ने हिन्दी की कक्षाएँ आरम्भ की हैं, जिनमें हिन्दी सीखने की इच्छा रखने वाले सदस्यों को हिन्दी सिखाने की कोशिश की जा रही है और यह संतोषजनक है कि अधिकाधिक सदस्य हिन्दी सीख रहे हैं। अक्टूबर १९५४ में संघ के वार्षिक उत्सव का सभापतित्व करते हुए प्रधान मंत्री ने हिन्दी परीक्षाओं में उतीर्ण होने वाले सदस्यों को डिप्लोमा दिये और पुरस्कारस्वरूप हिन्दी पुस्तकें वितरित कीं। इसी अधिवेशन में प्रधान मंत्री ने अपने घरपर एक हिन्दी गोष्ठी आयोजित की जिसमें १०० सदस्यों से अधिक लोगों ने भाग लिया। संसद के हिन्दी कवि और साहित्यिक भी गोष्ठी में उपस्थित थे। पंडित नेहरू ने कहा कि यदि हिन्दी में जबरदस्ती विदेशी शब्द लाए जायँ तो ऐसा करना कृत्रिम होगा। ऐसा करने से हिन्दी की मौलिकता मारी जायगी जिसके बिना कोई भी भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन नहीं बन सकती, उन्होंने कहा कि गाँवों में काम में लाए जाने वाले आम बोलचाल के शब्दों को हिन्दी में लाना उचित और बुद्धिमतापूर्ण होगा। यह गोष्ठी प्रधान मंत्री द्वारा हिन्दी के संरक्षण का एक प्रतीक है ।

राष्ट्रपति से हिन्दी आयोग नियुक्त करने की मांग

जबकि एक ओर उक्त बातें हो रही थीं, दूसरी ओर संसदीय हिन्दी परिषद का एक प्रतिनिधि मंडल राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के सम्मुख उपस्थित होकर उनसे अनुरोध कर रहा था कि संविधान के अनुच्छेद ३४४ के अनुसार एक हिन्दी आयोग नियुक्त किया जाय। प्रतिनिधि मंडल ने राष्ट्रपति के सम्मुख एक स्मारक-पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें संविधान के अनुसार विभिन्न भाषाओं के प्रमुख साहित्यिकों को लेकर एक आयोग नियुक्त करने की आवश्यकता पर विस्तृत व्याख्या की गई । प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति से यह भी अनुरोध किया कि उनके आदेश में आयोग द्वारा किये जाने वाले काम की प्रक्रिया भी निर्धारित होनी चाहिये। हिन्दी के विकास और अंग्रेजी का स्थान लेने तथा इस परिवर्तन काल में किये जाने वाले कामों से सम्बन्धित कई सुझाव भी प्रतिनिधि मंडल ने पेश किये।

याद रखना चाहिये कि संविधान के अनुच्छेद ३४४ में निर्धारित किया गया है कि (१) राष्ट्रपति इस संविधान के प्रारम्भ से पाँच वर्ष की समाप्ति पर तथा तत्पश्चात ऐसे प्रारम्भ से १० वर्ष की समाप्ति पर आदेश द्वारा एक आयोग गठित करेगा जो एक सभापति और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित भिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिल कर बनेगा जैसे कि राष्ट्रपति नियुक्त करे, तथा आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया भी परिभाषित करेगा। (२) राष्ट्रपति को निम्नलिखित के बारे में सिफारिश करना आयोग का कर्तव्य होगा।

(क) संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये हिन्दी भाषा का उत्तरोत्तर अधिक प्रयोग, (ख) संघ के राजकीय प्रयोजनों में से सब या किसी के लिये अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर प्रतिबन्ध, (ग) अनुच्छेद ३४८ में वर्णित प्रयोजनों में से सब या किसी के लिये प्रयोग की जाने वाली भाषा, (घ) संघ के किसी एक या उल्लिखित प्रयोजनों के लिये प्रयोग किये जाने वाले अंकों का रूप, (च) संघ की राज्य भाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच अथवा एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच संचार की भाषा तथा उनके प्रयोग के बारे में राष्ट्रपति द्वारा आयोग से पूछे हुए अन्य विषय।

राष्ट्रपति ने कहा चूंकि संविधान में आयोग की नियुक्ति के लिये निश्चित उपबन्ध है सरकार स्वतः ही इन उपबन्धों को कार्यान्वित करने में आवश्यक कदम उठायेगी ।

इस प्रकार हिन्दी निर्धारित कालावधि में संघ की भाषा बनने की दिशा में निश्चित प्रगति कर रही है और संसद इस दिशा में सबसे आगे है। ['आर्थिक समीक्षा' से]

संस्मरण साहित्य और रेखाचित्र

[लक्ष्मीशंकर व्यास, एम० ए०, आनर्स]

हिन्दी-साहित्य में संस्मरण-प्रधान रचनाओं के प्रणयन एवं प्रकाशन की ओर अब ध्यान दिया जाने लगा है। यह हमारे साहित्य की स्वस्थता, सशक्तता और सजीवता का परिचायक है। साहित्य का यह अंग उपेक्षित रहा है किन्तु इधर हिन्दी के अनेक वयोवृद्ध, प्रौढ़ और तरुण साहित्यकारों ने युग की परिवर्तित भावना के अनुरूप सुन्दर एवं उच्चकोटि के कलापूर्ण संस्मरण-साहित्य का सर्जन किया है। अभी संस्मरण और रेखाचित्र लेखन की प्रवृत्ति, प्रौढ़ता और प्रांजलता की ओर विकासोन्मुख ही है, यह स्वीकार करना होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी-साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन एवं प्रणयन की विस्तृत एवं व्यापक भूमि है, तथापि अभी तो उसका श्रीगणेश ही कहा जा सकता है। वास्तव में संस्मरण एवं रेखाचित्र साहित्यका सर्जन है भी अपेक्षाकृत कठिन और सभी के बूते का नहीं। इसके लिए जहाँ पैनी दृष्टि आवश्यक है, वहीं विदग्ध एवं संवेदनाशील हृदय भी। व्यक्ति के मनोभावों को ही नहीं, अपितु उसके चतुर्दिक वातावरण और उसकी परिस्थितियों की पृष्ठभूमि के निरीक्षण-परीक्षण तथा सर्वेक्षण की क्षमता सजीव संस्मरण के लिए अनिवार्य रूप से होनी चाहिये।

संस्मरण तथा रेखाचित्र में साहित्य के विभिन्न स्वरूपों का रसात्मक एवं कलात्मक संगम होता है। कथा, कविता, नाटकीय तत्वों तथा कलात्मक भावनाओं का इसमें सम्मिश्रण रहता है। इससे अतीत नेत्र के सम्मुख आ उपस्थित होता है तो कभी मर्म पर चोट करने वाली भावनाएँ तरंगित हो उठती हैं। कभी स्फूर्ति एवं नव-प्रेरणा का स्फुरण करने वाली संजीवनी सुन्दरी अपने बहुरंगी परिधान में कल्पना चक्षु के समक्ष नृत्य करने लगती है। संस्मरण साहित्य हमारे ज्ञानचक्षु को तृप्त जिज्ञासावृत्ति को शान्त और मनोभावों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करता है।

संस्मरण साहित्य के निर्माता

हिन्दी में संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन की प्रवृत्ति का प्रारंभिक श्रेय स्वर्गीय आचार्य पण्डित पद्मसिंह शर्मा को है। आपने महाकवि अकबर के बड़े ही रोचक एवं सजीव संस्मरण लिखे। सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने संस्मरण एवं रेखाचित्र-लेखन कार्य को आगे बढ़ाया है। आपने स्वयं रेखाचित्र तथा संस्मरण लिखे और अन्य लेखकों को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया है। श्री श्रीप्रकाशजी, राज्यपाल मद्रास ने भी अनेक संस्मरण लिखे हैं जिनमें स्वर्गीय मोतीलाल नेहरू के संस्मरण उल्लेख्य हैं। सर्वश्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, राजा राधिकारमण सिंह, महादेवी वर्मा, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हजारी प्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल अयोध्याप्रसाद गोयलीय, सत्यकाम विद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी, शिवपूजन सहाय, विनोदशंकर व्यास, उदयशंकर भट्ट, शान्तिप्रिय द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, भगवतशरण उपाध्याय, जगदीशचन्द्र जैन, अज्ञेय, मोहनलाल महतो, 'कमलेश', प्रकाशचन्द्र गुप्त, देवेशदास, सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, क्षेमचंद्र 'सुमन' किशोरीदास वाजपेयी, कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब', सन्त निहालसिंह आदि साहित्यकारों ने पिछले वर्षों संस्मरण एवं रेखाचित्र प्रस्तुत किये हैं। इनके अतिरिक्त नयी-पीढ़ी के तरुण लेखकों का योगदान भी इस साहित्य की अभिवृद्धि में कुछ कम महत्व पूर्ण नहीं। संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन की इस प्रवृत्ति के संकेतात्मक विवरण के अनन्तर, गत वर्ष इस क्षेत्र में कितनी प्रगति हुई, इसका संक्षिप्त इतिवृत्त प्रस्तुत करना, इस लेख का मुख्य प्रतिपाद्य है।

विगत वर्ष के संस्मरण

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'समाज' में स्वर्गीय सुभाषचन्द्र वसु लिखित 'मेरे गुरुदेव', भगवतीप्रसाद वाजपेयी के 'महाप्राण निराला' तथा श्री लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी सम्बन्धी श्री विनय मोहन शर्मा के संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। वाजपेयी जी ने 'निराला' जी के इस संस्मरण में उनकी मानसिक स्थिति का विश्लेषण किया है। 'ज्ञानोदय' में श्री शंकरदेव विद्यालंकार ने श्री बिट्ठलराव घाटे का जीवन-परिचय एवं संस्मरणात्मक विवरण कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसी पत्र में श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने सुप्रसिद्ध लेखक, अभिनेता और साधक के रूप में श्री बलराज साहनी के संस्मरण लिखे हैं। सत्यार्थी जी के

इस सस्मरण का एक स्थल देखिये--'बलराज ने अपनी दुलहन से मेरा परिचय कराते हुए मुझसे अनुरोध किया था कि मैं दुलहन के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दूँ। हुक्म में बँधे हुए मेरे हाथ उठे और अपना कार्य करके पीछे हटे। जोर का कहकहा पड़ा। दुलहन भी हंस पड़ी।'

प्रोफेसर रंजन ने बंकाक में भारतीय मित्र श्री रघुनाथ शर्मा का बड़ा ही सजीव संस्मरण 'ज्ञानोदय'में प्रकाशित किया है। इसी पत्र में श्री विश्वनाथ कुलश्रेष्ठ ने महाकवि 'निराला' का संस्मरण प्रस्तुत करते हुए यह शब्द चित्र अंकित किया है--'उस दिन महाकवि का जन्म-दिवस था। उनके कमरे में कुछ स्थानीय साहित्यिक विराजमान थे। निराला जी हाथ में लिखी हुई अपनी एक रचना 'वरद हुई शारदा जी हमारी' भैरवी के स्वरों में सुना रहे थे। लोग महाकवि के श्रीमुख से स्वरों और मनोभावों का रस ले रहे थे। कविता पाठ समाप्त हुआ और प्रशंसकों का वह दल महाकवि के जन्म-दिवस पर अपने श्रद्धाकुसुम भेंट कर चला गया।'

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

श्रीयुत बनारसीदास जी चतुर्वेदी की 'हमारे आराध्य' 'संस्मरण' और 'रेखाचित्र'--ये तीन पुस्तकें पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। इनसे संस्मरण साहित्य के सुन्दर एवं कलात्मक स्वरूप का परिचय हिन्दी संसार को मिल चुका है। गत वर्ष भी चतुर्वेदी जी ने कई सुन्दर संस्मरण लिखे इनमें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा श्री सम्पूर्णानन्द जी सम्बन्धी संस्मरण उल्लेख्य हैं। अभी हाल में ही आपका सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा पर एक संस्मरण प्रकाशित हुआ है जो अत्यन्त सजीव एवं मार्मिक है। इसका एक स्थल शर्माजी के व्यक्तित्व एवं शील-स्वभाव का किस प्रकार परिचय प्रस्तुत करता है देखिये--'पण्डित जी मनमौजी आदमी थे। उन्होंने अर्थ-संग्रह को कभी अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बनाया। दूसरों को खिलाने-पिलाने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। अपने हाथ से अंगीठी पर विविध प्रकार की खाद्य-सामग्री प्रस्तुत करके अपने इष्ट-मित्रों को खिलाने में उन्हें अतीव प्रसन्नता हुआ करती थी। और इसके साथ या तो शेरखानी जामी रहती थी अथवा संस्कृत के कूट श्लोकों का पाठ अथवा कोई धार्मिक, सामाजिक या ऐतिहासिक प्रसंग छिड़ जाता था।'

श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

संस्मरण लेखन में उर्दू साहित्य के मर्मज्ञ एवं सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय का अपना स्थान है। आपने 'गहरे पानी पैठ' और 'जैन जागरण के अग्रदूत' लिखकर इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। गत वर्ष आपकी शेरो व सुखन के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम भाग प्रकाशित हुए हैं। इनमें उर्दू शायरी का रसात्मक इतिहास तो प्रस्तुत हुआ ही है, उर्दू शायरों के बड़े सजीव एवं कलापूर्ण संस्मरण भी अंकित हुए हैं। 'ज्ञानोदय'में आपके अनेक संस्मरण भी गत वर्ष प्रकाशित हुए। इन्हीं में से एक 'शाने मुफलिसी' की एक झलक देखिये--'दिसम्बर १९४१ ईस्वी की बात है। हम चार-पांच साथी मद्रास से दिल्ली जा रहे थे। मद्रासी भोजन के अभ्यस्त न होने के कारण करीब २४ घण्टे निराहार रहकर भूख का लुफ्त उठाते रहे। लतीफे कहते हुए, करवट बदलते हुए, अखबार पढ़ते हुए, निर्दिष्ट स्टेशन पर यथारुचि भोजन मिलने की कल्पना के मजे लेते हुए, वर्धा या नागपुर स्टेशन पर गाड़ी अभी पूरी तरह ठहरने भी न पायी थी कि चार-पांच थालों का आर्डर दे दिया गया।'

श्री कन्हैलाल मिश्र प्रभाकर

श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की 'जिन्दगी मुस्कराई' इस वर्ष प्रकाशित संस्मरण साहित्य की सम्भवतः सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। इस सजीव और स्फूर्तिदायक संस्मरणों की पुस्तक में कुल मिलाकर तेंतालिस संस्मरण हैं। सभी एक से एक सजीव, सुरुचिपूर्ण और शक्ति एवं स्फूर्ति की प्रेरणा देनेवाले। 'प्रभाकर' जी का 'नया जीवन' में इस दिशा में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस मासिक पत्र के प्रत्येक अंक बड़े ही सरस संस्मरणों से युक्त होते हैं। इनमें प्रसिद्ध और प्रौढ़ लेखकों के साथ नई पीढ़ी के लेखकों के संस्मरण भी प्रकाशित होते रहते हैं। स्वयं 'प्रभाकर' जी द्वारा लिखित संस्मरण इसकी शोभा बढ़ाते हैं। इनके शीर्षक, लेखन शैली, भावाभिव्यंजन बड़े ही मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक होते हैं। गत वर्ष प्रकाशित आपके कुछ संस्मरणों के शीर्षक देखिये--उस बेवकूफ ने जब मुझे दाद दी, छोटा-सा पानदान, नन्हा-सा नाला, बोलना उनसे सीखिये, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं!, झाड़ देना भी एक कला है! आदि। 'ज्ञानोदय' में प्रकाशित 'जैनेन्द्रजी' शीर्षक आपके संस्मरण की कुछ पंक्तियाँ देखिये--

'पिताजी, कोई स्वामी जी आये हैं !'---मेरी बच्ची ने कहा तो मैं बाहर आया।

गौर वर्ण, लम्बा कद, छरहरा बदन, शुद्ध खादी के सफेद वस्त्र, पैरों में चप्पल, सिर नंगा, कन्धे पर काला बिहारी कम्बल और दायें हाथ में लटकता झोला। मैं देखकर हंस पड़ा---'ये स्वामीजी जैनेन्द्र जी थे।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

'नई धारा' में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामवृक्ष 'बेनीपुरी' के संस्मरण 'मुझे याद है' शीर्षक से नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। इसके पूर्व आपकी पुस्तक 'पैरों में पंख बांध कर' प्रकाशित हो चुकी है, जिसमें बेनीपुरी जी ने अपनी योरोप-यात्रा के कलात्मक एवं मार्मिक संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। बिहार में किसान-आन्दोलन शीर्षक-संस्मरण में आपने लिखा है---'उन्हीं दिनों की एक मनोरंजक बात है। मेरे एक जमींदार मित्र ने मुझसे कहा---यह क्या करते फिरते हैं आप; क्या आप-लोगों के कहने से जमींदारी प्रथा उठ जायगी ? मैंने कहा---बारह वर्ष में उठकर रहेगी। उन्होंने कहा, आप इस पर दस्तखत कर सकते हैं ? मैंने उनकी डायरी में लिखकर दस्तखत कर दिया ! जब १९४६ के बाद कांग्रेसी मन्त्रिमंडल ने ही ऐसा विधान पास कर दिया, तो उन्होंने मुझे वह दस्तखत दिखलाया और कहा---आप जीत गये, मैं हार गया !

इसी पत्रिका में, श्री जैनेन्द्रकुमार जी ने 'पुस्तकें जिनसे मैंने सीखा' शीर्षक से अपने संस्मरण लिखे हैं। श्री व्रजकिशोर नारायण ने अपनी नई कविताओं के विषय में अपनी स्मृति रेखाएँ लिखी हैं। 'नई धारा' में भी श्री विनयमोहन शर्मा के संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में

'नया-समाज', धर्मयुग, आजकल, विश्वदर्शन, ज्ञानोदय, राष्ट्रभारती, सरस्वती, अजन्ता, कल्पना आदि साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रिकाओं में गत वर्ष अच्छे संस्मरण प्रस्तुत किये। 'नया समाज' में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री राहुल सांकृत्यायन ने स्वामी सत्यानन्द, तथा श्री किशोरीदास बाजपेयी सम्बन्धी संस्मरण लिखे। 'विश्वदर्शन'में आपने नेपाली महाकवि तथा तिब्बत के महापण्डित विषयक संस्मरण लिखे। 'धर्मयुग' में आपकी नैपाल तथा हिमालय यात्रा विषयक संस्मरण प्रकाशित हुए।

'नया समाज' में डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन ने चीन की दीवार, डाक्टर महादेव साहा ने डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या और 'कुसुमाकरजी ने 'उग्रजी' सम्बन्धी अपने संस्मरण लिखे। इसी पत्र में श्रीमती मणिकादेवी ने उस्ताद अलाउद्दीन खां के संस्मरण लिखे। श्री मोहन सिंह सेंगर ने मानवेंद्र राय के संस्मरण लिखे। पराड़करजी, नजरुल इस्लाम, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मातादीन शुक्ल, मसानी, कलाकार पृथ्वीराज, श्रद्धाराम फुलौरी, आचार्य शुक्ल जी सुधीन्द्र आदि पर भी इस पत्र में संस्मरण प्रकाशित हुए। इसी पत्र में सुप्रसिद्ध कवि श्री उदयशंकरजी भट्ट ने अपनी कविताओं के सर्जन की स्मृतियां अंकित की हैं।

'सरस्वती' में इस वर्ष अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध पत्रकार सन्त निहाल सिंह ने महामना मालवीय जी तथा श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित सम्बन्धी बड़े ही रोचक संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। इनमें तत्कालीन परिस्थितियों की मनोरम झांकी तो मिलती है, इन व्यक्तित्वों के सजीव स्वरूप भी हमारे सम्मुख चलचित्र की भांति उपस्थित होते हैं। इसी पत्रिका में बचनेश तथा मातादीन शुक्ल के संस्मरण भी प्रकाशित हुए हैं। 'आजकल' में श्री हरिभाऊ उपाध्याय के बापू सम्बन्धी संस्मरण भी इस चर्चा में उल्लेख्य हैं। इस वर्ष संस्मरणात्मक साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित साहित्य में हिन्दी के प्रसिद्ध और पुराने साहित्य सेवी श्री किशोरीदास जी वाजपेयी का 'साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण' श्री राजवल्लभ ओझा के 'बदलते दृश्य' श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' के 'साहित्यिकों के संस्मरण', राजधानी दिल्ली के कवि आदि ग्रंथ उल्लेख्य हैं। आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्रने साप्ताहिक 'आज' में 'लाला भगवानदीन' पर बड़ा कलात्मक और विश्लेषणात्मक संस्मरण लिखा। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस साहित्य की ओर पूर्वापेक्षा इस वर्ष अधिकाधिक ध्यान-साहित्यिकों और पाठकों दोनों का गया है। राष्ट्र-भाषा और हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए निश्चय ही यह शुभ लक्षण है।

रेखाचित्र

संस्मरण साहित्य के साथ-साथ और उसी से बहुत कुछ साम्य रखते हुए रेखाचित्र गत वर्ष के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में रहे हैं। 'समाज' में 'पंजाब के अमर कवि वारशाह' तथा श्री हर्षदेव मालवीय के 'सूरजप्रसाद चौरसिया' शीर्षक रेखा-

चित्र प्रकाशित हुए हैं। श्री हर्षदेव मालवीय ने बड़ी ही सजीव और व्यंग विनोद पूर्ण शैली द्वारा चौरसिया जी का रेखांकन किया है। मालवीय जी का 'मुरली बादशाह' शीर्षक रेखाचित्र भी बहुत सुन्दर बन पड़ा है। 'मुरली बादशाह' के रूप में कविता, चूरन बेचने वाले मस्त मौजी जीव का मार्मिक चित्रण हुआ है।

सुप्रसिद्ध श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब' के स्केचों का संग्रह 'उपहार' शीर्षक से इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। 'बेढब' जी के स्केच लेखन की अपनी विशिष्ट व्यंग-विनोदपूर्ण सजीव शैली है। तुलनात्मक और उदाहरणात्मक अभिव्यक्तियाँ इन स्केचों को और भी कलापूर्ण एवं रोचक बना देती हैं। 'पिगसन की डायरी' के बाद गौड़ जी के रेखाचित्र 'उपहार' में आये हैं। वयोवृद्ध साहित्यकार श्री माखनलाल जी चतुर्वेदी ने भी कुछ सुन्दर रेखाचित्र इस वर्ष प्रस्तुत किये। अवश्य ही इनमें गद्य-काव्य के तत्व भी सम्मिलित हो गये हैं। रेखांकन मनोभावों और वृत्तियों से सम्बद्ध है। 'एक ओर ईश्वर दूसरी ओर...?' शीर्षक रेखाचित्र का एक उदाहरण लीजिए—'रानी बन न पायी थी वह, पर नारीत्व उसमें फुंकार उठा था। अपने से कम शक्ति का वीर सहा न जाय और तारुण्य का तीर भी सहा न जाय!'

'ज्ञानोदय' में सुप्रसिद्ध कवि दिनकर की ये पंक्तियां भी एक रेखाचित्र की हैं—

'मेरे दिल के भीतर एक गुफा है और वह सूनी नहीं, आबाद है। शुरू से ही देखता आ रहा हूँ कि उसमें कोई रहता है और जो हूबहू मेरे समान है।' 'नई धारा' में सुप्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध साहित्यकार राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के संस्मरणात्मक रेखाचित्र उल्लेख्य हैं। इनमें व्यंजना और शैली दोनों की विशेषता दर्शनीय है। कुछ उदाहरण लीजिए—

× × ×यों भोग और योग, लोक और परलोक दोनों का ही अनुशीलन एक साथ चलता—कोई विरोध नहीं, कोई अवरोध नहीं।

× × × उन दिनों की काशी इस धरातल पर अमरावती की प्रतिद्वन्दी थी। जैसे—एक ओर रम्भा और मेनका की डोली, दूसरी ओर शुक्राचार्य और वृहस्पति की भी। लीजिए दोनों ही हाथ लड्डू!

रेखाचित्र की पुस्तकों के अतिरिक्त प्रायः सभी हिन्दी की मासिक पत्रिकाओं ने स्केच अथवा रेखाचित्र अपने अंकों में प्रकाशित किये—पुराने-प्रौढ़ और तरुण एवं नये लेखकों के भी।

पृष्ठ १६ के बाद

माडलों में था। मात्राएँ ठीक से लगायी जा सकें इस उद्देश्य से अक्षरों के लिये स्थान भी काफी दिया गया है। पिछले माडलों में मात्राओं के लिये ऊपर-नीचे जगह रखने के लिये, अक्षरों को कम स्थान दिया गया था, यह त्रुटि नये माडल में दूर हो गई है।

और भी संशोधन आवश्यक

वर्तमान माडलके दूर-मुद्रक अधिक संख्या में नहीं बनाये गये हैं,क्योंकि इसमें भी अभी बहुतेरी त्रुटियां हैं। अभी भी इसमें प्रयोग हो रहेहैं और कई प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है। सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि की-बोर्ड बढ़ाया जाय ताकि उसमें संशोधित नागरी लिपि के केवल ५३ वर्ण, आदि न आकर, मूल नागरी लिपि के सारे वर्ण, मात्राएं एवं संयुक्ताक्षर दिये जा सकें। इस प्रकार वह हिंदी-टाइपराइटरों के अनुकूल बनाया जाए और ऐसा हो कि तीव्र गति से संदेश भेजने में भी बाधा न पड़े।

इस लक्ष्यको पूरा करने के लिए, ५-यूनिट-कोड की जगह ६-यूनिट-कोड के आधार पर नया माडल तैयार करने का विचार है। इसके की-बोर्ड पर कुल ११८ वर्ण एवं मात्राएं बैठायी जा सकेंगी और इसकी गति भी अधिक तीव्र होगी। इस मशीन पर खर्च अधिक बैठेगा, पर वह ५-यूनिट-कोड वाले टेलीप्रिंटर से अधिक टिकाऊ होगी।

उज्ज्वल भविष्य

इसमें संदेह नहीं कि साक्षरता के विस्तार और देश के दूर से दूर भागों में हिंदी का प्रचार बढ़ने से, हिंदी दूर-मुद्रक की उपयोगिता भी बढ़ती जायगी। उसका भविष्य उज्ज्वल है। समय पा कर वह भारत की कोटि-कोटि जनता की जानकारी बढ़ाने और देश-विदेश के अभिनव संवादों को उन तक तेजी के साथ पहुंचाने का एक सर्वोपयोगी साधन सिद्ध होगा।

—:०:—

आलोचना तथा निबंध

[प्राणप्रिय]

यदि गंभीरता पूर्वक विचार किया जाय, तो हिन्दी में वास्तव में सभी दृष्टियों से आलोचना का युग चल रहा है । इस आलोचना का विकास शिक्षा व्यवस्था के साथ ही साथ बौद्धिक स्तर के विकास से विस्तरित होता जाता है । आलोचना की कृतियाँ जिस परिमाण में हिन्दी में निकल रही हैं उतनी कृतियाँ उपन्यास की ही निकल पा रही हैं । यद्यपि आलोचना का बाजार उपन्यास की अपेक्षा सदैव सीमित रहेगा तो भी प्रकाशन व्यवस्था से सम्बन्धित बड़े-बड़े व्यवसायियों में तथा बाजार में होने वाली बिक्री को ध्यान में रखकर यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि आलोचना का विकास दिनोत्तर होता जा रहा है और उपन्यास का विकास एक सीमा में संकुचित हो गया है । आलोचना साहित्य पर दृष्टि डालने पर निम्नलिखित प्रकार की रचनाएँ दीख पड़ेंगी :---

क: परीक्षा सम्बन्धी, **ख**: उच्च शिक्षा सम्बन्धी, **ग**: गंभीर संपादित भूमिका, युक्त ग्रन्थ, **घ**: सिद्धान्त सम्बन्धित ग्रन्थ—भाषा और साहित्य, **ङ**: विशेष कवियों तथा सिद्धान्तों से सम्बन्धित ग्रन्थ, **च**: विविध ।

परीक्षा सम्बन्धी पुस्तकों मे अधिकांश रचनाएँ एक अध्ययन के नाम से, दीप के नाम से, परिचय के नाम से, संयुक्त होकर आयी हैं । उसके साथ ही न्यूज प्रिंट पर सामान्यत: वह छपी हैं तथा विशेष रूप से हिन्दी की परीक्षाओं में हिन्दी के प्रश्न-पत्रों से उनका सीधा नाता या सम्बन्ध है । इन पुस्तकों ने ज्ञान की सीमा को संकुचित करने में सहायता पहुँचाई है और छात्रों में ऐसी बुरी आदत का प्रसार किया है जो किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए लज्जा की बात है । प्राय: हर हिन्दी के बड़े केन्द्रों से ऐसे प्रकाशन का आयोजन हुआ है जिनमें दिल्ली, आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, पटना, कानपुर और कलकत्ता ने बहुत बड़ा योग दिया है । हिन्दी के इन केन्द्रों से ऐसे अस्वस्थ साहित्य का उदय विकार की जो भाव-भूमि तैयार कर रहा है, वह विषाक्त है तथा उन पुस्तकों का उल्लेख न करना ही अधिक समीचीन होगा ।

उच्च शिक्षा को ध्यान में रखकर अनेक ग्रन्थों का सम्पादन इधर किया गया है इन ग्रन्थों में उन लोगों का हाथ अधिक जो पदों पर वर्तमान है । इन संग्रहों में कोई अपनी निजी विशेषता नहीं है । पूर्व के संग्रहों से भी वे गये गुजरे हैं सभी दृष्टियों से । किन्तु इनका प्रभाव केवल इतना ही भर है कि इनसे सहज ही जाना जा सकता है कि शिक्षा के किस क्षेत्र में किस लेखक का प्रभाव शक्ति की दृष्टि से है ।

इस वर्ष अनेक ऐसे ग्रन्थ निकले हैं जिनके सम्पादन में अत्यधिक परिश्रम किया गया है तथा उसकी विशिष्ट भूमिका लिखकर नई मान्यताएँ संस्थापित की गयी हैं । इन संस्थापित मान्यताओं के मूल में अथक परिश्रम स्पष्ट ही दीख पड़ता है । सामान्य संपादित ग्रन्थों में जो कि पहले के किये गये प्रयत्नों के आधार पर जीवन पाये हैं, जायसी ग्रन्थावली, विद्यापति की पदावली, विद्यापति ग्रन्थावली, आदि है । किन्तु इन ग्रन्थों के अतिरिक्त जिन ग्रन्थों में पर्याप्त परिश्रम किया गया है, उनके सम्बन्ध में विचार करना ही प्रगति की दृष्टि से अधिक उपादेय होगा ।

पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र हिन्दी के जाने-माने पंडितों में एक हैं । उनकी कृतियाँ श्रम, तथा साधना की दृष्टि से अपने गौरव का स्वतंत्र आदर्श रखती हैं । इस वर्ष 'भूषण' नामक उनका ग्रन्थ प्रकाश में आया है । यह अनुसंधानात्मक ग्रन्थ है तथा भूषण के सम्बन्ध में आजतक हिन्दी जगत का जितना ज्ञान था उसे बढ़ाने में सर्वथा समर्थ हैं । भूषण का वास्तविक पता तो पंडित जी ने हिन्दी जगत को इस कृति द्वारा दिया ही है, उन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री दे, हिन्दी के भंडार को बढ़ाया भी है ।

श्री राम शर्मा हिन्दी की सेवा करने वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक हैं । हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद ने उनके ग्रन्थ दक्खिनी का पद्य और गद्य जून सन् ५४ में प्रकाशित किया है । प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के इतिहास लेखकों के लिए जहाँ समस्या बन गयी है वहीं वह इतिहास के लिए बहुमूल्य सामग्रियों का संचित भंडार भी देती है । निवेदन में लेखक ने ३३ पेज की विद्वता पूर्ण भूमिका लिखी है, तथा काफी प्रयत्न भी साधना पूर्वक इसके सम्पादन में उसने किया है । कवियों और लेखकों की रचनाएँ

उसने दी हैं, उनका संक्षिप्त परिचय भी दिया है तथा परिशिष्ट में व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ भी दी हैं। यह कृति अपने स्थान पर अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ष भर की कृतियों में गिनी जायगी।

चन्द्रसखी और उनका काव्य पद्मावती 'शबनम', का बहुत बड़ा प्रयत्न है। इतने अधिक पद आज तक संग्रहीत होकर हिन्दी जगत के सम्मुख वृन्दावन तथा राजस्थान की इस लोकप्रिय जन कवियित्री के इसके पूर्व कभी नहीं आये थे। पुस्तक में साठ पेज की अच्छी खासी भूमिका भी है। इस दृष्टि से पुस्तक हिन्दी को उपादेय सामग्री देती है। सभा द्वारा प्रकाशित खोज रिपोर्ट में अनेक कवियों का प्राप्त परिचय तथा उनकी रचनाओं के उदाहरण हैं। यह अनुसंधान करने वालों के लिए अत्यन्त महत्व की वस्तु है। बेलि किशन रुक्मीणि के दो संस्करण दो स्थानों से संपादित होकर निकले हैं जिसमें विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर का संस्करण अपनी विशिष्टता के कारण अत्यधिक मूल्यवान है।

पं० चन्द्रबली पाण्डेय हिन्दी के विद्वान साधक हैं। नागरी प्रचारिणी सभा ने इस वर्ष 'तुलसी की जीवन भूमि' नाम से उनकी रचना का प्रकाशन किया है। तुलसी के जीवन पर अन्तरशाक्षों को आधार मानकर महत्वपूर्ण प्रकाश इस कृति में डाला गया है तथा तुलसीदास के जीवन के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य के आधार पर नई मान्यताएँ संस्थापित की गयी हैं। विचारों के अखाड़े में शक्ति के प्रदर्शन करने वाले आचार्यों में पाण्डेय जी जैसा कोई भी नहीं है। लेकिन यह विराट पहलवान जब कहीं-कहीं सीकिया पहलवानों को कांख में दबाने के लिए सारी शक्ति लगाते हुए दीखता है तो उसकी शक्ति के अपव्यय से प्रत्येक हिन्दी प्रेमी का हृदय ममोस उठता है। साथ ही पाण्डेय जी का काम इतना ऊँचा होता है कि उस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए, उनके व्यंगों को समझने का अभ्यास भी पाठक को करना पड़ता है। यह सब होते हुए भी यह कृति मूल्यवान है।

सिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थों का प्रणयन इस वर्ष बड़े व्यापक पैमाने पर हुआ जिनम अनेक की ऊँचाई अत्यधिक ऊपर उठी हुई है तथा वे हिन्दी के गौरव ग्रन्थ समय और काल की सीमा से अनेक अर्थों में आगे हैं।

'समीक्षा शास्त्र' आचार्य प० सीताराम चतुर्वेदी द्वारा रचित अद्भुत ग्रन्थ है। समीक्षा से सम्बन्धित सभी विषय उसमें दिये गये हैं। इतना विद्वता पूर्ण विशाल ग्रन्थ साहित्य-सिद्धान्तों-मान्यताओं तथा उसके विभिन्न अंगों को समझाने वाला हिन्दी में दूसरा नहीं है।

डा० प्रेमनारायण शुक्ल हिन्दी साहित्य में विविध वाद पर अनुसंधान कार्य करते रहे। उन्हें इसके लिए पी० एच० डी० की उपाधि भी मिली। उनकी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य में विविध वाद' का प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशनों में से एक है। विद्वान लेखक ने लगभग ५२५ पृष्ठों में मानव प्रवृत्तियों से लेकर साहित्य में विविध वाद से लोक कल्याण तक की व्याख्या विद्वतापूर्ण ढंग से की है।

डा० भगवतस्वरूप मिश्र द्वारा लिखी पुस्तक 'हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास' अपने विषय की सर्वाधिक महत्व-पूर्ण कृति है। हिन्दी की आलोचना की आदि काल से आज तक इसने प्रमाणिक व्याख्या विद्वता पूर्ण ढंग से लेखक ने की है।

श्री प्रो० राजाराम रस्तोगी की पुस्तक 'हिन्दी काव्य की अन्तश्चेतना' हिन्दी साहित्य के विविध वादों तथा अंगों पर अच्छा प्रकाश डालती है।

केदारनाथ शर्मा सारस्वत ने 'काव्य मीमांसा' का हिन्दी अनुवाद भी इसी वर्ष प्रस्तुत किया जो बिहार राष्ट्र भाषा परिषद से छपा है। सारस्वत जी जैसे विद्वान द्वारा यह कार्य सम्पन्न होकर संस्कृत न जानने वाले हिन्दी के पाठकों के लिए भी काव्य मीमांसा की उपलब्धि बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करती है।

सूर के सम्बन्ध में दो मूल्यवान कृतियाँ इस वर्ष हिन्दी जगत के सम्मुख आयीं। एक तो है डा० मुंशीराम शर्मा, एम० ए०, पी० एच० डी० और दूसरे डा० हरिवंश लाल शर्मा की। दोनों पी० एच० डी० की थीसिसें हैं तथा दोनों के नाम क्रमशः 'भारतीय साधना और सूर साहित्य' तथा 'सूर और उनका साहित्य'। पहली पुस्तक सूर साहित्य में व्याप्त साधना पर व्यापक प्रकाश डालती है और दूसरी पुस्तक उनके साहित्य पर। सूर सम्बन्धी कृतियों में इनका भी अपना गौरव पूर्ण स्थान होगा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा पी० एच० डी० की उपाधि से विभूषित प्रबन्ध 'दि इनफ्लुएन्स आफ इंगलिश आन मार्डन हिन्दी पोइट्री एण्ड क्रिटिसिजम' के पोएट्री खंड का अनुवाद 'हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव' नाम से प्रकाशित हुआ है। अध्ययन के लिए इस ३०० पृष्ठ की पुस्तक में बहुत सामग्री मिलती है तथा अपने ढंग की यह अकेली रचना हिन्दी में है। पर अनेक स्थानों पर विचारों में मतैक्य स्थापित हिन्दी का पाठक वर्मा जी से नहीं कर पायेगा।

यदि डा० एस० पी० खत्री की पुस्तक 'आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त' १९५४ की रचना है, तो यह कहना पड़ेगा कि आलोचना के सिद्धान्तों की विवेचना करने वाली यह भी एक मूल्यवान कृति १९५४ की देन है।

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या की कृति 'भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी' का अनुवाद अगस्त, ५४ में प्रकाशित हुआ है। यद्यपि यह रचना अनुदित है, तो भी इसकी महत्ता हिन्दी के लिए बहुत बड़ी है ।

डा० धीरेन्द्र वर्मा के व्रज भाषा सम्बन्धी प्रबन्ध का अनुवाद भी इस वर्ष प्रकाशित हुआ। वह उनकी कृति अत्यन्त मूल्यवान है, जिसे अब हिन्दी के माध्यम से सहज ही पाठक पा सकेंगा ।

डा० रामविलास शर्मा ने प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ नामक अच्छी पुस्तक हिन्दी को दी है, यद्यपि अनेक स्थानों पर उनका चौहान के विचारों से उलझना अच्छा नहीं; फिर भी जिस निर्भीकता के साथ उन्होंने अपने विचार प्रकट किये हैं वे निश्चय ही उन विचारों के आलोचकों के स्पष्ट उदाहरण हैं, जो राजनीति और साहित्य में अंतर नहीं मानते। उदाहरण के रूप मेंदे खा जा सकता है।

"दूसरे महायुद्ध के पहले जब कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बने थे, तब से 'उत्तरा' के लिखने तक जनता की चेतना और उसके साथ हिन्दी जनता की चेतना में काफी परिवर्तन हो गया है। अन्तर्चेतनावादी पंतजी से सामाजिक चेतना के ये परिवर्तन छिपे नहीं हैं। लेकिन वे इस नयी सामाजिक चेतना से सहानुभूति नहीं रखते, न बौद्धिक न हार्दिक। वह अपने पुराने समन्वयवाद को नया जामा पहना कर फिर हिन्दी पाठकों से कहते हैं, मैं प्रतिगामी नहीं हूँ। लेकिन मार्क्सवाद का कौन-सा विरोधी अपने को प्रतिगामी मानता है ? उनका व्यवहार उनकी प्रतिगामिता प्रकट कर देता है। पंत जी यदि अपने अन्तर्चेतनावाद से लोगों को बहकाना चाहते हैं, तो कुछ दिन कोशिश करके और देख लें।"

डा० दशरथ ओझा का प्रबन्ध हिन्दी नाटक उद्भव और विकास इस वर्ष की प्रकाशित कृतियों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें इस बात की मान्यता स्थापित की गयी है कि हिन्दी नाटकों का संबंध संस्कृत से नहीं है। वह तो अपभ्रंश के रास से संबंधित है और वे जनरुचि के प्रभाव के परिणाम हैं। हिन्दी-नाटकों का विकास अभी तक १७वीं शताब्दी से ही माना जाता था, उन्होंने इसका संबंध १३वीं शताब्दी से जोड़कर उसका क्रमिक विकास दिखाया है। यह मान्यता भले ही विचार की एकता विद्वानों में न स्थापित होने दे; किन्तु इस प्रबन्ध ने एक समस्या हिन्दी के सभी पाठकों के सम्मुख उपस्थित की है। अन्य देशी भाषाओं में उपलब्ध सामग्री के आधार पर लेखक ने यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि अन्तर्भावनों का विकास सर्वत्र एक-सा ही हुआ। यह सब महत्त्वपूर्णबातें होते हुए भी जहाँ आधुनिक व्याख्या के संबंध में लेखक सजग हुआ है,वहाँ फिसल गया है। प्रसाद के नाटकों के संबंध में जो सामग्री हिन्दी में उपलब्ध है, वह उसे आगे नहीं बढ़ा सका है यद्यपि इस बात का उसने आग्रह किया कि प्रसाद के नाटकों का उनके जीवन से क्या साम्य है यह दिखाने का उन्होंने प्रयत्न किया है।

डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी का अनुसंधान पूर्ण ग्रन्थ 'सन्त कवि दरिया' सन्त साहित्य में रुचि रखनेवाले विद्वानों के लिए एक महत्त्वपूर्ण देन है। वी० भी० कोलते ने मराठी संतों के सामाजिक कार्यों पर अच्छा आख्यानात्मक ग्रन्थ लिखा है। तुलसी-साहित्य पर डि०लिट्० की उपाधि प्राप्त करनेवाले लेखक डा० राजपति दीक्षित की नयी पुस्तक 'संत तुलसी दास और उनके संदेश' भी इस वर्ष प्रकाशित हुई है, जो उनके पूर्व कृति की छाया मात्र है।

इस वर्ष विभिन्न प्रान्तीय बोलियों के साहित्य के संबंध में भी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संबंध में परिचयात्मक सामग्री आयी। लोक साहित्य के संबंध में जो ग्रन्थ निकले हैं, उनमें श्याम परमार द्वारा रचित भारतीय लोक साहित्य अच्छी लघु परिचयात्मक कृति है।

हनुमच्छास्त्री अयाचित का तेलगू और उसका साहित्य, श्याम परमार का मालवीय और उसका साहित्य अच्छी परिचयात्मक रचनाएँ हैं।

पं० उदयनारायण तिवारी ने भोजपुरी भाषा और साहित्य के संबंध में विस्तृत ग्रन्थ लिखा है, जिसका प्रकाशन राष्ट्र भाषा परिषद से हुआ है। यह ग्रन्थ भी वर्ष के प्रकाशनों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित द्वारा रचित 'अवधी और उसका साहित्य' अवधी में रचे गये साहित्य के संबंध में अत्यन्त विशिष्ट कृति है।

डा० रामविलास शर्मा ने पूर्वोक्त दृष्टि से ही भाषा साहित्य और संस्कृति की व्याख्या अपने इसी नामके ग्रन्थ में की है। यह पुस्तक भी मार्क्सवादी प्रगतिशीलों के लिए पठनीय है।

रामचन्द्र शुक्ल पर कौल ने, महादेवी पर श्रीचन्द नागर ने परिचयात्मक पुस्तकें लिखीं। छन्द शास्त्र पर भी पुस्तकें लिखी गयीं।

ये तो महत्वपूर्ण कुछ ग्रन्थों की बातें हुईं, किन्तु यदि मात्रा और ज्ञान के गुण के हिसाब से देखा जाय तो जितनी रचनाएँ इस वर्ष हुई उतनी गत वर्षों में नहीं। हां, एक बात निश्चय ही खटकती है वह यह कि जो विचारों का संतुलन, भावनाओं की पकड़ तथा अभिव्यक्ति की क्षमता शुक्लजी में थी, वैसी महती शक्तिवाला दूसरा व्यक्तित्व नहीं दिखलाई पड़ा। जिस भांति ज्ञान बढ़ रहा है, विचार बढ़ रहा है,विचारों की अभिव्यक्ति बढ़ रही है और आलोचना में जितनी स्पष्ट-वादिता आ रही है यदि यह दिनोत्तर इसी प्रकार विकसित होती रही, तो इन रचनाकारों के ढेर में भी रामचन्द्र शुक्ल एक न एक दिन अवतरित होंगे ऐसी आशा और विश्वास की भावना से अनुप्राणित इन पंक्तियों का लेखक है, इस वर्ष के अनेक ग्रंथों को पढ़कर।

हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ निबन्ध लिखे जाते हैं,जो साहित्य के विभिन्न विषयों पर होते हैं। अनुसंधानात्मक निबन्धों से लेकर सामान्य विषयों तक निबन्ध लिखे गये। जिन लोगों के निबन्ध इस वर्ष प्रकाश में आये तथा जिन निबन्धों का मूल्य साहित्य की दृष्टि से मूल्यवान है, उनमें नन्ददुलारे वाजपेयी, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, जगन्नाथप्रसाद शर्मा, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, ललिताप्रसाद शुकुल, रायकृष्णदास, अगरचन्द नहाटा, शिवपूजन सहाय,नलिन विलोचन शर्मा, रामशंकर भट्टाचार्य, जगदीश पाण्डेय, सांवलिया बिहारीलाल वर्मा, डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, डा० रामकुमार वर्मा, संत निहाल सिंह, डा० रामविलास शर्मा, भगवतशरण उपाध्याय, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, दिवाकर प्रसाद विद्यार्थी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, इलाचन्द जोशी, चन्द्रबली पांडेय, रामेश्वरनाथ तिवारी, सूर्यनारायण व्यास, रतनलाल परमार, डा० देवराज, देवराज उपाध्याय, राहुल सांस्कृत्यायन, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, डा० शांतिकुमार नानूराम व्यास, रामचरण महेन्द्र, आनन्दनारायण शर्मा, कालीदास कपूर, रामनाथ सुमन, विनोबा भावे, महात्मा भगवानदीन, डा० शी० रा० रंगनाथन, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल प्रभाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, डा० विश्वनाथप्रसाद, रामदयाल पांडेय, महावीर प्रसाद अग्रवाल, दशरथ तिवारी, वृन्दावन लाल वर्मा, धीरेन्द्र वर्मा, काका कालेलकर, सतीशचन्द्र काला, मोहनलाल नेहरू, भीखनलाल आत्रेय, शिवदान सिंह चौहान, लालजीराम शुक्ल, बलदेव उपाध्याय, विनयेन्द्र भट्टाचार्य, भगीरथ मिश्र, अज्ञेय, नगेन्द्र, किशोरीदास वाजपेयी, डा० मुनीकान्त सागर, श्री श्याम परमार, प्रो० रंजन, डा० टीकम सिंह तोमर, डा० सूर्यकान्त, श्री गणेशवासुदेव मावलंकर, बनारसीदास चतुर्वेदी, आनन्दकुमार विद्यालंकार, रतनलाल वंसल, रामधारी सिंह दिनकर, मोहन सिंह सेंगर, डा० सम्पूर्णानन्द, करुणापति त्रिपाठी, पं० कमलापति त्रिपाठी, महादेवी वर्मा, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, हरिभाऊ उपाध्याय, हर्षदेव मालवीय, स्वामी सत्यदेव, डा० रामअवध द्विवेदी, डा० राजबली पाण्डेय, अजीतकुमार, विनयमोहन शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, रामरतन भटनागर, विजयशंकर मल्ल, विश्वम्भर मानव, बच्चन सिंह, डा० लक्ष्मीनारायण लाल, डा० देवराज, डा० जगदीश गुप्त, नरोत्तमनागर, मोतीसिंह, शिवनाथ, हरदेव बाहरी, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, त्रिलोचन शास्त्री, नामवर सिंह, ठाकुरप्रसाद सिंह, शान्तिप्रिय द्विवेदी, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, यशपाल, यशदेवशल्य, अर्जुन चौबे काश्यप, संगमलाल पाण्डेय, आर० एन० कौल, राजेन्द्रप्रसाद, आदि आदि प्रमुख लेखक थे। प्रचारात्मक से लेकर गंभीर अध्ययन वाले निबन्ध लोगों ने लिखे। अखिल भारतीय आकाशवाणी से भी समय-समय पर अच्छे निबन्ध प्रसारित किये गये। इस वर्ष साहित्य की मान्यताओं पर काफी वाद विवाद चलता रहा। हिन्दी साहित्य के आदिकाल को लेकर लिखे गये पं० चन्द्रबली पाण्डेय के निबन्ध विशेष चरचा के विषय बने। साहित्य के विभिन्न अंगों पर अनुसंधानात्मक लेख आये तथा परीक्षोपयोगी लेख भी। संस्मरण साहित्य की इस वर्ष गत वर्षों की अपेक्षा बढ़ोत्तरी रही। अलग-अलग कवियों पर भी लेख आये। शोध सम्बन्धी कुछ गम्भीर लेख भी इस वर्ष लिखे गये। यद्यपि पुस्तकाकार निबन्धों का प्रकाशन अत्यन्त सीमित मात्रा में हुआ, फिर भी पत्र-पत्रिकाओं में छपे निबन्धों को देखकर निबन्ध-साहित्य के विभिन्न अंगों की सम्पन्नता का भास हो जाता है। इस वर्ष स्वस्थ व्यंग निबन्धों के भी दर्शन हिन्दी में हुए। बेढब' जी का 'उपहार' आत्म-व्यंजक निबन्धों का स्वस्थ संग्रह है। [पृष्ठ ३१ देखें]

कहानी

यद्यपि हिन्दी में कहानी की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकल रही हैं किन्तु कहानियों के संग्रह बहुत ही कम प्रकाशित हुए। यह इस तथ्य का प्रतीक है कि कहानियों का बाजार हिन्दी में कम होता जा रहा है। इस कमी के लिए उत्तरदायित्व कहानियों का एक सीमा तक माना जाता है। पत्र पत्रिकाओं में जो कहानियाँ व्यापक प्रकाश पा रही हैं वह या तो कहानीकारों के नाम के कारण या अपने हलकेपन के कारण। यह हलकापन कथावस्तु के एकरूपता के कारण भी है। वही प्रेम और रोमांस बार-बार हिन्दी कहानियों में इतना आया कि पाठक का जी उससे ऊब गया है। फिर भी सन् १९५४ में जितनी कहानियाँ लिखी गयी उनकी छान-बीन की जाय तो उनका धरातल ऊपर उठा है, भले ही उनका संग्रह न निकला हो, भले ही बाजार में उनकी खपत न हो। पत्र पत्रिकाओं में जिन कहानीकारों की रचनाएँ शोभा पाती रहीं उनमें यशपाल, कृष्णचन्द्र, विष्णुप्रभाकर, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, मन्मथनाथ गुप्त, बेढब, देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त, बलदेवप्रसाद मिश्र, रावी, रुद्र, शकुन्तला, आनन्द-प्रकाश जैन, अशोक, हीरादेवी चतुर्वेदी, विपुला देवी, पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, मोहन सिंह सेंगर, विनायक राव विद्यालंकार, निर्गुण, द्विजेन्द्र एम०ए० राजेन्द्र, बेचन, रमेश जोशी, राजगोपालाचारी, ख्वाजा अहमद अब्बास, मारकण्डेय, ज्योतिन्द्रनाथ, कमल जोशी, भैरवलाल गुप्त, नन्दकुमार पाठक, इन्दिरा नूपुर, रामेश्वरनाथ तिवारी, राहुल, बटुक देव मिश्र, अश्क, भालचन्द ओझा, उमाकांत वर्मा, नरेन्द्र नारायण लाल, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, धर्मवीर भारती, छबिनाथ पांडेय, हर्षनाथ, गिरीशचन्द्र चौधरी, शम्भूनाथ बलियासे मुकुल, मुजीब रिजवी, मोहनलाल गुप्त, ओंकारनाथ, मुल्कराज आनन्द, निर्मल वर्मा, जाकिर, जितेन्द्र, स्वरूप कुमारी, बख्शी, अमृतलाल नागर, दिवाकर, राजेन्द्र यादव, आदि लेखकों की रचनाएँ समाहृत होती रहीं। इस वर्ष अनेक कहानी संग्रह भी निकले जिनमें कृष्णचन्द्र का काला सूरज, यूकलिस्टस की डाली, लोगों को अधिक पसन्द आया। राहुल सांकृत्यायनकी बहुरंगी मधुपुरी सुन्दर बन पड़ी है। राजकुमारकी ग्रास-निरास नामक रचनाका प्रकाशन इसी वर्ष हुआ। निर्गुणके तीन कहानी संग्रह प्यारके भूखे, टूटे सपने और जिन्दगी इस वर्षके प्रकाशित संग्रहों में सर्वोत्तम लगे। श्री मोहन सिंह सेंगर का मुर्देकी मौत अच्छी रचना है। मुजीब रिजवीके गंगा से गोमती तक की इस वर्ष काफी चर्चा रही। विनायकराव विद्यालंकार का चाबुक दक्षिण से प्रकाशित रचनाओं में उत्तम है। हरिशंकर उपाध्याय द्वारा रचित राह के रोड़े महत्वपूर्ण रचना है। शौकत थानवी और राजगोपालाचारी की रचनाएँ क्रमशः हँसती बोलती और कुब्जा सुन्दरी हिन्दी में आयी। संतोष गार्गी ने नीली चिनगारियों का अनुवाद किया। महान कथाकार उग्र की रचना कलाकार का पुरस्कार इस वर्ष प्रकाशित हुई। मारकन्डे का पानफूल, ललित कुमार नटवर का दांवपेच अच्छी रचना है। श्री ज्योतिन्द्रनाथकी प्रेतकी छाया भी अच्छी है। सीधे साधे ढंग से मर्मस्पर्शी कहानी लिखने वाले कमल जोशी की रचना चार के चार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्री रावी का जो सिद्धहस्त लघु कथाकार है 'पहला कहानीकार' राजेन्द्र यादव का खेल-खिलौने, आनन्द प्रसाद का अतीत के कम्पन इस वर्ष प्रकाशित कहानी संग्रहों में महत्व के हैं। आधुनिक भारतीय जीवनको आधार बनाकर लिखी गयी विष्णुप्रभाकरकी कहानियाँ संघर्ष के बाद नामके संग्रह में प्रकाशित हुई। मस्त जी की नयी रचना हवा का रूख इस वर्ष प्रकाशित हुई। हास्यरस की कहानियों के मँजे लेखक श्री मोहनलाल गुप्त, भैयाजी बनारसी की मखमली जूती इस वर्ष प्रकाशित हुई। इसमें व्यंग एवं हास्य की सफल सृष्टि करनेवाली प्रौढ़ सामाजिक कहानियाँ हैं। इन सभी दृष्टियों से, वर्ष भर में कहानी पत्रों के जो विशेषांक निकले तथा अन्य पत्रों के जो कहानी विशेषांक निकले वे इस बात के प्रमाण हैं कि जनरुचि कहानियों के प्रति है। जनता अब स्तर कीचीजें चाहती हैं बाजारू चीजें नहीं। इसका ध्यान वर्तमान कहानीकार रख कर चलने के लिए तैयार दीख रहे हैं यह प्रसन्नता की बात है।

'प्रचारक' का सम्पादन बड़ा अच्छा होता है। हिन्दी वालों के लिए यह पत्र बहुत उपयोगी है।

'हिन्दी-प्रचारक' बड़ा सुन्दर और सफल मासिक है। उसकी एक-एक पंक्ति पढ़ने लायक होती है। उसकी नीति निर्भय और निष्पक्ष है। यह एक बड़ी विशेषता है। इस पत्र की अभिवृद्धि और उन्नति के लिये मेरी शुभ कामनाएँ।

हरिशंकर शर्म्मा,
लोहामंडी, आगरा।

नाटक तथा एकांकी

हिन्दी साहित्य की वस्तु स्थिति वाले प्रसंग में यह पूर्व ही स्पष्ट किया जा चुका है कि रंग मंच का अभाव नाटकों के लिए बाधक हो रहा है। एकांकी इसलिए अधिक लिखे जा रहे हैं कि उनका अभिनय विभिन्न स्थितियों में संभव दीख पड़ता है। एकांकी लिखते समय इस तथ्य का भी अब ध्यान रक्खा जा रहा है कि उसमें नारी पात्र आयें ही न, या आयें तो कम से कम आयें। साथ ही नाटकों का संकलन और संपादन अथवा लेखन पाठ्य-पुस्तक के लिए ही रह गया है। ऐसी परिस्थिति में तब तक सशक्त नाट्य साहित्य का विकास नहीं हो सकता, जब तक कि रंग मंच की ओर ध्यान न दिया जाय। यही स्थिति गीत-नाट्यों की भी है। हिन्दी में जितने कम गीत नाट्य हैं, उतने संभवतः अन्य भाषाओं में न मिलेंगे। कुछ ऐसे लेखक निश्चय ही साहित्य-साधना की दृष्टि से निरन्तर लिखते चले जा रहे हैं, जिनको नाटक से ममता है, या जिनका रेडियो से सम्पर्क है। हिन्दी के जाने माने नाटककारों में सर्व प्रथम पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाम आता है। पं० लक्ष्मीनारायण की ख्याति हिन्दी में इस बात को लेकर है कि उन्होंने बुद्धि प्रधान समस्या नाटकों का प्रवर्तन किया। उनके नाट्य-साहित्य का अध्ययन हिन्दी में नहीं किया गया। यदि उनके समस्त प्रकाशित नाटकों को पढ़ा जाय, तो वे केवल इतने ही तक सीमित न मिलेंगे। उन्होंने भारतीय नाट्य साहित्य का गंभीर अध्ययन किया है तथा इधर इतिहास और पुराण को बुद्धि की कसौटी पर कस कर कर्म प्रधान नाटकों की सृष्टि कर रहे हैं। उन्होंने कुछ एकांकियों का प्रणयन भी इन्हीं संकल्पों को लेकर किया है, वितस्ता की लहरें, चक्रव्यूह और मनु तथा अन्य एकांकी इसके प्रमाण हैं। वितस्ता की लहरों का आधार इतिहास है, तथा चक्रव्यूह का आधार पौराणिक है; किन्तु इसमें चरित्र शुद्ध मानवीय रूप में अपने राग विराग से युक्त होकर आये हैं। इस नाटक में वीर और रौद्र रस का परिपाक हुआ है। इसमें कल्पना भी लेखक ने की है और वह कल्पना है द्रौपदी के पांचों पुत्रों के जन्म के संबंध में, और स्थान के संबंध में। इसमें संवाद, व्यापार, परिस्थिति और घटना का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण है तथा ८ वर्ष पहले लिखे नारद की वीणा की नाट्य कला का यह विकसित रूप है। इसमें मिश्र जी ने गीत लिखा है। यद्यपि पांडव कुल का अभिमन्यु और कौरव कुल का लक्ष्मण जिनसे पांडव तथा कौरव कुल की वंश परम्परा चलने वाली थी निधन के घाट उतरते हैं तो भी उत्तरा का गर्भस्थ शिशु आशा और मंगल का संदेश बन जाता है। वितस्ता की लहरों में गरुड़ ध्वज तथा वत्सराज की भांति इतिहास का आधार है। मनु तथा अन्य एकांकी में मिश्र जी द्वारा लिख गये एकांकियों का संग्रह है। उनकी इन कृतियों को देखकर उनकी कला की दिनोत्तर विकासवादी परम्परा स्पष्ट सामने आती है। हरिकृष्ण प्रेमी जगन्नाथ मिलिन्द, उदयशंकर भट्ट, रामकुमार वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा, करतार सिंह दुग्गल, रघुवीर शरण मित्र, जनार्दन मुक्तिदूत, विनोद, आदि ने अच्छे एकांकी लिखे हैं। उदय शंकर भट्ट का अस्वत्थामा शीर्षक गीति नाट्य तथा क्रान्तिकारी नाटक अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। नाटक लिखने में माहिर श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने 'धोसले' नामक सुन्दर एकांकी परिवार नियोजन के संबंध में लिखा है। प्रभाकर माचवे का विन्ध्याचल भी अच्छा है। उपेन्द्रनाथ अश्क का अलग-अलग रास्ते अभी-अभी प्रकाशित हुआ है। इसमें दो सगी बहनों की कहानी ली गयी है और वह कहानी संक्रान्ति काल के भारतीय समाज से ली गयी है। चित्र में मनोवैज्ञानिक स्थिति उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया है, तथा इसका अभिनय इलाहाबाद के पैलेस थियेटर में हो चुका है। अभिनय तथा अश्क के नाट्य कला की दृष्टि से उनका यह सबसे प्रौढ़ नाटक है। इस पुस्तक के अन्त में नाटकों के अभिनय के संबंध में रंग मंच संबंधी दो व्यावहारिक शीर्षक से दिया गया परिशिष्ट भी अत्यन्त महत्त्व पूर्ण हैं। प्रायः पत्र पत्रिकाओं में एकांकी नाटक छपते रहे हैं। इन एकांकियों में करतार सिंह दुग्गल का 'जूठे टुकड़े' भी ध्यान आकृष्ट कर लेता है। बेढब जी ने इस वर्ष भी प्रहसन लिखा। 'एक ही राह पर' शीर्षक एकांकी श्रीमती शकुन्तला सेन का अच्छा बन पड़ा। विष्णुप्रभाकर ने भी एकांकी का निर्माण किया। पैसा लड़की और जनसेवा का कानपुर के तरुण नाटककार श्री विनोद रस्तोगी का समस्या मूलक एकांकी अच्छा बन पड़ा है। लक्ष्मण परित्याग नामक एकांकी श्री गोविन्द शर्मा का पठनीय है। देवराज दिनेश का ध्वनि नाट्य, राम राज्य आया गगन पर नव विहान छाया, काफी अच्छा बन पड़ा है। 'सास मां' नारी जीवन से संबंधित, श्रीमती उर्मिल सब्बरवाल का अच्छा नाटक है।

जो एकांकी प्रकाश पाते रहे, उनमें अधिकांश की भाव-भूमि सामाजिक है। वह मध्यम श्रेणी के लोगों का है। जीवन की वर्तमान परिस्थितियों को संचेतित करने वाले ये नाटक यदि रंग मंच पर उतरें, तो निश्चय ही समाज का उपकार होगा। आवश्यकता सबसे बड़ी इस बात की है कि रंग मंचों के निर्माण के लिए व्यापक प्रयत्न किये जाँय।

कविता

हिन्दी काव्य को अपनी सशक्त वाणी से रसमय करने के लिए हिन्दी के प्रायः सभी प्रौढ़ कवि अवनरत पत्र पत्रिकाओं में अपना दर्शन देते रहे हैं। जिनमें से अनेक के संग्रह भी प्रकाश में आये। निराला जी का 'गीत गुंज' गत वर्ष का प्रकाशन है वह उनकी साधना का सबल आस्थामय स्वर है। उसके अनेक गीत हिन्दी के उच्च कोटि के गीतों में गिने जायेंगे और उनकी महत्ता सदैव स्थायी बनी रहेगी। उदाहरण के रूप में यह बसन्त-गीत लीजिए।

वरद हुई शारदा जी हमारी।
पहनी वसन्त की माला संवारी।
लोक विशोक हुए, आंखों से,
उभड़े गगन लाख पाखों से,
कोयले मंजरी की शाखों से,
गाई सुमंगल होली तुम्हारी।
नाचे मयूर प्रात के फूटे,
पात के मेघ तले सुख लूटे,
कामिनी के मन मूठ से छूटे,
मिलने खिलने को ललकी निवारी।

पं० सुमित्रानन्दन पंत जी के अन्तश्चेतना पर बुढ़ौती का असर अब स्पष्ट दीखने लगा है और वे अपनी शब्द शक्ति द्वारा काव्य चेतना को जीवित किये हुए हैं। उनकी 'चेतना' शीर्षक कविता का एक अंश यहां दिया जा रहा है।

जलते तारों-सी टूट रहीं
अब अमर प्रेरणाएँ भास्वर,
स्वप्नों की गुंजित कलिकाएँ
खिल पड़तीं मानस में निःस्वर।
तुम रहम से द्वार से मुझे कहां
गीते, ले जाती हो गोपन,
शोभा में जाता डूब हृदय
पा स्पर्श तुम्हारा सुर-चेतन।

बच्चन का स्वर भी इस वर्ष पहले ही जैसा रहा है। पचासा पार करने पर बेनीपुरी जी ने भी बड़े जोश-खरोश के साथ पचासवां पार किया पर शीर्षक कविता लिखी। अब वह किस स्थिति में हैं इन पंक्तियों से देखा जा सकता है।

अब जोश पर होश की लगाम है,
पैरों में गति के साथ यति भी है,
हाथों में बल के साथ अनुभव भी है,
आंखों में ज्योति के साथ सूझ भी है,
खून में उबाल के साथ संभाल भी है,
अब एक की जगह दो दो मददगार हैं तुम्हारे।
अतः बढ़े चलो,
झींखों मत कि मैंने पचासवां पार किया ?

उदयशंकर भट्ट ने भी कुछ अच्छे मुक्तक और गीत लिखे। जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द तथा हरिकृष्ण प्रेमी ने अपने काव्य की परम्परा कायम रखी। अन्य गीतकार जिनकी कविताएँ पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं, उनके नाम हैं—

आरसीप्रसाद सिंह, जानकी वल्लभ शास्त्री, श्री महेन्द्र भटनागर, श्री भारतभूषण अग्रवाल, श्री शील, प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव, सुरेन्द्रकुमार दीक्षित, कुमारी इन्दिरा नूपुर,कृष्णनन्दन पियूष,रामनाथ पाठक प्रणयी, शम्भूनाथ शेष, शम्भूनाथ सिंह, अक्षयचन्द्र शर्मा, धर्मपाल शास्त्री, सोहनलाल द्विवेदी, कुमारी रमा सिंह, मोहन, मेदीलाल आर्य, कुमारी माया राव, जीतेन्द्रकुमार, लक्ष्मी-शंकर मिश्र निसंक, रामेश्वरलाल खंडेलवाल तरुण, महेन्द्रसिंह आर्य, देवव्रत देव, देवप्रकाश गुप्त अंगार, विद्यावती मिश्र, प्रभाकर माचवे, अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, गिरजाकुमार माथुर, शमसेर, त्रिलोचन, ठाकुरप्रसाद सिंह, क्षेम, रूपनारायण त्रिपाठी, बच्चन, नर्वदेश्वर उपाध्याय, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रुद्र, मोहनलाल गुप्त, गुलाब, रमेश झा, नारायण, रामदयाल पांडेय, प्रभात, जयशंकर त्रिपाठी, विष्णुचन्द्र शर्मा, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, जगदम्बाप्रसाद त्यागी, बलभद्र ठाकुर, मुरारी लाल शर्मा, बालकृष्ण बदलुवा, नीरज, शील, विष्णु, शकुन्तला शर्मा, शान्ति एम० ए०, विद्यावती कोकिल, सुमित्रा कुमारी सिनहा, शांतिप्रिय, बेढब, बेधड़क, चोंच, हरिशंकर शर्मा, गोपालप्रसाद व्यास, बरसानेलाल चतुर्वेदी, गंगा प्रसाद पांडेय, मुकुल, शैदा, रमयी काका, अंचल, माखनलाल चतुर्वेदी, सुरेन्द्र, शिवमूर्ति शिव, आदि नये पुराने सभी कवि प्रायः पत्र पत्रिकाओं को शोभित करते रहे ।

श्री बालकृष्ण बदलुआ की संताप नामक रचना प्रकाश में आयी है जो अपने चारों ओर व्याप्त गरीबी दैन्य, अनाचार की अच्छी अभिव्यक्ति करती है । अपनी अनुभूतियों के प्रति कवि ईमानदार रहा । महेन्द्र भटनागर का बदलता युग जो उनका काव्य सम्बन्धी तीसरा संकलन है, आधुनिक हिन्दी की जनवादी कविता का सशक्त स्वर है । जगदम्बा प्रसाद त्यागी का अधूरा गीत निराशा के स्वर अपने भीतर छिपाये है । शत्रुघ्न दुबे की बेले की कली रचना बहुत ही बचकानी है । मुरारीलाल शर्मा द्वारा रचित होली का संदेश देश की विभिन्न समस्याओं पर लिखे गये सामयिक गीतों का संकलन है । परमेश्वर द्विरेफ द्वारा रचित मरु के टीले में राजस्थान के प्रकृति-चित्रों की मनोहारी छटा है । रमेश झा की कृति आसावरी सरस गीतों का सुन्दर संकलन है । सुरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव ने 'जागरण के गीत' तथा शम्भूनाथ सिंह ने 'दिवालोक' नामके अच्छे गीतों का संग्रह दिया है । रूपनारायणत्रिपाठी के माटी की मुसकान में धरती का सौरभ लहलहा उठा है । गिरजाकुमार माथुर की दो रचना नाश और निर्माण तथा नयी भारती इस वर्ष आयी हैं । इसमें नयी भारती कला प्रौढ़ रचना है । जानकी वल्लभ शास्त्री ने 'अवन्तिका' नामक अपने नवीन काव्य संग्रह द्वारा हिन्दी को प्रौढ़ सांस्कृतिक गीत दिये हैं । अज्ञेय ने 'बावरा अहेरी' नामक रचना इस वर्ष हिन्दीको दी है । अज्ञेय की रचना में पहले की अपेक्षा सफाई अधिक दीखी है तथा नई पीढ़ी के अनेक रचनाकार उनकी ओर आकृष्ट भी हैं ।

कविताओं के इस वर्ष महत्वपूर्ण संग्रह भी निकले हैं । श्री सुमत्रानन्द पंत, श्री बालकृष्णराव, श्री नगेन्द्र द्वारा संपादित 'कवि भारती' का प्रकाशन अधिक मूल्य रखनेकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा अन्य सभी दृष्टियोंसे उसकी जितनी चरचा हुई, नहीं होनी चाहिये । नगेन्द्र द्वारा संपादित 'रीति शृंगार' रीति कालीन काव्यों का अच्छा खासा संग्रह है । यद्यपि इस संग्रह को वह प्रतिनिधित्व हिन्दी में प्राप्त न हो सकेगा जो मिलना चाहिए क्योंकि केवल कविताओं का संग्रह मात्र है तो भी यह नये कवियोंके लिये अध्ययनकी दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण है । इसके अतिरिक्त 'नयी कविता' का प्रकाशन दिल्लीसे और 'कविता' का प्रकाशन पटना से हुआ है । 'साहित्यकार' दिल्लीसे निकला है । ये कविता के संकलयिता पत्र हिन्दी कविताको बल देनेका प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु ये बल देने वाले समय से परिचित नहीं हैं, न अपने देश के उस वातावरण से जिस वातावरण के लिये वे काव्य रचना दे रहे हैं । लेकिन इन संकलनों को देखने से ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि सबकी कविताएँ उनमें ऐसीही हैं उनमें अच्छी कविताओं के भी दर्शन हुए हैं और अच्छे-अच्छे कवि उसमें दीख पड़े हैं, यद्यपि वे नये हैं । ये संकलन इस बात के साक्षी हैं कि कवि इस बात के लिए चैतन्य दीखा है कि कविता की सत्ता को मिटने से बचाया जाय । बीच में बाधक वे नाटकबाज कवि हो रहे है जो अपने रास्ते पर कुछ कवियों को ले चलना चाहते हैं ।

हास्यरस के क्षेत्र में संकलन नहीं के बराबर आये । बेढब की बहकका नया परिवर्द्धित संशोधित संस्करण इस वर्ष निश्चय ही हुआ । पुराने कवियों की कविताएँ भी संग्रहीत की गयीं, संत, दादू आदि की । उर्दू के कवियों की चीजें भी देवनागरी लिपि में आयीं । कुछ चीजें संपादित होकर भी आयीं । जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द की मुक्तिका मूल्यवान रचना है । जयशंकर त्रिपाठी की रचनाओं का प्रकाशन इस नवोदित कवि के प्रति आस्था की भावना उत्पन्न करता है : इस वर्ष कुछ अच्छे प्रबन्ध काव्य आये जिसमें पोद्दार रामावतार अरुणका 'विदेह' जनकको चरित्र नायक मान कर लिखा गया सुन्दर काव्य है । श्री तारकेश्वर

उपाध्याय द्वारा रचित 'पथ पर' प्रबन्ध काव्य सहज जीवनका सुन्दर स्वर है। आरसी प्रसाद सिंहने 'नन्ददास' द्वारा हिन्दी को एक सुन्दर प्रबन्ध काव्य दिया है। नीरज का प्राणदीप सहज सुन्दर भाषा तथा संगीतमय ध्वनि के कारण अधिक अच्छा बन पड़ा हैं। शेली की कविताओं का अनुवाद यतेन्द्र कुमार द्वारा अच्छा हुआ। गांधी चरित्र मानस अवधी में लिखा गया स्वर्गीय विद्याधर महाजनका अत्यन्त सुन्दर काव्य है। 'आलोक' का आलोक मीठा तथा सरस है। देवी दयाल चतुर्वेदी मस्त की रचना 'प्राणोत्सर्ग' का प्रकाशन भी इसी वर्ष हुआ है। यह रचना भी अनेक दृष्टियों से सुन्दर है। सांझ और बादली नाम से दो राजस्थानी में काव्य आये हैं। राजधानी के कवि अच्छा संकलन है। रामानुज लाल श्रीवास्तवकी 'उनीदी रातें' मार्मिक काव्य ग्रन्थ है। दुर्गा प्रसाद रस्तोगी आदर्श की 'अखंड विश्व' रचना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इस सभी दृष्टियों से देखने पर ऐसा तो निश्चय ही लगता है कि हिन्दी कविता के विकास में अवरोध सा उपस्थित है किन्तु आशा इसलिये बढ़ जाती है कि हिन्दी कविता के प्रेमी, कवि ईमानदारी से उस सत्य का अनुभव कर रहे हैं तथा उसके प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिए जागरूक हैं। यह विह्वलता निश्चय ही महत्वपूर्ण है। उसमें दो मत नहीं हो सकते।

'साहित्यकार'

[श्री हरिशंकर शर्म्मा]

वह है, सच्चा साहित्यकार।
जो शब्द-ब्रह्म का आराधक, विज्ञान-ज्ञान का सत्-साधक,
दुर्मति-दुर्गति-दल का बाधक, अवनति-गढ़ कर दे छार-छार
वह है, सच्चा साहित्यकार।
भय, पक्ष, प्रलोभन पास नहीं, पद-प्रभुता पर विश्वास नहीं,
होता न हताश-उदास कहीं, करता कुनीति पर पवि-प्रहार
वह है, सच्चा साहित्यकार।
नित सत्य और शिव-सुन्दर पर, जिसका जीवन-व्रत है निर्भर,
जो शुद्ध-बुद्ध भीतर-बाहर, हैं, हितकारी हृदयोद्गार
वह है, सच्चा साहित्यकार।
जो अति कठोर, कोमल महान, जो ओज, तेज, निष्ठा-निधान,
वरदान, प्राण कल्याण, त्राण, जगमग प्रतिभा का चमत्कार
वह है, सच्चा साहित्यकार।

—:o:—

आलोचना तथा निबंध

[पृष्ठ २७ के आगे]

प्रेमचन्द के संपादकीय लेखों का संग्रह इस साल साहित्य का उद्देश्य नाम से प्रकाशित हुआ है। इसमें साहित्य सम्बन्धी प्रेमचन्द के विचार देखने को मिलते हैं, जो अनेक माने में पाठनीय हैं। 'संतुलन' नाम से श्री प्रभाकर माचवे के लेखों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। इनमें विचार सामग्री कुछ मिल जाती हैं। श्री त्रिलोचन शास्त्री ने २६ जनवरी सन् ५५ के 'आज' में पं० हजारी प्रसाद के निबन्धों के संग्रह सभ्यता और संस्कृति तथा अन्य निबन्ध की चरचा की है। यद्यपि यह कृति बाजार में अब तक दीख नहीं पड़ी। समय-समय पर श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने हिन्दी कथा साहित्य के विभिन्न अंगों पर जो लेख लिखे थे उनका संकलन हिन्दी कथा साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ है जो कथा साहित्य के आलोचना ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ है। श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा का काव्य कला और कृतियां भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ।

विज्ञान-साहित्य

[शिवगोपाल मिश्र एम० एस० सी० साहित्यरत्न रिसर्चस्कालर, शोलापुर
मृत्तिकागवेषणागार, प्रयाग विश्वविद्यालय]

कुछ लोग यह प्रश्न करते हैं कि वायुयान, एटमबम तथा अन्य आविष्कार इस भौतिक जगत के लिये कोई नवीन उपहार नहीं, उन्हें तो भारत के ऋषियों ने बहुत पहले बनाया या राम-रावण युद्ध में वीरों ने उनका प्रयोग किया। किन्तु, यथार्थ तो यह है कि इस प्रकार की भूतकालीन गाथा से हमारा काम बिगड़ता ही है, बनने को नहीं। इन्हीं पौराणिक कथाओं ने हमारी वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को दबाये रक्खा और आज हम वैज्ञानिक क्षेत्र में सबसे पीछे दृष्टिगोचर होते हैं। सूत्रप्रणाली वाले उस युग में मुद्रण आदि की सुविधायें न होने के कारण हमें तत्कालीन प्रगति के ढाँचे ही मुश्किल से मिल पाते हैं और जब तक उनका सविस्तार वर्णन न मिले, कोई भी उपयोग निकलना दुष्कर प्रतीत होता है। विज्ञान तो सत्य की खोज है और उसकी प्रत्येक कड़ी प्रत्यक्ष स्पष्ट होनी चाहिए।

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि सम्पूर्ण वर्तमान वैज्ञानिक-विकास पाश्चात्य देन है, जिसका मूल कारण है वहाँ के मनुष्यों का ज्ञान के लिये अवर्णनीय उत्सर्ग। १३०० वर्षों की दासता ने भारत के प्राचीन वैभव को भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, आगे बढ़ने की बात तो कोसों दूर रही। निस्सन्देह नागार्जुन, कणाद, जीवक की वैज्ञानिक परम्पराओं को भुलाया नहीं जा सकता; किन्तु भौतिक शास्त्र अथवा शरीर विज्ञान के विकास के वे प्रथम सोपान मात्र थे। उसके पश्चात् हमें उन्हें संवर्द्धित करने का अवसर ही न प्राप्त हुआ। सर प्रफुल्ल चन्द्र राय ने 'हिन्दू केमिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखकर प्राचीन भारत की वैज्ञानिक प्रगति को भारत के अर्वाचीन-वैज्ञानिकों के समक्ष रखा।

किन्तु यह प्रगति सन्तोषजनक इसलिये नहीं कही जा सकती, क्योंकि बीच में क्रम छिन्न हो जाता है और १९ वीं सदी के अन्त से १९५४ तक की शिक्षा अंग्रेजी में होने के कारण हिन्दी में विज्ञान-साहित्य का अभाव ही अभाव दृष्टिगोचर होता है। यह नहीं कि भारत पीछे रह गया हो, किन्तु जबसे वैज्ञानिक प्रवृत्ति भारत में जगी तब से जगदीशचन्द्र बोस, प्रफुल्ल चन्द्रराय, चन्द्रशेखर वेंकट रमन, मेघनाद शाहा, शान्तीस्वरूप भटनागर, बीरबल साहनी, पी० एस०, गिल, भाभा, जे० एन० मुकर्जी, जे० सी० घोष, नीलरत्न धर तथा और कई दर्जन बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने रासायनिक विज्ञान, भौतिक शास्त्र, प्राणि-विज्ञान, वनस्पति-शास्त्र तथा शरीर-विज्ञान में महत्त्वपूर्ण कार्य किये। उनका क्षेत्र अंग्रेजी भाषा तक ही सीमित होने के कारण, जन-साधारण को उनके महत्वपूर्ण कार्यों की विशेष जानकारी न हो सकी।

कुछ दिनों पहिले तक यह कहा जाता था कि हिन्दी भाषा में वह शक्ति नहीं कि अंग्रेजी में व्यक्त होने वाली वैज्ञानिक अनुभूतियों का प्रकटीकरण कर सके। किन्तु, भारत की स्वाधीनता के पश्चात् ही और हिन्दी राष्ट्र-भाषा घोषित हो जाने के पश्चात्, यह आवश्यकता प्रतीत होने लगी है कि सारा वैज्ञानिक साहित्य हिन्दी में रूपांतरित हो। यत्र-तत्र कुछ हिन्दी विशेषज्ञों अथवा हिन्दी-प्रेमी वैज्ञानिकों ने इस कार्य में योग दान दिया, किन्तु अंग्रेजी के हिमायती और पूंजीपति सदैव यही नारा बुलन्द करते आये हैं कि हिन्दी में विज्ञान-साहित्य अनूदित ही नहीं हो सकता और न हिन्दी में वैज्ञानिक भावों के वहन करने की शक्ति है। इसके पक्ष में उन्होंने वैज्ञानिक शब्दावली की ओर संकेत किया है। उनका कहना है कि यदि हम हिन्दी में लिखना भी चाहें, तो हमारे पास अंग्रेजी के पर्यायवाची हिन्दी-शब्द ही नहीं हैं और यदि हैं तो वे उस भाव की गहराई नहीं नाप पाते। इसके विरोध में हमें यही कहना है कि या तो ये उच्चतर वैज्ञानिक हिन्दी जानते ही नहीं और यदि जानते भी हैं, तो जनसाधारण के सामने उस ज्ञान को इसलिये नहीं लाना चाहते कि कहीं उनकी ख्याति पर तुषारापात न हो जाय, दूसरे साधारण जन उनकी होड़ न करने लगें। यह प्रवृत्ति भारतीय परम्परा के विरुद्ध है और इसका भण्डाफोड़ शीघ्र ही होगा।

हमारी सरकार ने शिक्षित जनता को भ्रमाने के लिये शब्दावली-निर्माण का कार्य अपने हाथों ले लिया है। यह एक ढोंग है और देरी करने का साधन है। समय कम है और उसे इस प्रकार से जाने देना राष्ट्र के लिए अहितकर है। फिर

भी हमारी सरकार विदेशी सरकारों का ही समर्थन करना चाहती है और इसीलिये विज्ञान-साहित्य के हिन्दी रूपान्तरण में देर लगाती है। जनता के समक्ष विभिन्न वैज्ञानिक कोषों की बात रखकर सालों बाद कोई उन्नति नहीं बताई जाती। जनता पर सामन्तशाही जताने का यह परिवर्तित स्वरूप है। डा० रघुवीर तथा महापण्डित राहुल द्वारा प्रणीत शब्दावली को या तो अत्यन्त जटिल या अत्यन्त साधारण करार कर दिया जाता है। क्यों ? जिससे कि वैज्ञानिक प्रगति में रुकावट हो और स्वार्थियों के उल्लू सीधे हों। भोली जनता को विज्ञान-अध्ययन से वंचित रखने की ये चालें हैं। अंग्रेजी को दूर कर हिन्दी में शिक्षा का अनैच्छिक रूप देना तथा बाद में विज्ञान को अंग्रेजी में पढ़ाने की बात हमें बिल्कुल नहीं जँचती।

डा० सत्यप्रकाश ने विज्ञान परिषद द्वारा एक शब्द-कोष का निर्माण किया है, जिसमें अत्यन्त भ्रामक शब्दावली प्रयोगित है। इन सभी कोषों के निर्माण के मूल में स्वार्थ ही निहित है अथवा अज्ञान या अदूरदर्शिता; क्योंकि वे अन्य विषय के विद्वानों से सलाह न लेकर विज्ञान शब्दावली को व्यक्तिगत बना देना चाहते हैं। साहित्य तो सर्वज्ञेय होना चाहिए, व्यक्तिगत स्वार्थों के लदाव की उसमें गुंजाइश नहीं।

आज हिन्दी में विज्ञान-साहित्य की अत्यन्त कमी है और यह सबको खटकती है। इस कमी के मूल में निम्न कारण निहित हैं:—

(१) हिन्दी में अंग्रेजी वर्णों की भांति छोटे और बड़े अक्षरों (कैपिटल लेटर्स) का अभाव है; अतः तत्वों के संकेतों में हम दो शब्द, क्रम से एक बड़ा और छोटा प्रयोग में नहीं ला सकते। दूसरी बात यह है कि अंग्रेजी में एक ही प्रकार उच्चरित होने वाले व्यञ्जन विभिन्न प्रकार से भी बोले जा सकते हैं यथा सी, एस या ओ, ए, या जी, जे। किन्तु हिन्दी में एक ही उच्चारण वाले शब्द एक-एक हैं इसीलिए १०१ तत्वों के संकेतों को बिना पुनरावृत्ति के रूप दे देना दुष्कर कार्य होगा। फिर भी इन सीमाओं के भीतर ही कार्य सुलझाना होगा। यह तो कदाचित् न्यायसंगत न होगा कि समस्त शब्दावली तो हिन्दी में रूपान्तरित हो जाय और तत्वों के संकेत, प्रतिक्रियाओं के समीकरण या सूत्र अंग्रेजी में हों। इसी कठिनाई को दूर करने के लिये ही भाषा वैज्ञानिकों ने नागरी की अपेक्षा रोमन लिपि को पसन्द किया था; किन्तु इससे कार्य नहीं सधेगा। यह असम्भव है कि इस छोटी-सी पूर्ति के लिये हम अपनी लिपि बदल दें या अन्य कोई लिपि का प्रयोग करें। लिपि की स्थिरता एवं साम्य एक चरित्र है, उसे क्षण-क्षण बदला नहीं जा सकता। हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं कि कोई दूसरी लिपि सीखें ही न। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक विनिमय के लिये तो यह आवश्यक ही होगा और जो ऐसा कर सकेगा, उसकी वह विशेषता होगी। किन्तु; उपरोक्त प्रकार की बातें तो अधिकांश के उपयोग के लिए कही ही जा रही हैं। एक दूसरी बात जो हमारे उपरोक्त कथनों के विरुद्ध जान पड़ेगी, वह यह है कि संसार की अन्य समस्त भाषाओं में वैज्ञानिक संकेत एवं सूत्र तथा समीकरण अंग्रेजी के ही अक्षरों से प्रकट या चित्रित किये जाते हैं। जिसका मूल कारण है उन समस्त भाषाओं का लिपि-सादृश्य। यहाँ तक कि फ्रेंच, जर्मनी तथा रूसी भाषा में भी एक यौगिक, उदाहरणार्थ पोटेशियम क्लोराइड के लिये Kcl ही लिखा जाता है। यह भले है कि फ्रेंच में Kcl को Clk कर दिया जाता है यानी क्रम में उलट-फेर; किन्तु शब्द एक-से हैं। हिन्दी भाषा में अथवा नागरी लिपि में उनको चित्रित करना समस्त कल्पनाओं से परे है। एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है, जिस पर दृढ़ होकर हम उपरोक्त को क्रियाशील बना सकें। इसके लिये अखिल भारतवर्षीय वैज्ञानिक अधिवेशन की आवश्यकता है, जिसमें भाषा और लिपि के ही अनुकूल विज्ञान के शब्दों की ढलाई हो सके। इस कार्य में जितनी देर होगी, उतने ही अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग निकालेंगी और विज्ञान-साहित्य की प्रगति रुकी रहेगी। सरकार की ऐसी नीतियाँ हो सकती हैं कि वे इस कार्य में हमारी सहायता न भी करना चाहें, तो हम तो जन-कल्याण के लिये अपने बल पर ही यह बोझा उठाना चाहिए। यह कोई इतना बड़ा प्रश्न नहीं जिसका हल हो ही न सके। मैंने तत्वों के संकेतों की एक सूची तैयार की है, जिसका प्रकाशन, यदि समय मिला या माँग हुई तो शीघ्र ही करूँगा। यह विज्ञान-साहित्य के हिन्दी रूपान्तरण में क्रान्तिकारी कदम होगा।

(२) वैज्ञानिक शब्दावली को हिन्दी रूप देते हुए हमें यह विचार लाना ही न चाहिए कि मक्षिका स्थाने मक्षिका ही बैठे। हमें अंग्रेजी के शब्दों से कोई घृणा नहीं क्योंकि ऐसा करने से हम विज्ञान के वास्तविक स्वरूप को ही खो बैठेंगे और हमारे हाथ कुछ भी न लगेगा। जिस प्रकार हम राबर्ट क्लाइव के नाम को नहीं बदल सकते उसी प्रकार तत्वों के नामों

को भी हम किसी भी प्रकार न तो बदल सकते हैं और न बदलने के हम अधिकारी हैं क्योंकि इन समस्त १०१ तत्वों के पर्याय-वाची शब्द हमारे पास नहीं हैं और न ये तत्व हमारी खोजों के ही परिणाम हैं। हमें उनमें किसी भी प्रकार के परिवर्तन लाने के अधिकार कभी भी प्राप्त न हो सकेंगे। हाँ सोना, चांदी, ताँबा, पारा, लोहा जैसे शब्द ही गोल्ड, सिलवर, कापर आदि तत्वों के स्थान को भर सकेंगे, शेष तो ज्यों के त्यों रहेंगे। नाम ज्यों का त्यों हिन्दी में लिखा जावेगा। यह सोचना कि अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी शब्द लावें ही, भ्रामक है। क्योंकि बहुत से शब्द जिन्हें हम अंग्रेजी समझते हैं, वे या तो ग्रीक हैं या लैटिन। अंग्रेजों ने जिस सहृदयता से उन्हें स्थान दिया उसी प्रकार हमें भी इन सभी शब्दों को ग्रहण करना पड़ेगा। यौगिकों के भी निर्माण में बड़े ही विवेक एवं तर्क से काम लेना पड़ेगा क्योंकि आक्सीजन से बनने वाले कुछ यौगिक आक्साइड, परआक्सा-इड तथा मोनो आक्साइड और कुछ डाइआक्साइड ही नहीं वरन् ट्राइ, टेट्रा तथा हेप्टा आक्साइड भी होते हैं। हिन्दी में ऐसे रूपान्तरों की कमी है। इस पर हमें विचार करना होगा।

(३) चित्रों में निर्देशन करते हुए हिन्दी की किताबों में भी बहुत से अंगों के नाम अब भी अंग्रेजी में ही लिखे जाते हैं, इस शैली का बहिष्कार होना चाहिए।

(४) एक ही विषय पर अनेक पुस्तकें मौलिक रूप से लिखी जानी चाहिए। पहले की अंग्रेजी किताबों का हिन्दी में अनुवाद मात्र न होना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर प्रायः किसी-किसी वाक्य का हिन्दी अनुवाद कुछ दूसरा ही अर्थ बताने वाला बन जाता है। कोष्ठों में अंग्रेजी के समानवाची शब्दों को लिखने की प्रथा का अन्त करना चाहिए और उसके बदले में ग्रंथ के आदि या अन्त में पर्यायवाची शब्दों की सूची हिन्दी-अंग्रेजी में दी जानी चाहिए। मौलिक पुस्तकों की रचना के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा में, रूसी भाषा अथवा फ्रेंच, जर्मन में प्राप्त आदर्श वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी में होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकों के लोभ को छोड़कर मौलिक ग्रंथों की रचना से विज्ञान-साहित्य समृद्ध होगा और हमारी भाषा के विद्यार्थी नूतन से नूतनतम वैज्ञानिक प्रवृत्तियों से परिचित होते रहेंगे। विज्ञान के सस्ते साहित्य का तिरस्कार होना चाहिए, हाँ किसानों के लिये लिखे जानेवाले साहित्य में यह छूट दी जा सकती है। यही बात बच्चों के साहित्य के लिये भी है।

(५) रासायनिक शास्त्र, भौतिक शास्त्र, प्राणिविज्ञान तथा शरीर-विज्ञान का उपरोक्त प्रकार से सृजन सम्भव है, किन्तु कृषि-शास्त्र का पुनर्निर्माण भारतीय परिस्थितियों में आवश्यक है। हमें वैज्ञानिक शब्दावली के लिये न तो झंखना होगा और न प्रायोगिक कठिनाइयाँ ही होंगी। घाघ और भड्डरी जैसे कृषि-विशारदों की लोकोक्तियों का वैज्ञानिक अनुसन्धान होना चाहिये। जितना भी प्राचीन साहित्य कृषि पर उपलब्ध हो, उसकी जाँच फिर से होनी चाहिए। कृषि-विज्ञान का हिन्दी में अपार साहित्य उपलब्ध किया जा सकता है। वैद्यक तथा शरीर-शिक्षा-शास्त्रों में भी प्राचीन भारतीय परम्परायें काफी सहयोग प्रदान कर सकेंगी।

(६) इन सब के अतिरिक्त हिन्दी में विशिष्ट वैज्ञानिक पत्रिकाओं एवं पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता है, जिससे हम इस निर्माण-काल में अपने भावों को, विचारों को अथवा अपनी खोजों को शिक्षित जनता तक आसानी से पहुँचा सकें और उस पर पर्याप्त वाद-विवाद भी, यदि आवश्यकता हो तो, हो सके। इतना होने पर प्रमुख वैज्ञानिकों का सहयोग अत्यावश्यक हो जाता है, जिसके बिना हिन्दी में वैज्ञानिक-साहित्य का सृजन असम्भव है।

मेरे ये उपरोक्त सुझाव एकदम व्यक्तिगत नहीं हैं वरन् समय की माँग को देखते हुए देशव्यापी हैं। मुझे तो कोई ऐसी आवश्यकता न प्रतीत हुई और न होती है कि उपलब्ध विज्ञान साहित्य का इतिहास लिखा जावे। अभी तक जो कुछ भी प्रयास हुए हैं वे सागर में बिन्दु के गिरने के तुल्य हैं। विज्ञान तो अपार ज्ञानराशि है। कालान्तर में कुछ कार्य हो सके, यही कामना है।

[सन् १९५४ में विज्ञान-संबंधी प्रकाशित साहित्य के लिए प्रमुख विषयों की प्रकाशन-सूची देखें। इस वर्ष का विज्ञान साहित्य का प्रकाशन परिचयात्मक अथवा परीक्षा से संबंध रखनेवाला अथवा अधिक से अधिक डिग्री कक्षाओं मात्र से संबंध रखनेवाला रहा संपादक]

उपन्यास

संसार की सभी भाषाओं में उपन्यास का प्रणयन जब से आरम्भ हुआ तब से वह दिनोत्तर लोकप्रिय ही होता जा रहा है। वह महाकाव्यों महानाटयों तथा पुराणों का स्थान ग्रहण करता जा रहा है । आज तो अनेक क्षेत्रों में वह शिक्षा देने का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन भी है । आज विज्ञान, ज्योतिष, आदि शास्त्रों की शिक्षा भी उपन्यास के सहारे दी जा रही है । यह गौरव इसे सहज ही इसलिए प्राप्त हो गया है कि साहित्य के अन्य अंगों के प्रणयन में जहाँ अनेक बन्धन होते हैं वहाँ उपन्यास उससे अछूता रहता है । बन्धनों की छूट व्यापक निर्माण के लिए भाव-भूमि तैयार करती है । हिन्दी के उपन्यासकार को भी यह छूट बहुत दिनों से मिली थी किन्तु अनुकृति की दृष्टि ने उसे आगे बढ़ने में बाधा पहुँचाई । स्वतंत्र ता के साथ ही इस बाधा का तिरोधान होता दीख पड़ रहा है । तथा सुधी साहित्यकारों का सम्पर्क विश्व के समुन्नत वांगमय के सीधे हो जाने के कारण नई आशा नये रूप में विलसित होती दीख रही है । यद्यपि हिन्दी में एक प्रकार से उपन्यासों का युग सा चल रहा है और इस वर्ष भी अत्यधिक उपन्यास सामने आये जिनकी यदि गणना की जाय तो उनकी संख्या हजारों तक पहुँच जायगी । किन्तु स्वस्थ वृत्ति के प्रौढ़ उपन्यास बहुत थोड़े निकले । उपन्यासों की जनप्रियता ने अपना ऐसा स्थान बना लिया है कि अनेक पात्रों में धारावाहिक रूप से उपन्यास छपते रहे। नये लेखकों ने इस क्षेत्र में कमाल कर दिखाया। फिर भी यह कमाल इतिहास की परम्परा को बहुत आगे नहीं बढ़ाता ।

जिन प्रमुख उपन्यासों की कृतियाँ इस वर्ष लोगों के सम्मुख आयी उनमें श्री वृन्दावनलाल वर्मा, श्री चतुरसेन शास्त्री, श्री अश्क, श्री जैनेन्द्रकुमार, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी, गुरुदत्त, नरेश मेहता, नागार्जुन, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, गोबिन्द वल्लभ पंत, रांगेय राघव, पांडेय बेचन शर्मा उग्र आदि विशिष्ट लेखकों की कृतियाँ आई ।

कठपुतली के प्रकाशक का यह दावा है कि कठपुतली के सृजन द्वारा देवेन्द्र सत्यार्थी सहज ही हिन्दी की परम्परा को बहुत आगे ले गये हैं। जहाँ तक इस उपन्यास के पात्रों का सम्बन्ध है वे भाषा के उसी रूप को सामने रखते हैं जिस पर आम बोलचाल की छाप कहीं भी मध्यम नहीं पड़ती । साथ ही यह कृति भी श्री जवाहरलाल नेहरू ने जिनके दो मसजिदें शीर्षक निबन्ध से लेखक को प्रेरणा मिली थी, समर्पित है। संभवतः दो मसजिदों के इस अंश ने, लेखक को प्रेरणा दी है । इनसान भी कितना और जाहिल है कि वह हजारों वर्ष के तजुरबे से नहीं सीखता और बार-बार वही हिमाकते करता है । ये सब तो तड़क-भड़क वाली बातें हैं । संपूर्ण उपन्यास पढ़ जाने के बाद सहज ही यह कहा जा सकता है कि यह नाटक न तो कोई आशा का संदेश देता है न तो परिस्थितियों के बीच खेलने वाला नाटककार सुनील कोई ऐसा आदर्श ही उपस्थित करता है जो बहुत महत्वपूर्ण हो। हाँ, श्री यम० समाउल्ला द्वारा अंकित चित्र श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का अपने संकेतों में निश्चय ही पूर्ण है । ९० खंडों में लिखा गया ४४८ पेज का यह उपन्यास २५० पृष्ठों में लिखकर भी अपने स्थान पर अच्छा रहता । श्री यज्ञदत्त शर्मा का इंसाफ नामक १४३ पृष्ठ का उपन्यास किसान जीवन को उन्नत करने के लिए अच्छा प्रयत्न है । इस वर्ष सर्वाधिक उपन्यास डा० रांगेय राघव ने लिखे हैं । उन उपन्यासों की शृंखला युग के सांस्कृतिक जीवन को उन्नत उठाने वाले महा संतों, साधकों, कवियों तथा नेताओं से बनी है । उनके नाम हैं, भारती का सपूत, देवकी का बेटा,यशोधरा जीत गयी, लोई का ताना, आदि । जिनके जीवन को लेकर उपन्यास लिखे गये हैं वे स्पष्ट हैं । ये उपन्यास ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखे गये हैं तथा अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं। उबाल इसी वर्ष की इनकी कृति है। तथा तुलसी के जीवन को लेकर रतना की बात शीर्षक उपन्यास भी इन्होंने लिखा है । लेखक एक भूल कर गया है और वह भूल यह है कि किताबों के आवरण मात्र से व्यक्ति यह समझ लेता है कि इनमें किस विषय को उपन्यास का रूप दिया गया है। कौतूहल कथाकार को बनाये रखना चाहिये। इससे उसे बहुत बड़ी सहायता मिलती है। समिधाअनीता चट्टोपाध्याय की नर नारी के, पवित्र प्रेम की कसक पूर्ण गाथा है। कृष्णचन्द्र शर्मा भिक्खु बहुत पहले ही आदमी का बच्चा, संक्रान्ति, घर का बड़ा, हिन्दी जगत को दे चुके हैं। यह नाटकीय वस्तु घटना पर तीव्र घटना प्रवाह वाला शैली की दृष्टि से भंवर जाल के १९५४ में निर्माता है। बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी से उपन्यास शुरू होता है और बलराज का पुलिस को आत्म समर्पण द्वारा उपन्यास का अन्त होता है। अंखिया निहार के पग धूरि झार के बरुआ ने लिखा है तथा संयासी और सुन्दरी कलकत्ते के चन्द्र ने लिखा है। श्वेत पद्मा नामक उपन्यास श्री सिद्धविनायक द्विवेदी का अभी हाल में प्रकाशित हुआ

है। वह अच्छा ऐतिहासिक उपन्यास है। श्रीमती लावण्य प्रभाकर ने रजनी-गंधा की सृष्टि की है। उपन्यास पढ़ने योग्य है। हिन्दी के कई ग्रथों में बदनाम उपन्यासकार श्री गोविन्दसिंह की कृति गटर के कीड़े, धरती रोती है यदि हिन्दी के महा आलोचक पढ़लें तो संभवतः इस प्रतिभासम्पन्न कलाकारके साथ न्याय कर सकते हैं। यद्यपि कहीं-कहीं अतिशयताका दोष इनमें आ गया है। करम और जगनी श्री हर्षनाथ की ग्रामीण जीवनसे सम्बन्धित प्रकृति जीवन का चित्रण करने वाला अच्छा उपन्यास है। पं० शांतिप्रिय द्विवेदी द्वारा रचित दिगम्बर उपन्यास इन्द्रिय विस्फरण की पंखुड़ियोंको लेकर शहरके जीवन तककी सत्यता का आख्यान करता है तथा ग्राम जीवन की सहज सरल स्वच्छंद प्रकृति विशदता का आकर्षक संदेश देता है। शैली और अभि व्यंजना की दृष्टिसे अनेक अर्थोंमें यह उपन्यास अपनी विशिष्टता रखता है। नागार्जुन का बाबा बटेश्वरनाथ मिथिलेस के सौ के सौ वर्षों के सामाजिक जीवन का क्रम विकास उपस्थित करने वाला वर्णनात्मक उपन्यास है। वर्णनों में संकेत का सहारा लिया गया है। इसमें क्रिया कल्प सीधा प्रभाव डालता है किन्तु विचार विशेष से जो राजनीतिक है लेकक प्रभावित है इसे उसपाय का सजग अध्येता सहज ही देख लेता है। श्री नरेश मेहताका डूबते मस्तूल सामान्य कोटि की जनरुचि वाला उपन्यास है। इसमें नाम से लेकर काम तक का आकर्षण है। श्री चतुरसेन शास्त्री का उपन्यास सोमनाथ, जै सोमनाथ, के लिए चुनौती के स्थान पर अनेक स्थलों पर उसकी छाया बन गया है। धर्मपुत्र और आलम गीरि भी संभवतः इस वर्ष की कृतियां है। गोविन्द वल्लभ पंत सदैव उपन्यासकार हैं। नवजवान और यामिनी के द्वारा उन्होंने अपनी मर्यादा को और भी प्रतिष्ठित किया है। श्री वृन्दावन लाल वर्मा द्वारा रचित अमर बेल नवीन जीवन की भाव भूमि पर लिखा गया उपन्यास है। विशिष्टता की दृष्टि कथा के विषय का चयन अत्यन्त सुन्दर है जो सर्तमान विकास सम्बन्धी सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है किन्तु कथा कहने का यह जादूगर बेल में उलझ गया है और कूंचे कांटे को तोड़ नहीं पाता। पांडेय बेचन शर्मा उग्र, द्वारा रचित गंगा माता इस वर्ष का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास तथा प्रवाह, विषय की स्थापना कथा कहने की शैली सभी दृष्टियों से है। तीन पीढ़ी आस्कर बाइल्ड की कृति अपनी छाया टालस्टाय के अन्ना कैरिना हरबंट फास का मुक्ति मार्ग कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की लोग हंसिगो अच्छे अनुवाद हैं। देवलोकका अनुवाद जो स्वर्गीय श्री विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय की कृति है श्री रामचन्द्र वर्मा ने बड़ी सफलता पूर्वक किया है। मृत्यु के पश्चात् बाले जीवन से सम्बन्धित यह उपन्यास है। चन्द्रशेखर शास्त्री का आचार्य, श्रेणिक विम्बसार, ख्वाजा अहमद अब्बास का आधा इंसान, राहुल सांकृत्यायनकी कृति सूदखोर की मौत इस वर्ष के अच्छे उपन्यास हैं। अश्क की "बड़ी-बड़ी आँखें" असफल रही हैं।

उपन्यास दिनोत्तर दृढ़ भित्ति पर संस्थित होते जा रहे हैं यह उनके विकास का शुभ लक्षण है।

'हिन्दी-प्रचारक' ने देखते-देखते मासिक पत्रों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। हिन्दी लेखकों और प्रकाशकों की समस्याओं के साथ-साथ "हिन्दी-प्रचारक" में हिन्दी की गतिविधि के संबन्ध में भी सामयिक और उपादेय पाठ्य सामग्री मिलती है। हिन्दी-सम्बन्धी प्रगति की जानकारी रखने के लिए "हिन्दी प्रचारक" आवश्यक है। मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि उसके संपादक, श्री सुधाकर पांडेय उसे और भी स्वस्थ और साहित्य का सजग पहरेदार बनाने जा रहे हैं। इसी दृष्टि से, उन्होने प्रचारक का 'साहित्य-अंक' निकालने की योजना बनायी है। यह अंक सन् ५४ का हिन्दी-संबंधी विश्व-कोश सिद्ध होगा, ऐसा भी विश्वास है। मेरी शुभ कामनाएं 'हिन्दी-प्रचारक' के संचालकों के साथ है। —**बेधड़क बनारसी**

निवेदन

हिन्दी-प्रचारक का साहित्य-अंक ५४ आपके सामने है। इसकी उपयोगिता हिन्दी के लिए कुछ है, या नहीं, यह देखना तो उनका काम है, जिनके सामने यह है।

हिन्दी में ऐसा प्रयत्न होना चाहिए, इसे तो सभी मानते हैं और मानेंगे। इस प्रयत्न के लिए जितनी साधना और तपस्या चाहिए उतनी मुझमें नहीं; इसलिए त्रुटियों का होना संभव है। इन त्रुटियों को दूर करना, कराना ही वास्तव में उनका प्रयत्न होना चाहिए जो हिन्दी को विकसित होते देखना चाहते हैं। इस दृष्टि से आये सुझावों का स्वागत किया जायेगा। त्रुटियों का सारा दायित्व मेरा है, उसके लिए क्षमा चाहूँगा।

मेरे इस प्रयत्न में,—जो पहली बार हिन्दी में मूर्त हुआ है अनेक मित्रों यथा श्री कृष्ण दवे एम० ए०, पं० हनुमान प्रसाद शर्मा, का सहयोग महत्त्वपूर्ण है। जिन संस्थाओं ने मुझे सूचना देकर अनुगृहीत किया है, उनका भी मैं विशेष आभारी हूँ। साथ ही इस अंक के लेखकों का भी।

संपादक

विविध साहित्य

बालोपयोगी तथा किशोरोपयोगी और प्रौढ़ साहित्य

देश में नयी जागृति के साथ ही साथ यह अनुभव किया जाने लगा है कि मंगलमय भविष्य संतानों के स्वस्थ विकास पर आधृत है तथा उन लोगों की शिक्षा-दीक्षा पर आधृत है, जो अनपढ़ लोग हैं। अनपढ़ों को साक्षर बनानेका प्रयत्न बहुत बड़े पैमाने पर सारे देश में समवेत रूप से किया जा रहा है। जब से भारत स्वतंत्र हुआ है इस वास्तविकता का ध्यान सुधी नागरिक करने लगा है। प्रकाशक ने भी इस क्षेत्र में अपना विकासोन्मुखी चरण बढ़ाया है।

बाल-साहित्य

यद्यपि हिन्दी में बहुत दिनोंसे बाल-साहित्य निकल रहा था; किन्तु विगत कुछ वर्षों से बड़े व्यापक पैमाने पर प्रकाशकों का ध्यान इधर आकृष्ट हुआ है। प्रायः हिन्दी के सभी विशिष्ट प्रकाशकों ने यथा सस्ता साहित्य मंडल, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, राजकमल, राजपाल, अजन्ता प्रकाशन, आदि ने बालकों के साहित्य की ओर ध्यान दिया है। इनके यहाँ से ज्ञानवर्द्धक विविध रचनाओं का प्रणयन रंगीन सचित्र बड़े व्यापक पैमाने पर हो रहा है। अमर साहित्य को भी जो हमारी पूर्व परम्परा का संस्कार हममें भरता है, हिन्दी में सुरुचि के साथ देने का प्रयत्न प्रायः देश के गणमान्य प्रकाशक कर रहे हैं। केन्द्र द्वारा अच्छे प्रकाशनों के लिए पुरस्कार का भी आयोजन किया गया है; किन्तु खेद है कि वहां से पुरस्कृत होनेवाला बाल-साहित्य उतनी उच्च कोटि का नहीं; जितनी उच्च कोटि का बाल-साहित्य अन्यत्र प्रकाशित हुआ। इस क्षेत्र में गीता प्रेस गोरखपुर की सेवाएँ भी सदैव स्मरणीय रहेंगी। इधर उन्होंने बालकों के लिए स्वस्थ साहित्य का प्रणयन किया है।

किशोर-साहित्य

तरुणों को प्रभावित करने के लिए देश में किशोर साहित्य की बहुत बड़ी आवश्यकता है। दिल्ली के प्रकाशकों ने इधर अनुवादों के द्वारा तथा रूपान्तरों के द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था जगाने वाले ज्ञान के अक्षय भंडार को हमारे सम्मुख उपस्थित किया है। यद्यपि गति की दृष्टि से प्रगति बहुत प्रशंसनीय नहीं है फिर भी गति को जो बल मिल रहा है वह निश्चय ही आशा और उल्लास जनक है।

प्रौढ़-साहित्य

प्रौढ़ों के लिए जामा मिलिया ने सर्वाधिक प्रकाशन किया है क्योंकि उसके माल की खपत सहज ही हो जाती है। उसने विषयों का चयन तो अच्छा किया है; किन्तु दृष्टि का दोष वहां से प्रकाशित साहित्य में मिलता है। अनुवाद-कार्य, मौलिक कार्य, विभिन्न प्रकाशकों ने किया है, जिसका नाम १९५४ के प्रकाशनों में इस पत्रिका में दिया गया है।

यात्रा–साहित्य

यात्रा साहित्य का हिन्दी में अभाव है। इस वर्ष बहुत थोड़ी-सी कृतियाँ आयी हैं। सच्चिदानन्द, हीरानन्द वात्सायन, अज्ञेय की पुरानी कृति टायर की आत्म कहानी परिवर्द्धित और विस्तृत होकर 'अरे यायावर रहेगा याद' के रूप में प्रकट हुई है। श्री राजवल्लभ ओझा कृत बदलते दृश्य इस क्षेत्र में वर्ष की सर्वोत्तम रचना है।

शिकार–साहित्य

शिकार साहित्य हिन्दी में खटकने वाली वस्तु रही है। इस सम्बन्ध में कोई व्यापक प्रयत्न नहीं दीखा, पर जिम कारवेट की कृतियों का अनुवाद हुआ है, उनमें कुमायूँ के शेर विख्यात है।

संगीत

संगीत से सम्बन्धित प्रमुख पुस्तकें महेशनारायण सक्सेना, लक्ष्मीनारायण गर्ग द्वारा रचित राग मंजरी, जगदीश सहाय कुलश्रेष्ठ द्वारा रचित संगीत शास्त्र, लक्ष्मीनारायण गर्ग का सूर संगीत ह।

राजनीति संबंधी अनेक ग्रन्थ इस वर्ष प्रकाशित हुए; किन्तु सबके सब शिक्षाको ही लेकर हैं। शिक्षा शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ भी विश्वविद्यालयों की शिक्षा से सम्बन्धित है। अर्थशास्त्र तथा राजनीति सम्बन्धी प्रकाशन भी उसी को लेकर हुए किन्तु अनेक मूल्यवान ऐसी कृतियाँ इस क्षेत्र में आयी हैं कि बी० ए० तक की परीक्षा उसके द्वारा दी जा सकती है। इतिहास सम्बन्धी मूल्यवान ग्रन्थ देनेवाले व्यक्तियों में डा० अलतेकर, देवसहाय त्रिवेद, सत्यकेतु विद्यालंकार, वासुदेवशरण अग्रवाल आदि प्रमुख व्यक्ति हैं। मनोविज्ञान और समाज विज्ञान सम्बन्धी कृतियाँ भी इस वर्ष हिन्दी में आयीं।

इस प्रकार हिन्दी का विविध अवयव दिनोत्तर उन्नतिशील है। जिस गति की अपेक्षा की जा रही है वह गति अभी समय लेगी और वह समय अब दूर नहीं है, जब कि हिन्दी का वांगमय शीघ्र ही विश्व की सम्पन्न भाषाओं की समता कर सकेगा।

[विविध विषयों के साहित्य-प्रकाशन के लिए कृपया इसी पत्र में दी हुई १९५४ की सूची देखें।]

पत्र-पत्रिकाएँ

राष्ट्रभाषा के विकास के साथ ही साथ हिन्दी पत्रों की मांग बढ़नी चाहिये। सामान्यतः ऐसा समझा जा सकता है। सर्वत्र भारतवर्ष में तथा हिन्दी में भी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अनेक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत होता है, जिसमें शृंखला व्यवस्था के द्वारा ऐसी पत्र-पत्रिकाओं का संचालन होता है, जो मुख्यतया व्यापार को ध्यान में रखकर निकाली जाती हैं। हिन्दी पत्रों की भी शृंखलाएँ हैं, विशेषकर दैनिक पत्रों की। विश्वमित्र, नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, भारत, प्रदीप आदि शृंखला-व्यवस्था में निकलते हैं। शृंखला-व्यवस्था से जब कोई पत्र निकलता है, तो उसका बन्द होना जल्दी संभव नहीं होता; क्योंकि एक स्थान की सबलता दूसरे स्थान की दुर्बलता को पूरा कर दिया करती है, किन्तु इस शृंखला व्यवस्था में निकलने वाले पत्र बन्द हुए या बन्द के समान निकलते रहे। इसके मूल में जाने पर यह निश्चय ही प्रकट होता है कि हिन्दी पत्र अब भी बाजार पर अपना उतना प्रभाव नहीं रख पाये हैं, जितना अन्य भाषा के पत्रों का अपने बाजार पर होता है तथा अंग्रेजी का है। इसमें उस संस्थान विशेष की अपनी कठिनाइयाँ तो होती हैं, हिन्दी दैनिक पत्रकारों के सम्मुख अपनी निजी कठिनाइयाँ भी हैं। टेलीप्रिंटर और तार का अभाव तो इसके मूल में है ही, उन विशिष्ट प्रतिभाओं को खपा सकने का साधन जो कुछ नवीन चीज हिन्दी पत्रकारिता को दे सके, नहीं है। विज्ञापन भी उस मात्रा में हिन्दी पत्रोंको उपलब्ध नहीं हो पाता है, जितना अन्य भाषा के पत्रों को प्राप्त होता है। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी पत्रों के विकास में बाधाएँ पड़ी हैं। और अनेक बन्द भी हो गये हैं। फिर भी दैनिक पत्रों में नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, आज, आर्यावर्त, स्वतंत्र भारत, अमृत पत्रिका, उच्च स्तर पर हिन्दी पत्रकारिता की सेवा करते रहे। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि अनेक अच्छे पत्र प्रबन्ध की खराबी के कारण बन्द भी हो गये। यथा संसार का बन्द होना एक बहुत बड़ी घटना है। इनमें अनेक के यहाँ से साप्ताहिक पत्र निकलते रहे। किन्तु अब हिन्दी में साप्ताहिकों का अकाल-सा दीख पड़ रहा है। हाँ ऐसे साप्ताहिकों की संख्या निश्चय ही बढ़ी है जो केवल स्वार्थ विशेष से एक सीमित क्षेत्र में निकलते हैं या सरकारों द्वारा खरीदे जाते हैं। अखिल भारतीय महत्व के साप्ताहिकों में हिन्दुस्तान ने अपनी प्रतिष्ठा सर्वोत्तम बना रखी है। उसमें सामग्री की विशिष्टता तो रहती है, मेक अप का आकर्षण भी कम नहीं रहता, दूसरा पत्र धर्मयुग है, जो केवल मुद्रण के आकर्षण के कारण लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता रहा। कलकत्ते से निकलनेवाला 'प्राची' भी देखने में सुन्दर है। ऊपरी आकर्षण की दृष्टिसे उसमें राजनीति से सम्बन्धित अच्छी सामग्री विचार विशेषसे प्रभावित होकर आती है। पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र द्वारा संपादित तथा प्रकाशित 'सारथी' साप्ताहिक भी अत्यन्त मूल्यवान पत्रों में से एक है। दैनिक पत्रों में प्रायः सभी के रविवासरीय संस्करण निकलते हैं जिनमें से आज, हिन्दुस्तान, स्वतंत्र भारत, नवभारत टाइम्स, आर्यावर्त्त, सन्मार्ग, आदि के रविवासरीय संस्करण अच्छे निकलते हैं। ये सभी पत्र अपने विचार से जनता को प्रभावित नहीं करते अपितु अपने साधन और सामग्री के बल पर वे वैसा कर पाते हैं। हिन्दी के दैनिकों में 'बनारस' की एक अपनी विशेषता है। आकार प्रकार में अत्यन्त लघु होने पर भी अपने क्षेत्र पर वह अत्यन्त प्रभाव रखता है और लोग नेह पूर्वक उसे पढ़ना चाहते हैं। हास्य-रस के पत्रों में साप्ताहिक तरंग अकेले सेवा करता रहा है।

मासिक पत्रों की स्थिति बाजार की दृष्टि से दयनीय है; फिर भी उनमें से अनेक को साहित्य-सेवा की भावना या प्रकाशकों की कृपा या संस्थाओं का वरदान चलाये चला जा रहा है। इस वर्ष ये पत्र-पत्रिकाएँ साहित्य की ओर विशेष रूप से ध्यान तो देती ही रहीं; किन्तु कुछ नयी पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। उन पत्र-पत्रिकाओं का बहुत महत्व है। जो पत्र-पत्रिकाएँ निकल कर अकाल ही काल कवलित हो जाती हैं, उनके पीछे साहित्यिकों का लगन मात्र होता है, किन्तु उन बेचारों के पास कोई साधन नहीं होता।

कलकत्ते से निकलने वाले पत्रों में नया समाज, का स्तर कायम रहा। हिन्दी के अच्छे लेखकों के उसमें लेख प्रकाशित होते रहे, विविध प्रकार के। सामयिक और राजनीतिक लेख भी इसमें प्रकाशित हुए। इसकी सफलता का श्रेय मोहन सिंह सेंगर को है। कलकत्ते का दूसरे प्रतिष्ठित पत्र विशाल भारत की स्थिति उसकी परम्परा के अनुरूप नहीं रही, यह सहज ही कहा जा सकता है। गल्प भारती कलकत्ते से निकलने वाला कहानी का अच्छा मासिक पत्र है, जो सुरुचिपूर्ण मनोरंजक

सामग्रियां देता है। गल्पभारती के संपादक हैं श्री काशीनाथ। गल्पभारती के अतिरिक्त राजश्री भी कहानी प्रधान मासिक पत्रिका सुरुचिपूर्ण ढंग से श्री रुक्म के संपादकत्व में प्रकाशित होती रही।

हिन्दी के मासिकों का बहुत बड़ा केन्द्र इस समय पटना है। पुराने साहित्यिक मासिकों ने वहाँ अपनी परम्परा कायम रखी तथा विशिष्ट सामग्री से हिन्दी वांग्मय को विभूषित करते रहे। श्री बेनीपुरी द्वारा संपादित नयी धारा, श्री सुधान्शु द्वारा संपादित अवन्तिका, और श्री रामदयाल पांडेय द्वारा संपादित पाटल विशिष्ट पत्र हैं। इन सबमें उच्च कोटि की सामग्री रहती है। आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा संपादित राष्ट्र भाषा परिषद का मुख्य पत्र 'साहित्य' उत्कृष्ट पत्रोंमें से एक है, जिसमें अनुसंधान, अनुशीलन सम्बन्धी विशिष्ट सामग्री तो रहती है साथ ही साहित्य के सभी विषयों पर जो महत्व के होते हैं, आदर्श टिप्पणियाँ भी रहती हैं। हिन्दी मे वस्तुस्थितिवाले तीखे सत्य व्यंग पत्र चाणक्य का प्रकाशन भी पटना से होता है। यह वास्तव में बहुत मूल्यवान पत्र है।

जिस नगरी से 'सरस्वती' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। जिस नगरी में सम्मेलन की स्थापना हुई, जहाँ नागरी प्रचारिणी सभा है, वह नगरी काशी जिसने इन्दु, जागरण और हंस जैसे इतिहास बनाने वाले पत्रों को निकाला आज वहाँ पर मासिक पत्रों का सर्वथा अकाल है। श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ के संपादन में 'प्रसाद' नाम की एक पत्रिका इस वर्ष से प्रसाद परिषद के तत्वावधान में प्रकाशित हो रही है। मुख्यतया वह पत्रिका कहानी प्रधान है तथा उसे बड़े लेखकों का सहयोग प्राप्त है। नये लेखकों को वह प्रोत्साहन देने का कार्य विशेष रूप से अपनाये हुए है। फिर भी; उस पत्रिका ने अभी उस गौरव की स्थापना का कोई भी संकेत नही दिया जो युग प्रवर्तनकारी कार्य कर सके। दूसरी पत्रिका इसी वर्ष काशी से 'हिन्दी प्रचारक' नाम से प्रकाशित होने लगी है यद्यपि यह पत्रिका इस आदर्श को ध्यान में रखकर निकाली गयी है कि वह पुस्तकालयों, शिक्षण संस्थाओं पुस्तक व्यवसायियों तथा पाठकों को हिन्दी भाषा और साहित्य की सर्वतोमुखी प्रगति की सूचना नियमित रूप से दिया करेगी। इसका आकार प्रकार बहुत बड़ा नहीं है फिर भी इसने वर्ष भर के ही भीतर अपने विचारों से अनेक क्षेत्रों में सफलता पूर्वक आन्दोलनों का आरम्भ कराया है और उसने अपने विचारों से जन मन को प्रभावित करने में सफलता भी प्राप्त की है।

प्रयाग से 'सरस्वती' जो हिन्दी की सर्वाधिक प्राचीन मासिक पत्रिका है पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के संपादन में बराबर निकलती रही। दीदी श्री नाथसिंह के संपादन में निकलने वाली महिलाओं से सम्बन्धित विशिष्ट पत्रिका है। इस वर्ष श्रीपतराय के संपादन में कहानी का प्रकाशन भी इलाहाबाद से आरम्भ हुआ, जिसका एक बहुत बड़ा विशेषांक भी अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है। कहानीके क्षेत्रमें यह पत्रिका अपना महत्व रखती है। माया और मनोहर कहानियाँ हिन्दीमें बिकने वाली सर्वाधिक मासिकों की भूमि भी इलाहाबाद ही है। बालकों के लिये बाल-सखा, शेर बच्चा तथा शिशु का प्रकाशन भी इलाहाबाद से होता है। लखनऊ से इस वर्ष युग-चेतना नामक अच्छे पत्र का प्रकाशन हुआ है। इसके संपादक हैं डा० देवराज। आगरा से नोक झोंक, सरस्वती संवाद, और साहित्य संदेश का प्रकाशन होता रहा। नोक-झोंक हास्य रस का विशिष्ट पत्र है। साहित्य-संदेश आलोचना प्रधान हिन्दी का विशिष्ट मासिक है। सरस्वती-संवाद छात्रोपयोगी तथा आलोचनात्मक लेख प्रकाशित करता है।

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल से ब्रज भारती का प्रकाशन होता है। दिल्ली से निकलने वाले मासिकों में आजकल सरकारी प्रकाशन है, जो विश्व दर्शनसे संयुक्त है। यद्यपि आजकलमें अनेक विशिष्ट लेख और कविताएँ निकलती हैं तो भी सरकारी पत्र होते हुए भी वर्गवाद को, लेखक विशेष को, भावना विशेष को, जितना प्रश्रय इस पत्रमें श्री देवेन्द्र सत्यार्थी के संपादकत्व में मिला है वह सरकारी पत्र के लिये किसी भी स्थिति और परिस्थिति में शोभनीय नहीं हो सकता। प्रकाशकों से किताबें लेकर आलोचना न करना तथा प्राप्ति स्वीकृति तक न देना इस पत्र की बहुत बड़ी विशेषता है। अब ऐसा आभास मिला है कि इस पत्र का नियमन संतुलित हाथों में संपादक मंडल बनाकर सौंप दिया गया है। यह शुभ लक्षण है। सरकार द्वारा प्रकाशित होने वाली बाल-भारती बच्चों के लिए अत्यन्त मूल्यवान पत्रिका है। इस वर्ष से पब्लिकेशन विभाग ने अच्छे रेडियो-वार्ताओं का संकलन भी त्रैमासिक रूप से 'प्रसारिका' के नाम से प्रकाशित करना आरम्भ किया है। प्रकाशन समाचार राजकमल द्वारा प्रकाशित होता है तथा श्री ओंमप्रकाश द्वारा संपादित। यह बड़े-बड़े प्रकाशकों के स्वार्थ विशेष के संरक्षण के लिये निकलने वाला हिन्दी का प्रमुख मासिक है। इसमें कुछ प्रकाशकीय सूचनाएँ प्राप्त होती रहती हैं। इस पत्र ने प्रकाशन सूची विशेषांक निकाला। राजकमल द्वारा प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका आलोचना, आलोचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व की है। इसके द्वारा हिन्दी आलोचना साहित्य की महती सेवा हो रही है। इस वर्ष के प्रकाशन

पत्रों में संसदीय हिन्दी परिषद द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा संरक्षित तथा आत्माराम एण्ड संस के श्री रामलाल पुरी द्वारा व्यवस्थित देवनागर पत्रिका वास्तव में हिन्दी-सेवा के बहुत बड़े संकल्प को लेकर आयी है। देवनागरी लिपि में विभिन्न भाषाओं का साहित्य तथा उसका अनुवाद यह प्रस्तुत कर रही है। यह त्रैमासिक पत्रिका अपने क्षेत्र की अकेली पत्रिका है तथा अत्यन्त गौरव पूर्ण भी है। हैदराबाद से निकलने वाले मासिक पत्र अजन्ता और कल्पना उच्च कोटि के साहित्यिक मासिक हैं। विश्व-ज्योति का प्रकाशन श्री विश्वबन्धु शास्त्री के संपादकत्व में होशियारपुर से होता है। राष्ट्र भारती हिन्दी के प्रमुख मासिकों में से है। इन्दौर से वीणा का प्रकाशन पूर्ववत होता रहा। इस साल दर्शन के ऊपर दार्शनिक नाम से श्री यशदेव शल्य के प्रबन्ध सम्पादकत्व में फरीद कोट से एक पत्र निकला। अर्थ और उद्योग के सम्बन्ध में निकलने वाले पत्रों में उद्योग गौरवपूर्ण ढंग से सेवा करता रहा। आर्थिक समीक्षा जो कांग्रेस कमेटी का मुख्य पत्र है तथा श्रीमन्नारायण अग्रवाल तथा हर्षदेव मालवीय द्वारा संपादित होता है, अर्थशास्त्र का उत्कृष्ट विशिष्ट तथा सुन्दर पत्र है। इसके द्वारा ग्रामोद्योग अंक का प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की मुख्य पत्रिका दक्षिण भारती है, पुस्तकालयों के विकास में व्यापक योगदान देने में बिहार ने नेतृत्व किया और वहाँ से 'पुस्तकालय जगत' और 'पुस्तकालय संदेश' नामक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

गोरखपुर से स्वास्थ्य सम्बन्धी पत्र आरोग्य का प्रकाशन होता है, जो प्रकृति चिकित्सा संबंधी हिन्दीकी मूल्यवान पत्रिका है। हिन्दी वांगमय का प्रकाशन भी वहाँ अभी हाल ही में आरम्भ हुआ। यह अपने ढंग की अच्छी पत्रिका है। अनुसंधान संबंधी विशिष्ट पत्रिकाओं में नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका, मरुभारती, अनुशीलन साहित्य, ब्रज भारती आदिका प्रकाशन होता रहा। काशी से निकलने वाले दो पत्र और भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में आपका स्वास्थ्य ऐतिहासिक महत्व की पत्रिका निकल रही है और चिनगारी ने इस साल नया रूप, नया रंग और नया आकर्षण धारण किया है, विचार से लेकर आवरण तक। धरती नामक एक और पत्रिका का प्रकाशन काशी से हुआ। अन्य मुख्य पत्रिकाएँ जो प्रायः निकलती रहीं, उनकी सूची यहाँ पर दी जा रही है।

पत्र पत्रिकाओं का विशेषांक : धर्मयुग का कहानी विशेषांक, कहानी का कहानी विशेषांक, नागरी प्रचारिणी सभा का हीरक जयंतिय अंक, आजकल का लोक कथा अंक, आलोचना का उपन्यास अंक नया समाज साहित्य अंक, अवन्तिका का काव्य लोचन अंक, नवनीत का दीपावली विशेषांक, प्रकाशन समाचार का सूची विशेषांक, व्यंकटेश समाचार पत्र का दीपावली विशेषांक, आर्थिक समीक्षा का ग्रामोद्योग अंक वर्ष के अच्छे विशेषांकों में से रहे हैं।

[पृष्ठ ४८ का शेषांष]

२३—हिन्दी न्यायतः देश की राष्ट्रभाषा, शांतिनिकेतन में नेहरू जी का भाषण।

२४—जयपुर हिन्दी परिषद का हरिभाऊ उपाध्याय की अध्यक्षता में १२ वाँ अधिवेशन।

२५—उत्तर प्रदेश में हिन्दी टाइपराइटर के भागों का निर्माण।

२६—सरकार और पत्रकारों के बीच सहयोग पर रविशंकर शुक्ल का भाषण। नई दिल्ली में हिन्दी के युग निर्माता स्वर्गीय द्विवेदी जी के चित्र का हिन्दी भवन में अनावरण समारोह, टंडन जी का भाषण।

२७—लखनऊ में पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी की ७४ वीं वर्ष गाँठ का आयोजन।

घटना-चक्र

जनवरी

१- बम्बई में श्री के० एम० मुंशी द्वारा सांस्कृतिक मेला का उद्घाटन। नागरी-प्रचारिणी-सभा का शिष्ट-मंडल कलकत्ते से हीरक-जयन्ती के लिए ३०००० ० लेकर बनारस आया

२– चेतसिंह संबंधी शिलालेखों के संशोधन के लिए।

३– टंडन-गुट का बांदा में उत्तर-प्रदेशीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन।

६– मध्यप्रदेशीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन भवन का पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा शिलान्यास नागपुर।

राष्ट्रपति द्वारा भारत रत्न की उपाधि की घोषणा (कला, साहित्य, विज्ञान अथवा लोक सेवा के लिए)। पद-विभूषण उपाधि की घोषणा।

१२– नागरी-प्रचारिणी सभा की हीरक जयन्ती एक मास के लिए स्थगित करने की घोषणा।

१३– श्री घनश्यामदास बिड़ला द्वारा प्राचीन-ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए नागरी-प्रचारिणी-सभा को २५००० रु० दान देने की घोषणा।

१४– मध्यप्रदेश और भोपाल सरकार का परस्पर सरकारी पत्र-व्यवहार देवनागरी लिपि में करने का निश्चय।

१५– गांजे की बनी रामायण पुस्तक।

१८– पटना। आचार्य कृपलानी द्वारा भाषा विषयक विवाद में कोई तत्व नहीं–घोषणा।

२३– विश्वमित्र के कर्मचारियों के पक्ष में कानपुर के औद्योगिक न्यायालय का फैसला।

२५– नयी दिल्ली। भारत सरकार ने सभी भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी के साहित्य की अभिवृद्धि के लिए एक योजना बनाई है।

योजना पर प्रकाश डालते हुए कल शिक्षा-मन्त्रालय की एक अधिसूचना में कहा गया है कि योजना का उद्देश्य हल्के साहित्य की वृत्ति से जनता की रक्षा करना है।

अधिसूचना में लेखकों तथा प्रकाशकों से अनुरोध किया गया है वे अपनी पुस्तक स्वीकृति के लिए प्रस्तुत करें। स्वीकार पुस्तकों की कमसेकम एक हजार प्रतियां भारत सरकार सामुदायिक विकास क्षेत्रों के लिए खरीदेगी। लेखक द्वारा हस्तलिखित रूप में या प्रकाशक द्वारा छपी हुई पुस्तक प्रस्तुत की जा सकती है।

स्वीकृत पुस्तकों में जो सर्वश्रेष्ट होगी उनपर भारत सरकार पुरस्कार देगी। यदि हस्तलिखित पुस्तक पर पुरस्कार देने का निर्णय किया गया तो वह पुस्तक छपने के बाद ही दिया जायेगा। पहले वर्ष कुल २० पुरस्कार दिये जायेंगे जिनमें ५ पुरस्कार एक-एक हजार रुपये के और शेष पांच-पांच सौ रुपये के होंगे। समस्त पुरस्कारों की घोषणा २ अक्तूबर १९५४ को हुई।

भारत-सरकार क्षेत्रीय-भाषाओं से हिंदी में या एक क्षेत्रीय भाषा से दूसरी क्षेत्रीय भाषा में अच्छी पुस्तकों के अनूदित करने को भी प्रोत्साहन देगी।

फरवरी

१—राष्ट्रभाषा प्रचार-सभा मार्टुंगा, बम्बई का उपाधि तथा पुरस्कार वितरणोत्सव। उद्घाटन कर्ता श्री एस० के० पाटिल। दीक्षान्त भाषणकर्ता श्री रामसहाय पंडया।

४—प्रयाग। हिन्दुस्तानी एकाडमी की रजत जयन्ती।

७—राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काशी का ८वां उपाधि वितरणोत्सव। सभापति हरगोविन्द सिंह, दीक्षान्त भाषण डा० सम्पूर्णानन्द। तुलसी पुस्तकालय की रजत-जयन्ती काशी।

८—काशी विद्यापीठ स्नातक-मंडल का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन पं० कमलापति त्रिपाठी के सभापतित्व में।

९—साहित्यकार संसद द्वारा पं० माखनलाल चतुर्वेदी को उनकी 'माता' पुस्तक पर साहु जगदीशप्रसाद पुरस्कार। पं० कमलापति त्रिपाठी द्वारा काशी में आयोजित कला साहित्य प्रदर्शनी का उद्घाटन। श्री मुंशी का रेडियो पर भाषण कि अंग्रेजी शिक्षा की उपेक्षा या तिरस्कार अपराध होगा। 'दिल्ली रेडियो से भाषण'।

११—पूर्वी पंजाब और पटियाला राज्य संघ के उच्च अफसर सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का निश्चय। उत्तर प्रदेश विधान सभा में काशी विद्यापीठ तथा राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के संबंध में विधेयक भविष्य में पेश होने की सूचना।

१२—प्रसाद-परिषद् द्वारा प्रसाद-मन्दिर में तुलसी-जयंती।

१४—मैसूर राज्य के प्राइमरी स्कूलों में कन्नड़ के साथ ही साथ देवनागरी लिपि के विकास की घोषणा। हैदराबाद, अखिल हैदराबाद हिन्दी-प्रचार सम्मेलन। मास्को से हिन्दी-रूसी कोष का प्रकाशन।

१६—हैदराबाद हिन्दी-प्रचार-सम्मेलन द्वारा हिन्दी मंत्रालय की मांग। नई दिल्ली। अंजुमन तरिक्कये उर्दू द्वारा राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद को उर्दू को उत्तरप्रदेश राज्य की क्षेत्रीय भाषा मानने के लिए पत्रक। लखनऊ विधान सभा में पं० गोविन्दवल्लभ पंत द्वारा उर्दू हिन्दुस्तानी को हिन्दी की शैली की घोषणा।

१७—नयी दिल्ली। डा० जाकिर हुसेन द्वारा पत्रकार सम्मेलन में उर्दू विश्वविद्यालय बनाने की मांग।

१६—उत्तर-प्रदेश विधान परिषदमें संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के लिए संस्कृत शब्दों को अपनाने के लिए गृह-मंत्री डा० सम्पूर्णानंद का समर्थन।

२२—नयी दिल्ली। श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा बजट भाषण में रेलवे बोर्ड के कार्यालय में एक हिन्दी-विभाग खोलने की सूचना। काशी। अरविन्द स्वाध्याय केन्द्र का चतुर्थ वार्षिकोत्सव। साहित्यिक संघ काशी का वार्षिकोत्सव।

२७—प्रकट हुआ कि एक लाख केन्द्रीय शिक्षा-सचिवालय कोष कार्य के लिए काशी नागरी-प्रचारिणी सभा को देगा।

२८—उत्तर प्रदेश विधान सभा में उर्दू को हिन्दी के समकक्ष रखने की मांग निराधार श्री गोविन्दवल्लभ पंत द्वारा घोषणा।

मार्च

१—संयुक्तराष्ट्र संघ की अध्यक्षा श्रीमती पंडित का बनारस रोटरी क्लब में सब काम हिन्दी में करने की अपील।

४—अहमदाबाद। बम्बई के शिक्षा-मंत्री श्री दिनकर राव की घोषणा। सन् १९५५ से राज्य के कालेजों के प्रथम वर्ष में हिन्दी के माध्यम द्वारा शिक्षा देना आरम्भ कर दिया जायेगा।

५—प्रौढ़ शिक्षा की पुस्तकों पर पुरस्कार की भारत सरकार की घोषणा।

६—काशी नागरी प्रचारिणी सभा की हीरक-जयन्ती आरम्भ। राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन। डा० सम्पूर्णानन्द स्वागताध्यक्ष। पंत जी द्वारा शुभाशंसा। डा० अमरनाथ झा द्वारा धन्यवाद। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम। उद्घाटन कर्ता हरगोविन्द सिंह, संयोजक सुधाकर पांडेय।

७—सभा हीरक जयंती महोत्सव। रविवार सौर २३ फाल्गुन ७ मार्च प्रातःकाल ८ बजे से। १. पं० रामनरेश त्रिपाठी, २. राष्ट्रभाषा सम्मेलन तथा विचारगोष्ठी, सभापति श्री रंगनाथ दिवाकर, उद्घाटक पंडित रविशंकर शुक्ल। (क) आवश्यक समस्याओं पर विचार, (ख) प्रस्ताव, (ग) संयोजक पंडित चन्द्रबली पांडेय।
रात्रि में ८ बजे से कवि गोष्ठी। सभापति श्री दिनकर। स्वागत भाषण पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी।

८—प्रातःकार ९ बजे से एशियाई भाषा सम्मेलन, सभापति उदयनारायण तिवारी। अपराह्न २ बजे से पत्रकार सम्मेलन, सभापति पंडित कमलापति त्रिपाठी। संयोजक श्रीरामचन्द्र रघुनाथ खाडिलकर। सायंकाल ४ बजे से साहित्य-गोष्ठी सभापति पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, उद्घाटन संयोजक डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा।

९—साहित्य विमर्श गोष्ठी में हीरक जयन्ती के अवसर पर बद्रीनाथ वर्मा तथा सुधांशु का भाषण—

१२—नयी दिल्लीमें प्रेस के आपत्तिजनक विषयक कानून की अवधि वृद्धि का सिद्धान्त मान्य तथा लोक-सभा का निर्णय।

१३—जबलपुर में मध्य-प्रदेशीय सरकार द्वारा क्षेत्रीय सरकार द्वारा एक लाख रुपये की निधि स्वीकृत।

१५—कानपुर में बाल-साहित्य प्रदर्शनी का यातायात मंत्री विचित्र नारायण शर्मा द्वारा उद्घाटन।

२१—बम्बई में ५५ से हिन्दी द्वारा बम्बई के विश्वविद्यालयों में शिक्षा की घोषणा।

१८—नयी दिल्ली में प्रेस संशोधन बिल संबंध में राज्य परिषद में बहस तथा संशोधित बिल स्वीकृत।

२४—लखनऊ में हिन्दी लेखकों को रु० १७३०० के पुरस्कार की घोषणा।

३०—उत्तर-प्रदेश में नयी देव-नागरी लिपि में ही पाठ्य-पुस्तकें छपेंगी।

अप्रैल

१—वैज्ञानिक कहानियों को पुरस्कृत करने की योजना। सम्पूर्णानन्द का १०००) की घोषणा।

३—मौलाना आजाद द्वारा हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थों की सूची तैयार करने का काम जारी होने के संबंध में सूचना।

७—जबलपुर। संसद में मुश्किल से १० प्रतिशत सदस्य हिन्दी में बोलने का साहस—डा० रघुबीर।

९—उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा देशी चिकित्सा ग्रन्थों पर पुरस्कार की घोषणा। केन्द्रीय द्वारा लेखकों की सहायता

११—सांस्कृतिक नागरिक-परिषद द्वारा काशी में ३० वर्ष बाद गुलाबबाड़ी का प्रत्यावर्तन।

१३—हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के पारितोषिकों की घोषणा।

१७—अन्नामलाई नगर। तृतीय अखिल-भारतीय-लेखक-समिति का उद्घाटन करते हुए पं० जवाहरलाल नेहरू ने बताया कि भाषा के प्रश्न को राजनीति में लाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

१६—अलीगढ़। जूनियर हाई स्कूल में क्षेत्रीय-भाषा के साथ साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी की शिक्षा अन्तिम तीन वर्षों में ली जानी चाहिये—डा० जाकिरहुसेन।

१८—गाजीपुर । पूर्वी जनपद-साहित्य-सम्मेलन का पं० कमलापति त्रिपाठी द्वारा शुभारम्भ ।
२१—पटना । राष्ट्र-भाषा-परिषद बिहार का तृतीय वार्षिक अधिवेशन । उद्घाटक : डा० राजेन्द्रप्रसाद
२७—विदर्भ साहित्य-संघ के नये भवन का उद्घाटन । नई दिल्ली हिंदी टेलीप्रिंटर के सफल प्रयोग की घोषणा ।

मई

२—पटियाला । हिंदी के विकास के लिए क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा न की जायेगी । डा० केसकर ।
लखनऊ, अखिल-भारतीय-संस्कृति-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन ।
७—नयी दिल्ली । कांग्रेस दल में हिंदी के प्रश्न पर चरचा ।
९—काशी । यूनेस्को में अनुवाद के लिए भारत-सरकार द्वारा रामायण तथा कामायनी का नाम प्रेषित ।
११—उत्तर प्रदेश-सरकार द्वारा कविवर निराला को सहायता की घोषणा । नई दिल्ली राज्य परिषद् में राष्ट्रीय पुस्तकालयों को चार पुस्तकें देने के लिए विधेयक स्वीकृत ।
१४—नई दिल्ली । हिन्दुस्तानी-कल्चर-सोसाइटी के संक्षिप्त हिंदी कोष के संबंध में शिक्षा-मन्त्रालय की गंभीर आलोचना ।
१६—नई दिल्ली । संसदीय कांग्रेस दल की बैठक में प्रधान मंत्री नेहरू द्वारा हिंदी के संबंध में भाषण ।
१७—प्रयाग । साहित्यकारों द्वारा हिंदी-मंत्रालय की मांग । बम्बई चलचित्र अकादमी का श्री पाटिल द्वारा शुभारम्भ ।
१९—हिन्दुस्तानी कल्चर-सोसाइटी को सहायता संबंधी अपना पहला उत्तर मौलाना आजाद को वापस लेना पड़ा ।

जून

११—नई दिल्ली और पटना के बीच हिंदी टेलीप्रिंटर चालू ।
१५—लन्दन में हिंदी-परिषद की स्थापना की सूचना ।
२०—डा० सुधीन्द्र का निधन । हिंदी शब्दसागर के परिवर्धित संस्करण का सभा द्वारा कार्यारम्भ ।
२५—काशी, असली-कोकशास्त्र अश्लील नहीं मजिस्ट्रेट का फैसला ।

जुलाई

२—हिन्दी की समृद्धि की चिन्ता करें, निराला जी के उद्गार ।
४—बम्बई में भाषा समाचार पत्र संघ के पदाधिकारियों का चुनाव ।
६—प्रथम हिन्दी टेलीप्रिन्टर सर्विस का उद्घाटन, दिल्ली और पटना के बीच उद्घाटन ।
११—करनूल में पट्टाभिसीतारामैया द्वारा आंध्र में हिन्दी अनिवार्य करने का विचार ।
१४—सरकारी नौकरियों में डिग्रियों की आवश्यकता नहीं—नेहरू जी ।
१५—बिहार में ५५ से हिन्दी में सार्टीफिकेट मिलेंगे ।
१६—रेलों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा । अखिल भारतीय टाइम टेबुल हिन्दी में छपेगा ।
१८—काशी के कलाकार रूस जाने के लिए आमन्त्रित ।
२०—नागरी प्रचारिणी सभा को हिन्दी विश्व कोष के निर्माणार्थ १० लाख रुपये का अनुदान निश्चित ।
२३—अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ द्वारा गुजराती में विश्व कोष प्रकाशित करने का निश्चय । मुख्य मंत्री गोविन्दवल्लभ पन्त द्वारा शिवसिंह सरोज की रसवन्ती रिहन्द पर ५०१ का पुरस्कार ।
२६—नयी दिल्ली में प्रेस आयोग की रिपोर्ट प्रकाशित । विभिन्न सुझाव ।

अगस्त

१—केन्द्रीय सरकार द्वारा निराला जी को १००) मासिक सहायता की घोषणा । लंदन में समाज वादी भूखण्ड में हिन्दी को मान्यता । स्टालिन पुरस्कार समारोह में प्रो० साहेबसिंह सोखे की प्रशंसा हिन्दी में ।
५—मथुरा में ऐतिहासिक स्थान की श्री कृष्णजन्मभूमि की खुदाई में गुप्तकालीन दो महत्व पूर्ण शिलालेखों की प्राप्ति ।
६—काशी विश्वविद्यालय के कुलपति अय्यर द्वारा हिन्दी साहित्य भंडार भरनेकी नितान्त आवश्यकता पर भाषण ।
६—नई दिल्ली में आकाश वाणी मास मनाने की घोषणा
७—लखनऊ में विदेशी भाषा के अध्ययनार्थ ३० छात्रवृत्तियों की घोषणा ।
८—नयी दिल्ली में प्रसिद्ध चीनी चित्रकार डोंग किंगमैन का आगमन । स्टालिन ग्राड में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी ।
१३—शिक्षामंत्रियों के सम्मेलन में अहिन्दी भाषी प्रान्तों में सरकारी कामों में हिन्दीको स्थान देनेके बारे में भाषण ।
१७—काशी में हिन्दी अभियान नहीं आत्मदान करती है, मैथिलीशरण का भाषण
१९—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कला विज्ञान तथा साहित्य सम्बन्धी मौलिक हिन्दी पुस्तकों पर पुरस्कार की घोषणा ।
२५—श्री जैनेन्द्रकुमार रेडियो दिल्ली की परामर्शदात्री समिति के सदस्य बने ।
३०—नयी दिल्ली केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा पुस्तक प्रतियोगिता तथा पुरस्कार की घोषणा ।

सितम्बर

७—माधुरी संपादक मातादीन शुक्ल का जबलपुर में निधन ।
८—लन्दन में भारतीयों की मूर्ति की इण्डिया हाउस में प्रदर्शनी ।
९—नयी दिल्ली में हिन्दी के समर्थन में संसदीय हिन्दी परिषद की द्वितीय वार्षिक बैठक में नेहरू जी के उद्‌गार
१४ मास्को—रूस में पहिली बार भारतीय फ़िल्मों का आयोजन । देश भर में हिन्दी-दिवस ।
१५—बम्बई-केन्द्र में हिन्दी मंत्रालय की मांग ।
१७—लखनऊ, सरकारी पत्रव्यवहार में हिन्दी को प्रमुखता गृहमन्त्री द्वारा तत्सम्बन्धी वक्तव्य ।
२१—गुजराती के प्रसिद्ध साहित्यकार रमणलाल वसन्तलाल देसाई का निधन ।
२४—लखनऊ, मुख्य मन्त्री श्री पन्त द्वारा कामकाज में हिन्दी के प्रयोग का आदेश ।
२४—नयी दिल्ली में लोक-सभा में हिन्दी कानून आयोग स्वीकृत ।
२७—सैंगान में हिन्दी की तरक्की का प्रलोभन वियत नाम सरकार द्वारा

अक्तूबर

१—मराठी सम्मेलन में नेहरू जी का भाषण—भारतीय भाषाओं को समृद्धिशाली बनाएँ ।
२—नयी दिल्ली में केन्द्रीय सरकार द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखित ३५ पुस्तकें पुरस्कृत ।
३—रेडियो मास के अन्तर्गत प्रतिदिन एक हिन्दी कहानी प्रसारित ।
५—अजमेर में सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार अजमेर की अदालती भाषा में हिन्दी का प्रयोग ।
११—दिल्ली लखनऊ के बीच हिन्दी टेलीप्रिंटर का श्रीगणेश ।
१५—नई दिल्ली । आकाश-वाणी द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में ३ नाटक पुरस्कृत । पारसनाथसिंह का देहान्त
१७—उत्तर-प्रदेश के पंचायत राज्य विभाग द्वारा लोक-गीतों का संग्रह ।
१८—बंगलोर श्रमजीवी पत्रकारों के बारे में निर्णय की डा० केशकर द्वारा घोषणा ।
२०—बम्बई में प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रभात-फेरी के हिन्दी गीतों पर पुरस्कार की घोषणा ।
२१—जार्ज टाउन—भारतीय लोक-गीतों का संग्रह ।
२३—लखनऊ में संस्कृत विश्वविद्यालयों के लिए विधेयक ।
२५—भारत कला भवन के अम्बिकाप्रसाद दुबे को अहिल्या नामक कलाकृति पर मैसूर-कला प्रदर्शनी में द्वितीय पुरस्कार ।
२९—दिल्ली में दस रेडियो कलाकारों को राजेन्द्रप्रसाद पुरस्कार वितरण ।

नवम्बर

६—बस्ती राज्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी आयोग की आवश्यकता पर नवीन जी का भाषण ।
८—प्रयाग में देवनागरी लिपि की मुद्रण कला सुधार विषयक अखिल भारतीय सम्मेलन की घोषणा ।
१०—ग्वालियर में हिन्दी पुस्तकों पर मध्य-भारत सरकार द्वारा पुरस्कार की घोषणा ।
१५—प्रयाग में देवनागरी के मुद्रण में सुधार सम्बन्धी सम्मेलन ।
१८—लखनऊ दिल्ली के बीच हिन्दी टेलीप्रिंटर सर्विस प्रारम्भ ।
२७—नई दिल्ली में शिक्षा मन्त्रालय द्वारा हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावलियों की सूचियां प्रकाशित ।

दिसम्बर

१—टेक्निकल शब्दों की अभिव्यक्ति के लिए परिष्कृत हिन्दी के विकास तथा उच्चकोटि की पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता के संबंध में डा० भटनागर का भाषण ।
२—पत्रकारों द्वारा देश भर में मांग-दिवस ।
३—नई दिल्ली में शिक्षा मंत्रालय द्वारा ३१०००) के १५ पुरस्कारों की लेखकों के प्रोत्साहनार्थ घोषणा ।
६—काशी में प्रसाद परिषद् के अन्तर्गत भारतीय साहित्यकार मंडल की आयोजना ।
१०—नयी दिल्ली में चीनी कलाकारों का दिल्ली में प्रथम कला-प्रदर्शन । भारी में गीता-जयन्ती समारोह ।
१४—नई उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा क्लैसिकल मेडिकल नामक आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ पर अत्रिदेव को १०००) का पुरस्कार ।
१५—बम्बई में एयर इंडिया के विमानों पर हिंदी में नामांकन ।
१६—अम्बाला में कुरुक्षेत्र में पंजाब सरकार द्वारा संस्कृत अध्ययन के लिए केन्द्र की स्थापना ।
२१—वित्तमंत्री मुहम्मद इब्राहीम द्वारा अदालतों में हिन्दी में काम होना विषयक घोषणा ।

[शेषांश पृष्ठ ४० पर देखें]

विभिन्न संस्थाएँ

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा

१–प्रकाशन:—

१. श्री कृष्ण जन्म स्थान का इतिहास । २. ब्रज का इतिहास (ब्रज जनपद का विस्तृत राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास अनेक मानचित्रों एवं चित्रों सहित) ३. ब्रज भारती' (त्रैमासिक पत्रिका) के चारों अंक ।

२–साहित्यिकगोष्ठियाँ:—

प्रमुख कवियों—सूरदास, ग्वाल, सत्यनारायण, गोस्वामी तुलसीदास जी, भारतेंदु आदि की साहित्यिक गोष्ठियाँ ।

३–सांस्कृतिक समारोह:—

जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण मेले का आयोजन ।

४–लोक साहित्य की शोध:—

'मंडल' द्वारा ब्रज के गांवों से एकत्र लोक-साहित्य की सामग्री का शोध-कार्य ।

ज्ञानलता मण्डल, बम्बई

(१) **प्रकाशन**:—

(१) 'ज्ञानधारा' नामक अर्धवार्षिक पत्रिका; (२) 'राष्ट्रभाषा-परिचय' भाग २; (३) 'गुजराती भाषा परिचय' भाग १ ।

(२) **राष्ट्रभाषा तथा प्रादेशिक कार्यों का प्रचार**:—

(१) सन्, ५४ में बम्बई में ३० अध्ययन केन्द्रों की स्थापना हुई । २०० कार्यकर्त्ताओं के द्वारा ४००० से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित । भारतीय विद्यापीठ के भारत भर में २०० केन्द्र स्थापित । (२) राष्ट्रभाषा के अलावा गुजराती, बंगला, कन्नड़ का प्रचार और बम्बई में इनके क्रमशः पाँच, एक, पाँच एक केन्द्रों की स्थापना सञ्चालन एवं परीक्षाएँ । (३) पुस्तकालय की स्थापना ।

सांस्कृतिक कार्य:—

(१) गणेशोत्सव, दुर्गापूजा, कालीपूजा समारोह व भाषण ।

भारतेन्दु साहित्य समिति, बिलासपुर (म० प्र०)

(१) **वार्षिक अधिवेशन**:—

(१) गोष्ठियाँ एवं विद्वानों के भाषण:—सदन्त आनन्द कौशल्यायन, डा० रामकुमार वर्मा, श्रीमती महादेवी वर्मा गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', भगवतीप्रसाद वाजपेयी, डा० बलदेवप्रसाद मिश्र आदि ।

(२) **शाहित्यिक-समारोह**:—

(१) कवि-सम्मेलन तथा तुलसी जयंती के अवसर पर मानस सप्ताह का आयोजन । (२) महामहोपाध्याय स्वर्गीय भानु कवि की जयन्ती का आयोजन । (३) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रदेशीय अध्यक्ष श्री बियारती का अभिनन्दन ।

(३) **सांस्कृतिक समारोह**:—

(१) शरदपूर्णिमा पर शरदोत्सव ।

श्री भगवानदीन साहित्य विद्यालय, बनारस

विद्यालय ने १९५२ से विश्वविद्यालय के हिन्दी एम०, ए० के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पठन-पाठन की व्यवस्था।

विद्यालय में विगत दस वर्षों से विभिन्न प्रान्तों के आने वाले विद्यार्थियों की संख्या।

उत्तर-प्रदेश ७५४, विहार ७७, मद्रास २४, आन्ध्र ३, हैदराबाद ४, मैसूर १०। मारिशस १, मलावार १, नैपाल ५, राजस्थान ६, मध्यभारत १२, बम्बई ४, विन्ध्यप्रदेश ३, सौराष्ट्र ४, और मध्यभारत २६।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यापीठ, हजरतगंज, लखनऊ

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यापीठ, लखनऊ की स्थापना सन् १९४२ ई० में हुई थी, उस समय से आज तक विद्यापीठ भारतवर्ष तथा विदेश में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रही है। दिसम्बर '५४ तक विद्यापीठ के ३६६ परीक्षा केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। विद्यापीठ के अन्य विभागों का कार्य-विवरण इस प्रकार है:-

१-परीक्षा विभाग--विद्यापीठ की ओर से प्रतिवर्ष विभिन्न विभागीय परीक्षाएँ तथा उपाधियों का वितरण भी होता है। सन् १९५४ में उत्तर-प्रदेशीय हाई स्कूल बोर्ड ने विद्यापीठ की मध्यमा परीक्षा को स्वीकृत भी कर लिया था; पर बोर्ड की नियमावली से नियम ७ निकाल दिए जाने के कारण से सभी हिन्दी संस्थाओं की मान्यता ही समाप्त हो गई। गत वर्ष विद्यापीठ की परीक्षाओं में ११ हजार परीक्षार्थी सम्मिलित हुए तथा ब्रह्मा, फिजी, द० अमेरिका आदि स्थानों से काफी परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। सम्भवतः विद्यापीठकी परीक्षाओं में जितने अधिक मुसलिम परीक्षार्थी भाग लेते हैं, इतने किसी भी अन्य संस्था में परीक्षार्थी नहीं हुआ करते।

२-प्रचार विभाग--गत वर्ष विद्यापीठ ने फिजी, मारीशस तथा द० अमेरिका में हिन्दी की पुस्तकें भेजी, तथा दक्षिण भारत में विद्यापीठ के प्रचारकों ने १५ रात्रि पाठशालाएँ खोली, जिनमें हिन्दी पढ़ाने का कार्य सम्पन्न हुआ। विद्यापीठ की ओरे से एक साप्ताहिक पत्र युग-भारती भी प्रकाशित हुआ करता है।

३-शिक्षण कला विभाग--विद्यापीठ ने देहली में २, लखनऊ में १, आगरा में १ तथा ब्रह्मा में २ विद्यालय खोले जिनमें हिन्दी के माध्यम से विद्यार्थियों को ट्रेनिंग दी जाती है, इस वर्ष इन विद्यालयों में लगभग ३०० विद्यार्थी विभिन्न कक्षाओं की ट्रेनिंग ले रहे हैं। इस योजना को अत्यधिक सुसंगठित बनाने का कार्य चालू है।

४-प्रकाशन विभाग--इस विभाग द्वारा गत वर्ष ८ पुस्तकें प्रकाशित की गई, इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि हिन्दी साहित्य में समीक्षात्मक पुस्तकें कम मूल्य में प्रकाशित करते हुए जनता को हिन्दी के सम्बन्ध में अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा दी जावे।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

इस सभा की स्थापना सन् १९१८ में हुई। महात्मा गांधी इस सभा के संस्थापक हैं। वे आजन्म अध्यक्ष थे। उनके स्वर्गारोहण के बाद, बाबू राजेन्द्रप्रसाद अध्यक्ष बने। श्री मो० सत्यनारायण प्रधान मंत्री हैं तथा श्री रामचन्द्र शास्त्री शिक्षा मन्त्री हैं।

१. सभा दक्षिण के विद्यार्थियों के लिये हिन्दी सीखने का उपयोगी साहित्य प्रकाशित करती है।

२. अध्यापकों को तैयार करने के लिये 'प्रचारक विद्यालय' सभा चलाती है।

३. सभा को क्रमबद्ध रूप से परीक्षा-मंत्री चलाते हैं। विशारद विद्यालय भी चल रहा है।

४. सभा की 'विशारद' उपाधि तथा 'प्रचारक' सनद को दक्षिण के राज्यों ने मान्यता दी है।

५. सभा मद्रास में एक बड़ा पुस्तकालय भी चला रहा है।

६. सभा के अधीन एक बड़ा छापाखाना है।

७. दक्षिण भारत' तथा 'प्रचार समाचार' नामक दो मासिक पत्रिकाएँ भी सभा चलाती है।

सन् १९५४ ई० में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं:--

१. "राष्ट्र-भाषा पद्य-संग्रह" २. "अस्सी दिन में दुनियाँ की सैर" ३. "कथाकुंज" ४. "हिन्दी मंजरी (पाँच भाग)।

दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचारसभा, मद्रास द्वारा संचालित

मद्रास महिला विशारद विद्यालय

उद्देश्य:—

मद्रास में सभा के अहाते में केवल महिलाओं के लिए एक विशारद विद्यालय ता० १ मई १९५४ से २८ फरवरी १९५५ तक चलाया जायगा। महिलाओं को विशारद पाठ्य-क्रम के अनुसार क्रमबद्ध शिक्षण देना विद्यालय का उद्देश्य रहेगा।

हिन्दी प्रचारक विद्यालय का उद्देश्य स्कूलों में राष्ट्रभाषा का अध्यापन करने के लिए और दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार करने के लिए ऐसे योग्य शिक्षक तथा प्रचारक तैयार करना है, जो शिक्षणकला तथा हिन्दी साहित्य के विशेष अध्ययन के साथ देश की वर्तमान परिस्थिति से परिचित होकर राष्ट्र की नयी पीढ़ी के निर्माण में सहायक बन सकें।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के गिरते हुए स्तर को देखते हुए यह आवश्यक मालूम होता है कि राष्ट्रभाषा प्रवीण परीक्षा में बैठनेवालों के लिए क्रमबद्ध शिक्षण आवश्यक बनाया जाय। यह शिक्षण संगठित विद्यालयों के द्वारा प्राप्त हो, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रवीण विद्यालय जगह-जगह संगठित किये जाएँगे।

प्रान्तीय सभाओं का पता:—

१. नगर कार्यालय, हिन्दी प्रचार सभा, १३।१४, सेकण्ड लाइन बीच, जी० टी०, मद्रास। २. आन्ध्र राष्ट्र हिन्दी प्रचार संघ, एलूर रोड, विजयवाड़ा। ३. तमिलनाडु हिन्दी प्रचार सभा, तेन्नूर, तिरुच्चिरापल्ली। ४. केरल हिन्दी प्रचार सभा, त्रिप्पूणित्तुरा, तिरु-कोच्चि। ५. कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा, स्टेशन रोड, धारवाड़। ६. हैदराबाद हिन्दी प्रचार संघ, १२, महाभूपाल मंजिल, जामबाग, मार्केट रोड, हैदराबाद।

हिन्दी-भवन शान्ति निकेतन

हिन्दी भवन का उद्घाटन पन्द्रह वर्ष पहले पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया था। सन् १९५४ में विश्व भारती ने हिन्दी बी०ए० आनर्स और एम० ए तथा निम्न कक्षाओं में हिन्दी की अनिवार्य शिक्षा।

शान्ति निकेतन के अहिन्दी भाषा भाषियों के लिए हिन्दी की व्यवस्था तथा विदेशी छात्रों के लिए हिन्दी डिप्लोमा परीक्षा।

अनुसंधान कार्य

अध्यापक श्री राम पूजन तिवारी ने जायसी के 'पद्मावत' पर श्री शिवनाथ जी हिन्दी भाषा के विकास पर तथा श्री मोहन लाल वाजपेयी द्वारा अंग्रेजी में हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।

प्रकाशन कार्य

श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर की ग्रन्थावली का बंगला से हिन्दी में अनुवाद तथा डा० हजारी प्रसाद जी की पुस्तक 'कबीर पंथी' के प्रकाशन की व्यवस्था।

पुस्तकालय

हिन्दी भवन में छोटा-सा पुस्तकालय है।

सुहृद् संघ, मुजफ्फरपुर

साहित्य-विभाग

९ गोष्टियां, मरे हुए साहित्यिकों की जयंती। सरकार का हिन्दी की ओर ध्यान दिलाना, कोर्स की किताबों में त्रुटियों पर ध्यान आकृष्ट, बिहारी साहित्यकों पर प्रामाणिक ग्रन्थ, साहित्य प्रचार के लिए देहातों में ७ सामाजिक केन्द्र, व्ययस्कों

की शिक्षा, वर्ष में दो सामाजिक समारोह, साप्ताहिक भाषण, अहिन्दी भाषा भाषी कर्मचारियों को हिन्दी शिक्षा, उत्तमा और मध्यमा परीक्षार्थियों को सहायतार्थ पुस्तकें ।

२—पुस्तकालय

उच्चकोटि का पुस्तकालय, बिहार सरकार की मान्यता, इस वर्ष ३०५ दिन खुला ।
४५ पत्र पत्रिकाओं का आना, पुस्तकालय से चलने वाले पुस्तकालय की व्यवस्था, तथा नित्य पाठकों की संख्या १०० ।

३—शिशुमण्डल

गत चार वर्ष पूर्व स्थापना, सदस्यों की संख्या ५००, दैनिक बच्चों की उपस्थिति १५०, शिशु पुस्तकालय, खेल, कूद, व्यायाम व्यवस्था, शिशुओं की साप्ताहिक, मासिक गोष्ठियां, स्वतन्त्रता दिवस पर शिशुओं का नाटक, बच्चों के उद्यान की व्यवस्था, राष्ट्रपति ने भाग लिया, १४ नवम्बर को शिशु-दिवस मनाया गया । बच्चों की मासिक पत्रिका "कलरव" प्रकाशित, तथा बच्चों के स्थायी स्कूल की व्यवस्था ।

४—महिला-मण्डल

महिलाओं के लाभार्थ चलता पुस्तकालय, महिलाओं में पुस्तकों का निःशुल्क वितरण, महिलाओं की ७ गोष्ठियां, तथा इसकी १५५ सदस्या ।

५—सांस्कृतिक-विभाग

बच्चों को संगीत, नृत्य की शिक्षा, स्वतन्त्रता दिवस पर राज्य भवन में सुन्दर प्रदर्शन तथा पारितोषिक वितरण ।

साहित्य परिषद, सीवान

साहित्य परिषद सीवान स्थापना सन् १९४१ में तुलसी जयंती के अवसर पर । प्रथम सभापति प्रो० श्री काला सिंह 'केसरी' और प्रथम प्रधान मंत्री श्री सन्त कुमार वर्मा । वर्त्तमान सभापति श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव एम. एल. ए. और प्रधान मंत्री श्री सन्त कुमार वर्मा बी. ए. एल. एल. बी. विशारद ।

वर्ष के कार्यक्रम

१– वसन्त पंचमी उत्सव तथा कवि सम्मेलन८ फरवरी १९५४ ।
२– "आगमन" मासिक स्थानीय साहित्यकों के सहयोग से मई १९५४ से परिषद के तत्वावधान में साहित्य के मासिक का सम्पादक सर्व श्री सन्त कुमार वर्मा और मणिशंकर श्रीवास्तव तथा प्रबन्ध सम्पादक श्री अच्छयवर दीक्षित ।
सूर जयंती परिषद की ओर से गत ७ मई १९५४ को सूर जयंती श्री सन्त कुमार वर्मा के सभापतित्व में मनाई गई ।
तुलसी जयंती परिषद की ओर से गत ६ अगस्त १९५४ को तुलसी जयंती ।
कवि गोष्ठि गत १५ अगस्त १९५४ को परिषद के तत्वावधान में एक सफल कवि गोष्ठि श्री कामेश्वर प्रसाद एम. ए. के सभापतित्व में ।
हिन्दी दिवस गत १५ सितम्बर को प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आदेशानुसार यहाँ परिषद की ओर से हिन्दी-दिवस बड़ी धूम-धाम से श्री कामेश्वर प्रसाद एम. ए. के सभापतित्व में मनाया गया ।

गांधी-जयंती

गत २ अक्टूबर को परिषद की ओर से गांधी जयंती मनायी गई ।

राजेन्द्र-जयन्ती

गत ३ दिसम्बर को साहित्य परिषद की ओर से राजेन्द्र जयंती श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव एम० एल० ए० के सभापतित्व में मनायी गई ।

युवक साहित्यकार संघ, नया पुरा, धार (मध्यभारत)

युवक साहित्यकार संघ स्थापना श्री महेन्द्र भटनागर तथा कुछ लेखकों के सहयोग से १९५४ में। अध्यक्षा–श्री मती सुधा-रानी ।

इस वर्ष श्री महेन्द्र भटनागर के "अन्तराल" का प्रकाशन।

हिन्दी साहित्य परिषद्

राठ (हमीरपुर)

१- परिषद गत १२ वर्षों से हिन्दी-साहित्य की सेवा में रत हैं। सन् १९५४ में परिषद द्वारा दो कवि सम्मेलन के आयोजन में भाग लेनेवाले कवि रमई काका,श्री दिवाकर, श्री कैलाश बाजपेयी, श्री दीक्षित, श्री उमेश, श्री दिनेश। मुख्य सांस्कृतिक पर्वों तथा उत्सवों पर साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन। एक कवि-दरबार हिन्दी के प्रतिनिधि कवियों का।

परिषद की आगामी योजना है बुन्देलखंडी लोक साहित्य एवं संस्कृति का संकलन।

२– बुन्देलखंड साहित्य परिषद कबरई भी बुन्देलखंड की एक प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था है, जिसका अपना परीक्षा-विभाग है और 'साहित्यालंकार' 'साहित्य पल्लव' 'साहित्य सुमन' और साहित्य सौरभ 'परिक्षाएं संचालित'। आयुर्वेद की भी परीक्षाएं। अभी दिसम्बर में विन्ध्य प्रदेश के वित्त मंत्री माननीय महेन्द्र कुमार मानव की अध्यक्षता में चरखारी-अधिवेशन परिषद के तत्वावधान में किया गया।

परिषद की आगामी योजना है बुन्देलखंड के साहित्यिकों के लिए एक केन्द्रीय प्रेस की स्थापना।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी

उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

यह उत्तर प्रदेश सरकार के संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था मुख्य तथा प्रकाशन का ही कार्य करती है।

प्रकाशन–५४-५५

१. हिंदी भाषा का इतिहास (पुनर्मुद्रण) ले० डा० धीरेन्द्र वर्मा मूल्य १०)। २. हिंदी भाषा और लिपि (पुनर्मुद्रण) ले० डा० धीरेन्द्र वर्मा मू० १)। ३ अमीरी और गरीबी (पुनर्मुद्रण) ले०•सेठ गोविंद दास मू० २) ४. तुलसी शब्द सागर संग्रह ६. कुछ आधुनिक आविष्कार ले० डा० सत्य प्रकाश मू० ५) ७. हिंदुई साहित्य का इतिहास ले० गार्सा द तासी अनु० डा० श्रीलक्ष्मीसागर वार्ष्णेय मू० ७) ८. ब्रज भाषा ले० डा० धीरेन्द्र वर्मा मू० ६) ९. हिंदी कथा-कोषमू० ३) १०. हिंदी वीर काव्य (१६००-१८००) ले० डा० टीकमसिंह तोमर मू० १२) २१. सिंधु सभ्यता ले० सतीशचन्द्र काला मू० ५)

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का कार्यारम्भ सन् १९५० ई० के जुलाई मास में हुआ। परिषद् का उद्घाटन-समारोह ११ मार्च, १९५१, रविवार के अपराह्न में बिहार राज्य के तत्कालीन राज्यपाल श्री माधव श्री हरि अणे के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पिछले तीन वर्षों में परिषद् के उद्घाटनोत्सव के अतिरिक्त दो वार्षिकोत्सव भी हुए हैं। दो विस्तृत वार्षिक कार्य-विवरण भी प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम-वार्षिकोत्सव (३० मार्च १९५२ ई० रविवार) बिहार राज्य के वित्तमन्त्री डा० अनुग्रहनारायण सिंह के तथा द्वितीय वार्षिकोत्सव (२२ मार्च, सन् १९५३ ई० रविवार) डा० धीरेन्द्र वर्मा (प्रयाग-विश्व-विद्यालय) के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। सभी महोत्सवों के स्वागताध्यक्ष परिषद् के स्थायी सभापति बिहार राज्य के माननीय शिक्षा मंत्री आचार्य बद्रीनाथ शर्मा हुए थे।

परिषद् के मुख्य कार्य हैं––ग्रन्थ प्रकाशन, प्राचीन हस्तलिखित एवं दुर्लभ मुद्रित ग्रन्थों का शोध; लोक-भाषानुसंधान तथा अनुशीलन-पुस्तकालय। इनके अलावा बिहार के वयोवृद्ध साहित्यिकों, सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ-लेखकों और उदीयमान साहित्यकारों को पुरस्कृत करके सम्मान तथा प्रोत्साहन प्रदान करना एवं प्रत्येक वर्ष विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा भाषण कराना भी परिषद् का कार्य है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट विद्वानों द्वारा निबन्ध पाठ का भी आयो-

जन किया जाता है । इसके साथ ही भिन्न-भिन्न विषयों के सर्वश्रेष्ठ लेखों पर कालेज के छात्रों को पुरस्कार दिये जाते हैं । परिषद् की ओर से साहित्यिक संस्थाओं को मौलिक रचनाओं के प्रकाशन के लिए आर्थिक अनुदान भी दिये जाते हैं।

परिषद् के पिछले वर्षों में प्रकाशन-विभाग की ओर से निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके थे--(१) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, काशी विश्वविद्यालय); (२) यूरोपीय दर्शन (स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा); (३) विश्वधर्म-दर्शन (श्री सावलियाबिहारी लाल वर्मा, एडवोकेट); (४) हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन (डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, काशी विश्वविद्यालय) और (५) सार्थवाह (डा० मोतीचन्द्र, प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई) ।

'प्राचीन हस्तलिखित एवं दुर्लभ ग्रन्थ-शोध विभाग' द्वारा पिछले वर्षों में ६३३ हस्तलिखित पोथियाँ, ५० मुद्रित अलभ्य पुस्तकें तथा ६० दुर्लभ पत्र-पत्रिकाएँ संगृहीत हो चुकी थीं । इस विभाग ने प्रान्त के विभिन्न पुस्तकालयों से १५८ हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों का विवरणात्मक परिचय भी तैयार किया था, जिनमें से त्रैमासिक 'साहित्य' में ६८ पोथियों का विवरण प्रकाशित कर दिया गया है ।

'लोकभाषानुसंधान विभाग' ने भी पिछले वर्षों में भोजपुरी, मैथिली और मगही के ३८०३५ शब्द संगृहीत किये, जिनमें ३३२८६ पारिभाषिक शब्द थे। इनमें से ३१५०० शब्दों की कार्ड सूची भी तैयार कर ली गई थी। इसके अलावा इन वर्षों में इस विभाग ने बिहार की विभिन्न बोलियों के १३६७ लोकगीत, ३३४७ कहावतें, ७०९ पहेलियाँ और ६८५ मुहावरे आदि एकत्र कर लिये थे।

परिषद्-पुस्तकालय में भी पिछले वर्षों में ४२०० दुर्लभ तथा नये प्रामाणिक ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकाओं की बहुमूल्य फाइलें सँजोई जा चुकी थीं । इस अनुसंधान-पुस्तकालय से इन वर्षों में कालेज के प्राध्यापकों और पोस्ट-ग्रेजुएट विद्यार्थियों ने काफी लाभ उठाया ।

पिछले वर्षों में बिहार के निम्नलिखित वयोवृद्ध साहित्यिक डेढ़-डेढ़ हजार रुपये से पुरस्कृत हो चुके हैं--श्री ब्रजनन्दन सहाय (आरा), साहित्य वाचस्पति पं० रामदहिन मिश्र (आरा) और श्री रघुवीरनारायण (छपरा) । एक-एक हजार रुपये, निम्नलिखित ग्रन्थों पर, उनके लेखकों को पुरस्कार के रूप में दिये गये हैं--उत्तर भारत की सन्तपरम्परा (पं० परशुराम चतुर्वेदी (बलिया), सांख्य शास्त्र का इतिहास (श्री उदयवीर शास्त्री, कनखल हरद्वार); जगतसेठ (श्री पारसनाथ सिंह, सारन) और प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति (डा० अनन्त-सदाशिव अलतेकर, पटना-विश्वविद्यालय) । उदीयमान साहित्यिकों को पाँच-पाँच सौ रुपये के प्रोत्साहन-पुरस्कार दिये गये थे--श्री हंसकुमार तिवारी (गया), श्री रामदयाल पाण्डेय (शाहाबाद) और श्री पोद्दार रामावतार अरुण (समस्तीपुर, दरभंगा)। पिछले वर्षों में २२ छात्रों को भी एक-एक सौ रुपये के पुरस्कार दिये जा चुके हैं। और एक सौ रुपये के पुरस्कार में से पचास-पचास दो लड़कों में बाँट दिये गये थे।

निम्नलिखित साहित्यिक संस्थाओं को मौलिक साहित्य के प्रकाशन आदि के लिए निम्नांकित रकम अनुदान में दी गई है--

(१) पूर्णिया जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को स्वर्गीय 'द्विजदेनी' कवि की ग्रन्थावली के संग्रह और प्रकाशन के लिए १५००)

(२) आरा नागरी-प्रचारिणी-सभा को 'मैथिल कोकिल विद्यापति' नामक ग्रन्थ के नवीन संस्करण प्रकाशित करने के लिए २०००)

(३) अखिल भारतीय हिन्दी-शोधमंडल (पटना) को 'हिन्दी के प्रतिनिधि कथाकार' और हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार' नाम की दो मौलिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए १७५०)

(४) साहित्यकार-संसद (प्रयाग) को 'बिहार-ग्रन्थ-मालिका-सीरीज' प्रकाशित करने के लिए ४०००)

(५) पटना-कालेज की हिन्दी-साहित्य-परिषद को, उसमें पठित निबन्धों के संग्रह प्रकाशित करने के लिए १०००)

(६) बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतियों के भाषणों को ग्रन्थकार रूप में प्रकाशित करने के लिए ३०००)

(७) मुजफ्फरपुर के 'सुहृद्-संघ' को मैथिली लोकगीत संग्रह' के प्रकाशनार्थ १०००)

(८) विश्वभारती शान्ति-निकेतन को डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'कबीरपंथी-साहित्य' नामक ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ १४००)

(९) पटना मेडिकल कालेज की चिकित्सा-विज्ञान-परिषद को चिकित्सा-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य के प्रकाशन के लिए ५००)

(१०) बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को त्रैमासिक 'साहित्य' के प्रकाशन में सहायतार्थ १०००.)

(११) काशी विश्वविद्यालय की हिन्दी जनपदीय परिषद को लोक-साहित्य के प्रकाशन के लिए ५००)

(१२) वैशाली-संघ, मुजफ्फरपुर को वैशाली की खुदाई का सचित्र पुरातत्त्व-विवरण हिन्दी में प्रकाशित करने के लिए ७५०)

निम्नलिखित विद्वानों ने अधोलिखित विषयों पर भाषण किये हैं:—

(१) भोजपुरी भाषा और साहित्य (प्रकाशित)—डा० उदयनारायण तिवारी

(२) साहित्य और संस्कृति—श्रीमती महादेवी वर्मा

(३) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (प्रकाशित)—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(४) हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन (प्रकाशित)—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

(५) सार्थवाह (प्रकाशित)—डा० मोतीचन्द्र

(६) वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा (प्रकाशित)—डा० सत्यप्रकाश

(७) रबर (प्रेस में)—श्री फूलदेव सहाय वर्मा

(८) शासन-व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त (प्रेस में)—श्री गोरखनाथ सिंह

भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं पर निम्नलिखित विद्वानों ने निबन्ध-पाठ भी किये हैं। ये निबन्ध मुद्रित और सर्वजनसुलभ हैं—

(१) उत्कल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—श्री राय बहादुर आर्तवल्लभ महन्ती, कटक

(२) गुजराती भाषा और साहित्य—पं० केशवराम-काशीराम शास्त्री, अहमदाबाद

(३) मराठी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—श्री प्रो० अरविन्द मंगरुलकर एम० ए०, पूना

(४) तेशुगू भाषा और साहित्य—डा० जी० बी० सीतापति, मद्रास

(५) मलयाला साहित्य—श्री पी० बी० कृष्ण नायर, एम० ए०, एर्नाकुलम्

(६) मगही भाषा साहित्य—श्री कृष्णदेव प्रसाद, एम० ए०, बी० एल०, पटना

(७) कन्नड साहित्य—श्री सिद्धवन हल्लीकृष्ण शर्मा, बंगलोर

(८) मैथिली भाषा और साहित्य—श्री महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र, दरभंगा

(९) राजस्थानी भाषा और साहित्य—प्रो० बदरीदत्त शास्त्री, हजारीबाग-कालेज

परिषद् का तृतीय वार्षिकोत्सव

ता० २१ अप्रैल १९५४ई० (वैषाखकृष्ण तृतीया सं०२०११) बुधवार को ९ बजे प्रातःकाल हिंदी साहित्य सम्मेलन भवन में हुआ ।

उद्घाटनकर्त्ता— राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद मनोनीत सभापति — आचार्य नरेन्द्रदेव ।

परिषद् के अध्यक्ष आचार्य बदरीप्रसाद वर्मा ने एक स्वागत् भाषण किया, जिसमें उन्होंने निम्न बातों पर जोर दिया ।

(क) हिंदी से लिखित विभिन्न विषयों के प्रामाणिक ग्रन्थों के प्रणयन के लिए पुरस्कार प्रदान ।

(ख) अन्य भाषाओं के महत्वपूर्ण साहित्यिक और वैज्ञानिक ग्रन्थों का हिंदी रूपान्तर करना तथा उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना ।

(ग) साधारणतः विहार की तथा विशेष अवस्था में राज्य सरकार की स्वीकृति से भारत के अन्य राज्यों की साहित्यिक संस्थाओं

अथवा सम्पादन समितियों को आर्थिक सहायता देकर हिंदी तथा बिहार की प्रचलित भाषाओं में मौलिक एवं अनूदित ग्रन्थों के प्रकाशन को प्रोत्साहन-प्रदान करना ।

(घ) साहित्यिक तथा सांस्कृतिक महत्व के लोक-साहित्य के प्रकाशन का प्रबन्ध करना ।

(ङ) बिहार की प्रचलित विभिन्न बोलियों के साहित्य एवं वैज्ञानिक स्वरूप तथा हिंदी के साथ उनके सम्बन्धके विषय में अध्ययन को प्रोत्साहन ।

(च) विभिन्न विषयों के विभिन्न विशिष्ट विद्वानों को हिंदी में ऐसे विषयों पर भाषण करने पर तथा व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करना जिनमें उन्होंने विशेषता प्राप्त की हो और उन भाषणों तथा व्याख्यानों को सम्पादित कर ग्रन्थाकार प्रकाशन ।

(छ) महत्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित पोथियों और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व की दुर्लभ प्रकाशित पुस्तकों के अन्वेषण तथा प्रकाशन की समुचित व्यवस्था ।

इन उद्देश्यों तथा कार्यक्रम के अनुसार परिषद् अपने तीन वर्ष के अल्पकालीन जीवन में राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन में सतत सचेष्ट रही है ।

अब तक के परिषद के कार्य---११ ग्रन्थों का मुद्रण अनूदित हो रहे हैं। १० पाण्डु लिपियाँ प्रेस में । आचार्य शिवपूजन सहायजी की समस्त रचनाओं का संग्रह करने का प्रयास ।

वयोवृद्ध साहित्यकारों को १५००) का सम्मान पुरस्कार नये लेखकों को ५००) का साहित्य के पुरस्कार देने की घोषणा ।

श्री ब्रजनन्दन सहायक 'ब्रजवल्लभ' पं० रामदीन मिश्र और श्री रघुवीर नारायण जी को वयोवृद्ध साहित्यिक पुरस्कार मिला ।

श्री हंसकुमार तिवारी, श्री रामदयाल पाण्डेय श्री पोद्दार रामावहार 'अरुण' को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला ।

आठ विद्यार्थियों को निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला ।

अब तक इस परिषद से चार व्यक्तियों को इनकी रचनाओं पर एक-एक हजार रुपये का पुरस्कार मिला । इस साल राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्म कथा' पर यह पुरस्कार मिला ।

खोज के कार्य---

७७३ हस्तलिखित पोथियाँ, ७७ अलभ्य मुद्रित पुस्तकें तथा २७८ दुर्लभ पत्र-पत्रिकाएँ । विभिन्न पुस्तकालय से १५८ हस्तलिखित पोथियों का विरणात्मक परिचय । १५५ प्राप्य ग्रन्थों के विवरण प्रकाशित हो चुका । विभिन्न लोगों के पास २८१३ ग्रन्थों की सूचना मिली । पचीस अज्ञात कवि तथा साहित्यिकों का पता चला । ५००० पुस्तकें ५०० पत्र-पत्रिकाएँ जो दुर्लभ हैं, संग्रहीत की गयीं । जो विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों के सम्बन्ध में ह ।

खोज के कार्य---भोजपुरी, मैथिली और मगही के--४७५६२ शब्दों, ४१४१ लोकगीतों, १५० लोक कथाएँ ४७४२ कहावतों २०१८ मुहावरों और ६६३ पहेलियों का संकलन हुआ । ३४५१२ पारिभाषित शब्दों की कार्ड सूची तैयार की गयी है ।

सुपरिचित---संस्था भारतीय-हिन्दी परिषद का ग्यारहवाँ अधिवेशन परिषद् और पटना विश्वविद्यालय स्वम् बिहार विश्वविद्यालय के सम्मिलित तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ । अधिवेशन की अध्यक्षता श्री कन्हैयालाल माणिकलालमुंशी ने की।

परिषद के आग्रह पर गुजराती, उत्कल, मराठी कन्नड़, तेलगू, मलयालम, राजस्थानी मगही और मैथिली भाषाओं के प्रतिनिधियों ने अनुरोध स्वीकार कर संक्षिप्त भाषण किये हैं उन्हें इस परिषद ने प्रकाशित किया । इस वर्ष का पश्चिम बंगाल राष्ट्रभाषा प्रयाग समिति के मंत्री श्री रेवती रंजन सिन्हा का 'बंग साहित्य और भाषा' पर तथा नेपाल सरकार के शिक्षा सचिव श्री रुद्रराज पाण्डेय का 'नेपाली साहित्य' और भाषा पर भाषण होने वाला है ।

नागरी प्रचारणी सभा, काशी

हस्तलिखित ग्रंथों की खोज-विवरण तथा पुस्तकाकार प्रकाशन---

सन् १९२६ से २८, सन् १९२९-३१, सन् १९३२-३४, सन् १९३५-३७ तक की खोज का त्रैवार्षिक विवरण अंग्रेजी से हिन्दी में रूपान्तरित करके प्रकाशन ।

साहित्य-विभाग के अन्तर्गत प्रकाशन---

(क) 'आकर-ग्रंथमाला' के अन्तर्गत 'भिखारीदास ग्रंथावली' का प्रकाशन । पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के सम्पादकत्व में 'दास' ग्रथावाली' तथा 'गंग-ग्रंथावली' का प्रकाशन प्रारम्भ । (ख) बिड़ला ग्रंथमाला के अन्तर्गत 'रज्जब'–ग्रंथावली तथा 'रामानन्द'–ग्रंथावली का प्रारम्भ डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी के सम्पादकत्व में ।

पुनर्मुद्रण---'ढोला-मारू का दूहा', 'कबीर-ग्रंथावली', 'रस-गंगाधर' । बालकृष्ण भट्ट तथा प्रतापनारायण मिश्र ग्रन्थावली ।

पुस्तक-प्रकाशन की नयी योजना--

(क) प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा १७ भागों में 'हिन्दी-साहित्य का वृहत् इतिहास' नामक इतिहास ग्रन्थ की तैयारी । (ख) हिन्दी विश्वकोश के प्रकाशन की योजना (डा० सम्पूर्णानन्द तथा डा० राजबली पाण्डेय के प्रतिनिधित्व में) । (ग) हिन्दी-शब्दसागर के नवीन निर्माण का प्रारम्भ ।

नवीन प्रकाशित पुस्तक---

(क) 'चंदेल और उनका राजत्वकाल'---लेखक–केशवचंद्र मिश्र । (ख) 'भारतेन्दु-ग्रंथावली' भाग ३ लेखक–ब्रजरत्नदास, बी० ए० एल० एल० बी० । (ग) 'आदर्श और यथार्थ'---ले० पुरुषोत्तमलाल । (घ) 'तुलसी की जीवन-भूमि' ले० चन्द्रबली पाण्डेय । (ङ) 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'तथा 'मीर' का संग्रह---सं० डा० अमरनाथ झा । (च) 'असीम' अनुवादक–शंभुनाथ वाजपेयी । (छ) 'नन्ददास ग्रंथावली'---सं०–ब्रजरत्नदास । (ज) भागवत सम्प्रदाय---ले० श्री बलदेव उपाध्याय ।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका प्रकाशन---

भाषा-साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, इतिहास, प्राचीन एवं नवीन खोज-सम्बन्धी लेखों, पुस्तकों की समीक्षा, विविध विषय, तथा नागरी प्रचारिणी सभा की प्रगति आदि का विवरण ।

आर्यभाषा पुस्तकालय---

(क) पहले की तरह इस पुस्तकालय द्वारा विशेष रूप से हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रसार । (ख) साहित्य समारोहों में भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा भाषण (ग) वार्षिकोत्सव आदि अनेक अवसरों पर गोष्ठियों तथा कवि-सम्मेलनों का आयोजन तथा साहित्य पर विचार-विमर्श ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रबन्ध-विभाग---

(क) समुचित आन्तरिक और बाह्य प्रबन्ध द्वारा संस्था का भाषा-साहित्य के प्रसार-प्रचार में महत्वपूर्ण योग ।

साहित्य-विभाग---

(क) साहित्य-विद्यालय द्वारा प्रथमा, विशारद और साहित्य-रत्न परीक्षाओं का विभिन्न प्रान्तों एवं नगरों में संचालन एवं प्रयाग में अपने भवन में अध्यापन द्वारा योगदान । (ख) हिन्दी टाइप तथा संकेतलिपि विद्यालय की स्थापना तथा शिक्षा परीक्षा आदि की व्यवस्था । (ग) परीक्षा विभाग द्वारा परीक्षाओं का सञ्चालन ।

प्रचार-विभाग---

(क) साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन । (ख) मध्यप्रदेशीय वित्तमन्त्री ब्रिजलाल बियाणी की अध्यक्षता तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन द्वारा उद्घाटन 'तुलसी जयन्ती' समारोह पर भाषण आदि ।

हिन्दी संग्रहालय के कार्य---

(क) पुरानी और दुर्लभ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संग्रह, सुरक्षा तथा मुद्रण । (ख) शोधकार्य करनेवाले छात्रों-विद्वानों को पाण्डुलिपियों तथा पत्र-पत्रिकाओं द्वारा सहायता । (ग) वृहद् पुस्तक संग्रहालय एवं पुस्तकालय द्वारा जन-साधारण के लिए ज्ञान का प्रसार ।

कोश निर्माण विभाग---

(क) शासन शब्द कोश, प्रत्यक्ष शरीर कोश, जीवरसायन कोश, भूतत्व विज्ञान कोश, चिकित्सा विज्ञान कोश, औद्योगिक रसायन कोश, आहार तथा पुष्टि विज्ञान कोश, भाषा विज्ञान कोश, भिन्न-भिन्न अंग्रेजी हिन्दी शब्द-कोशों का प्रकाशन

(ख) हिन्दी के वृहद कोश का निर्माण जिसमें नये-नये शब्दों का समावेश। इसमें डेढ़ लाख शब्द और पन्द्रह हजार मुहावरों व्याकरण एवं अर्थ के अतिरिक्त व्युत्पत्ति आदि का विचार होगा।

अनुवाद विभाग—

(क) संस्कृत पुराणों जैसे भविष्य पुराण, ब्रह्म-पुराण, नारदीय पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण का प्रकाशन।

(ख) अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश का प्रकाशन।

हिन्दी परीक्षाओं की मान्यता—

(क) विभिन्न परीक्षाओं को मान्यता दिलाने के लिए समिति का गठन और बैठक। (ख) शिष्टमंडल द्वारा १८ अक्टूबर को प्रधान-मंत्री, शिक्षा-मंत्री तथा अन्य अधिकारियों से इंटर बोर्ड की मान्यता दिलाने के लिए भेंट और निवेदन।

पुस्तकों का प्रकाशन—

(क) विभिन्न शब्दकोशों का प्रकाशन। (ख) शिशुपाल वध महाकाव्य—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी। (ग) 'शैवाल'—कविता संग्रह स्व० श्री रामशंकर शुक्ल 'हृदय'। (घ) आत्मत्याग (नाटक) 'आत्मघात' 'कहानी संग्रह' लेखक—स्व० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव। (ङ) जातक छठा खण्ड। (च) मैथिली लोकगीत—संग्रहकर्ता तथा संपादक श्री राम इकबाल सिंह।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, अम्बाला

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समारोह—

(१) समस्त जनपदों में तुलसी जयन्ती तथा हिन्दी-दिवस का आयोजन। उत्सवों एवं गोष्ठियों में भाषण।

हिन्दी-प्रचार—

(१) अम्बाला के व्यावसायिक क्षेत्रों में देवनागरी लिपि, हिन्दी में सूचना, पत्र व्यवहार एवं तार आदि लिखने का प्रचार। (२) रोहतक में जनपद सम्मेलन का राजर्षि टण्डन जी द्वारा उद्घाटन समारोह। (३) सम्मेलन के मुखपत्र 'हिन्दी सन्देश' द्वारा विशेष प्रचार के लिए पंजाबी लेखकों के जीवन और व्यक्तित्व की लेखमाला।

शिक्षा-प्रचार—

(१) अम्बाला और अमृतसर में प्रौढ़ पाठशालाओं का संचालन एवं व्यापक प्रचार। (२) हिन्दी विनोद तथा हिन्दी अलंकार परीक्षाओं का संचालन प्रारम्भ।

विशेषअधिवेशन—

(१) डा० सत्यपाल की अध्यक्षता में वार्षिक प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा लोकसभा के अध्यक्ष माननीय गणेश विनायक मावलंकर को विशिष्ट आतिथ्य देकर सम्मान। (२) प्रसार प्रचार तथा हिन्दी सेवा के लिए महत्वपूर्ण प्रस्ताव।

विन्ध्य प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन रीवाँ

(१) सांस्कृतिक एवं साहित्य समारोहों में नन्ददुलारे वाजपेयी, डा० नगेन्द्र, बनारसी दास चतुर्वेदी आदि विद्वानों के भाषण। (२) व्याख्यान मालाओं का आयोजन तथा विद्यार्थियों के हितार्थ प्रतिष्ठित विद्वानों के भाषण।

प्रकाशनकार्य—

(१) त्रैमासिक पत्रिका 'विन्ध्य भारती' का प्रकाशन। (२) प्राचीन तथा अर्वाचीन महाकवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देनेवाली ग्रन्थमाला का प्रकाशन।

पुस्तकालय—

(१) पुस्तकों के छोटे से पुस्तकालय द्वारा विद्यार्थियों तथा जनता में हिन्दी का प्रचार।

सनातनधर्म हिन्दी विद्यापीठ, जयपुर

साहित्य-समारोह--

(१) तुलसी, सूर, मीरा, भारतेन्दु की जयन्तियाँ और समारोह। (२) हिन्दी दिवस पर हिन्दी का प्रचार व समारोह आयोजन।

कला एवं उद्योग--

(१) संगीत शिक्षा तथा समारोह। (२) कला उद्योग द्वारा कलाओं का प्रदर्शन।

मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ग्वालियर

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोह--

(१) श्री गौतम शर्मा की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन तथा विद्वानों के राष्ट्रभाषा हिन्दी की विविध समस्याओं पर भाषण।

प्रचार-कार्य--

(१) उच्च न्यायालय एवं न्यायविभाग में हिन्दी के व्यवहार के लिए व्यापक प्रचार। (२) शिक्षा-विभाग, वित्त-विभाग तथा राज्य शासन के अन्य विभागों में हिन्दी के प्रति उत्साहवर्धन का कार्य।

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

प्रकाशन कार्य--दक्खिनी हिन्दी--

(१) दक्खिनी हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों की सूची तथा गद्य-पद्य का संकलन सुनीतिकुमार चटर्जी की भूमिका से युक्त। (२) 'रिसाला अलिफ बे' नामक दक्खिनी के सुप्रसिद्ध कवि वजही की पुस्तक। (३) 'गद्य-सोपान' (भाग ३) के नाम से लगभग चार सौ वर्षों के प्रतिनिधि गद्य-लेखकों की रचनाओं का संग्रह।

बाल-साहित्य माला का प्रकाशन--

(१) बालपद : कविता--ले० श्री वंशीधर विद्यालंकार। (२) बालकों की कहानियाँ--ले० श्रीराम शर्मा। (३) दक्षिण के महापुरुष (प्रथम भाग) ले० राजकिशोर पाण्डेय। (४) गाँवों की कहानियाँ ले० रामनिरंजन पाण्डेय। (५) 'दो एकांकी' तथा 'दक्षिण के महापु प' (द्वितीय भाग) लेखिका--विमला लूथरा। (६) 'हैदराबाद के ऐतिहासिक तथा कलास्थल' व 'हैदराबाद के निवासी' लेखिका-कमलारानी संघी।

अन्य प्रकाशन--

(१) 'चाबुक' 'कहानी संग्रह' लेखक-श्री विनायक राव विद्यालंकार। (२)'स्वामी रामानन्द तीर्थः विचार और भाषण' का सम्पादन। (३)'**पञ्चामृत**'-तेलगु के पाँच प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद ले०-श्री बाल शौरि रेड्डी।

पत्र प्रकाशन--

(१) 'अजन्ता' द्वारा उत्तर तथा दक्षिण के कवियों-लेखकों का सम्पूर्ण हिन्दी जगत से परिचय।

पुस्तकालय--

(१) राज्य के विभिन्न नगरों में पुस्तकालयों द्वारा हिन्दी का व्यापक प्रचार और सेवाकार्य। (२) हिंन्दी तथा दक्षिणी भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन-केन्द्रों की स्थापना।

समाज शिक्षा केन्द्रों की स्थापना--

(१) वाचनालयों द्वारा हिन्दी का प्रचार। (२) जेलों में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था। (३) सरकारी विभागों में हिन्दी का व्यापक प्रचार जैसे एकाउण्टेण्ट्स जनरल कार्यालय, डाक-विभाग, आदि के लिए पाठशालाएँ एवं रात्रि वर्ग।

साहित्य समारोह--

(१) तुलसी जयंती का समारोह। प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रकाशचन्द गुप्त का भाषण एवं निबंध-पाठ।

बजरंग परिषद्, कलकत्ता

साहित्य एवं सांस्कृतिक समारोह---

(१) मीरा व तुलसी जयन्ती समारोह। (२) महाकवि 'निराला', महावीरप्रसाद पोद्दार तथा बालचन्द मोदी का अभिनन्दन। (३) तिलक-दिवस, गाँधी जयन्ती, होलिकोत्सव तथा वसन्तोत्सव पर जयन्ती-समारोह तथा कवि सम्मेलन एवं भाषण। (३) हिन्दी साहित्यकारों की निधन तिथियों पर भाषण तथा शोक-सभाएँ।

संगीत एवं हिन्दी नाटय समारोह---

(१) हिन्दी के तीन नाटकों का अभिनय (रंगमंच पर)। (२) मीरा तथा सूर के भजनों का कार्यक्रम। (३) कलाकारों का स्वागत।

मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सभा, लश्कर

साहित्यिक समारोह तथा जयन्ती---

(१) सूर, तुलसी एवं रवीन्द्र जयन्ती का आयोजन तथा साहित्यिक गोष्ठियाँ। (२) स्वर्णजयंती समारोह में हिन्दी-प्रसार के सम्बन्ध में विद्वानों के भाषण। (३) राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन को श्री मिश्रीलाल गंगवाल की अध्यक्षता में अभिनन्दन-पत्र। श्री लालबहादुर शास्त्री को अभिनन्दन-पत्र।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पूना

सांस्कृतिक उत्सव एवं साहित्य समारोह---

(१) शिव जयंती, गणेशोत्सव, कृष्ण जन्माष्टमी, आदि का समारोह। (२) तुलसी जयन्ती तथा १४ सितम्बर के दिन हिन्दी दिवस का आयोजन।

साहित्यिकों के भाषण---

(१) सुप्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा तथा कहानीकार सुदर्शन आदि का राष्ट्र-भाषा पर महत्वपूर्ण व्याख्यान (२) श्री रा० न० वापट, केशवराव जेधे, श्री करंदीकर श्री घाटे आदि मराठी साहित्यकारों के भाषण। (३) अखिल महाराष्ट्र के हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन। हिन्दी का प्रचार।

बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ

बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ बम्बई नगर की एक प्रमुख हिन्दी प्रचारक संस्था है। इसकी स्थापना अक्टूबर १९३८ में हुई। विद्यापीठ की ओर से नगर, उपनगर, दक्षिण तथा उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में हिन्दी प्रचार के निशुल्क कक्षाएँ चलायी जाती हैं। विद्यापीठ की अपनी परीक्षाएँ हैं, जिनमें प्रतिवर्ष लगभग पंद्रह हजार विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

हिन्दी-प्रवेश, प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा विद्यापीठ की प्रचार परीक्षाएँ हैं, जो अधिकतर नगर, उपनगर, गुजरात, सौराष्ट्र, आंध्र, मैसूर, ट्रावनकोर-कोचीन एवं अन्य अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रचलित हैं। हिन्दी-भाषारत्न, साहित्य-सुधाकर तथा साहित्य-रत्नाकर विद्यापीठ की उपाधि परीक्षाएँ हैं, जो मध्यभारत, राजस्थान उत्तर प्रदेश तथा बिहार आदि प्रान्तों में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के समान ही प्रचलित हैं। विद्यापीठ की "हिन्दी-भाषारत्न" परीक्षा को बम्बई म्युनिसिपैलिटी, बम्बई राज्य के शिक्षा विभाग ने मान्यता प्रदान की है। 'भाषारत्न" एवं 'साहित्य सुधाकर' को अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने यहाँ प्रथमा एवं मध्यमा के समकक्ष माना है और अपनी अगली परीक्षा में बैठने की मान्यता भी दी है।

प्रकाशन

विद्यापीठ ने अपने पाठ्यक्रम सम्बन्धी अब तक ३२ पुस्तकों का प्रकाशन किया है। मराठी, गुजराती, अंग्रेजी तथा उर्दू से हिन्दी सीखने के लिये विद्यापीठ की ओर से प्रत्येक पुस्तक २–२ भागों में व्याकरण के रूप में प्रकाशित है, जो दक्षिण में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है। विद्यापीठ की ओर से आज लगभग पाँच वर्ष से "भारती" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है, जिसमें हिन्दी के सामान्य ज्ञान के साथ साथ विद्यार्थियों के लिये परीक्षोपयोगी सामग्री भी संग्रहीत रहती है।

विद्यापीठ ने अपने प्रकाशनों की सुविधा के लिये आज से चार वर्ष पूर्व एक प्रिंटिंग प्रेस भी संचालित किया है, जो आज "विद्यापीठ प्रेस" के नाम से विद्यापीठ के साथ-साथ बम्बई की अन्य संस्थाओं की भी सेवा कर रहा है।

नगर के सभी प्रतिष्ठित एवं साहित्यिक महानुभावों का सदैव विद्यापीठ को सहयोग प्राप्त हुआ है। सरकार ने भी समय-समय पर सहयोग देकर हिन्दी-प्रचार-क्षेत्र को अधिकाधिक व्याप्त किया है। विद्यापीठ के टेलीफोन का नंबर ७३२११ है।

विद्यापीठ की कक्षाओं में इस समय आठ हजार के लगभग परीक्षार्थी निःशुल्क अध्ययन कर रहे हैं। परीक्षायें वर्ष में दो बार (फरवरी और सितम्बर में) होती हैं। विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देने वाले विद्यापीठ के सक्रिय प्रचारक भी आज ८०० से ऊपर हैं।

विद्यापीठ की ९ प्रचार समितियाँ हैं, जो अपने-अपने प्रान्त में विद्यापीठ की परीक्षाओं की व्यवस्था करती हैं। ये प्रचार समितियाँ, नगर, उपनगर, गुजरात, राजस्थान, मध्यभारत, हैदराबाद, मैसूर, आन्ध्र और ट्रावनकोर कोचीन में स्थित हैं। जहाँ प्रचार समितियाँ नहीं हैं वहाँ कितने ही स्वतंत्र केन्द्र चल रहे हैं।

विद्यापीठ की भावी योजनाओं में "प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रकाशित करना" तथा "हिन्दी-भवन" की स्थापना करना एवं एक विशाल भारतीय शब्दकोष निर्माण करना जिसमें हिन्दी शब्दों के अर्थ सभी प्रान्तीय भाषाओं में हों, इस समय विचाराधीन हैं। भवन के लिये कुछ फंड भी अब तक एकत्र हो चुका है।

इस समय विद्यापीठ के पदाधिकारी इस प्रकार हैं—श्री ठा० राजबहादुर सिंह (कुलपति), श्री बीरबल सिंह राक्त। (प्र० मं०)

रंग-मंच

सांस्कृतिक कार्यों में मैथिलीशरण जी की यशोधरा, प्रसाद जी की कामायनी आदि को समय-समय पर नृत्य-नाटिका का रूप देकर विद्यापीठ ने रंगमंच को साहित्य और कला का संगम बनाया है। विद्यापीठ द्वारा प्रदर्शित यशोधरा को स्वयं मैथिलीशरणजी भी देख चुके हैं और उन्होंने बहुत प्रशंसा भी की है।

१९५४ में बम्बई पधारने वाले साहित्यिकों (सर्वश्री दिनकर, महादेवी वर्मा, रामनरेश जी आदि का विद्यापीठ की ओर से स्वागत किया गया तथा वे अहिन्दी-भाषी प्रान्त में हिन्दी-सेवा-रत इस संस्था के कार्य को देख कर बहुत प्रभावित हुए।

पत्र-पत्रिका प्रकाशन—

(१) 'जयभरती' के परीक्षोपयोगी तीन विशेष विशेषांक। (२) 'विनय' नामक हस्तलिखित पत्रिका का महादेवी वर्मा द्वारा उद्घाटन।

पुस्तक प्रकाशन—

(१) 'बातचीत'। (२) 'बापू की बातें' लेखक श्री रामेश्वरदयाल दूबे। (३) 'संसार की भाषाएँ' संकलन कर्ता—प्रा० श० दा० चितले। (४) हिन्दी साहित्य के इतिहास के चार्ट्स—श्री चि० रा० ओंकार।

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अहमदाबाद

हिन्दी का व्यापक प्रचार—

(१) प्रान्त भर में ४०० नये परीक्षा केन्द्रों की स्थापना जिनमें राष्ट्रभाषा प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय, कोविद, रत्न परीक्षाओं की व्यवस्था तथा पढ़ाई। (२) रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा प्रचार सम्मेलन की अध्यक्षता। (३) ३१ जुलाई एवं १ अगस्त को भाषण प्रतियोगिता।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समारोह—

(१) अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर, सूरत, भड़ोंच आदि में हिन्दी दिवस का आयोजन-समारोह। (२) मीरा-जयन्ती, तुलसी-जयन्ती उत्सव।

पत्र-पत्रिका का प्रकाशन—

(१) 'राष्ट्रवीणा' नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन।

मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इम्फाल

भाषण एवं साहित्य समारोह--

(१) राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में कई स्थानीय महानुभावों के भाषण। (२) सूर-जयन्ती, तुलसी-जयन्ती तथा हिन्दी-दिवस समारोह।

बम्बई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, बम्बई

राष्ट्रभाषा शिक्षण केन्द्र--

(१) इस वर्ष १५ नये शिक्षण केन्द्रों की प्रान्त भर में स्थापना। विभिन्न परीक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था। (२) राष्ट्र-भाषा के सम्बन्ध में विद्वानों के भाषण।

साहित्य-समारोह--

(१) १४ नवम्बर के दिन हिन्दी दिवस का बम्बई तथा अन्य नगर केन्द्रों में आयोजन। (२) तुलसी जयन्ती समारोह। (३) ७ अगस्त को महादेवी वर्मा का भाषण।

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार-सभा

पत्र-पत्रिका तथा अन्य प्रकाशन--

(१) 'राष्ट्रभाषा पत्र' द्वारा उड़ीसा के उड़िया भाषा-भाषी कवियों-लेखकों का परिचय तथा रचनाएँ। (२) उड़िया तथा हिन्दी की ३४ पुस्तकों का प्रकाशन। (३) उड़िया-हिन्दी शब्द-कोश का निर्माण। (४) उड़िया की कहानियों का हिन्दी अनुवाद।

पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कलकत्ता

शिक्षण तथा परीक्षण केन्द्र--

(१) इस वर्ष ३६ केन्द्रों में नया कार्य आरम्भ हुआ।

साहित्य समारोह--

(१) तुलसी जयन्ती तथा रवीन्द्र जयन्ती का आयोजन तथा विभिन्न स्थानों पर भाषण आदि। (२) हिन्दी-दिवस का आयोजन विशेष कार्यक्रम।

'प्रसाद'--परिषद, काशी

(१) 'प्रसाद' मासिक पत्रिका; (२) 'गालिब' की रचनाओंका संपादन (यंत्रस्थ); (३) 'भारतीय साहित्य-शास्त्र' द्वितीय खंड (पुनर्मुद्रण के लिए यन्त्रस्थ)।

साहित्यिक समारोह एवं गोष्ठियाँ--

(१) विभिन्न अवसरों पर भाषण एवं गोष्ठियों का आयोजन।

अखिल भारतीय हिन्दी परिषद

६ फीरोजशाह रोड, नयी दिल्ली

पत्र-पत्रिका तथा अन्य प्रकाशन--

(१) राज-भाषा बोधिनी। (२) हिन्दी सेल्फ टाट फ़र नान हिन्दी एम० पीज़। (३) मलयालम स्वयं शिक्षक। (४) हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं के कोश का प्रकाशन।

अहिन्दी भाषा-भाषी विद्वानों में हिन्दी-प्रचार--

(१) पुस्तकालय, हिन्दी क्लब, अन्तर्प्रान्तीय वाक्-प्रतियोगिता का आयोजन। (२) राष्ट्रभाषा तथा अन्य साहित्यिक विषयों पर भाषण एवं गोष्ठियाँ।

मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी सभा

पुस्तकालय तथा वाचनालय

अजमेर

हिन्दीका प्रचार--

(१) सम्मेलन की परीक्षाओं की व्यवस्था तथा अध्यापन। (२) हिन्दी के माध्यम से आयुर्वेद, कृषि एवं राजनीतिक ज्ञान का प्रसार तथा तत्सम्बन्धी सभा एवं आयोजन। (३) साहित्यिक गोष्ठियों एवं सभाओं का आयोजन। तथा विद्वानों के भाषण। (४) पुस्तकालय द्वारा हिन्दी प्रचार में योग।

अन्तर्प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद्

जोधपुर

साहित्यिक तथा सांस्कृतिक समारोह--

(१) तुलसी जयन्ती तथा मीरा जयन्ती का आयोजन। (२) वसन्तोत्सव का आयोजन। (३) साक्षरता-दिवस का समारोह तथा भाषण। (४) समय-समय पर साहित्यिक सभाएँ तथा गोष्ठियाँ। (५) टण्डनजी, राहुल सांकृत्यायन तथा वियोगीहरि के भाषण।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा प्रचार--

(१) 'नव-निर्माण' नामक त्रैमासिक का प्रकाशन। (२) हस्तलिखित पत्रिका का प्रचार एवं प्रसार द्वारा हिन्दी की सेवा।

हिन्दी समाचार पत्र संग्रहालय

हैदराबाद

प्रदर्शनी आयोजन--

(१) २४ मई के दिन राज्य के शिक्षामंत्री श्री गोपालराव एकबोटे द्वारा सातवीं तथा प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समाचार-पत्र प्रदर्शनी का आयोजन। (२) फिजी, मारीशश तथा दक्षिणी अफरीका तथा अन्य देशों में प्रकाशित होनेवाले हिन्दी पत्रों का संग्रह।

पत्र-प्रकाशन--

(१) हिन्दी समाचारपत्र निर्देशिका का प्रकाशन।

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान)

साहित्य संस्थान के कार्य--

(१) राजस्थान में हिन्दी ग्रन्थों की खोज भाग १, २, ३, ४, ५, ६ का प्रकाशन। (२) चारणों और राव साहित्य के बारे में शोधकार्य्य। १८,००० गीतों के संग्रह का प्रकाशन। (३) पृथ्वीराज रासो का ६ भाग में प्रकाशन 'मेवाड़ी कहावतें' नामक राजस्थानी कहावतों का संग्रह। भीली कहावतों का संग्रह। (५) १५०० भीली शब्दों के शब्द-कोश का प्रकाशन। (६) स्व० डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के पुरातत्व शिलालेखों, ताम्रपत्रों आदि से सम्बन्धित निबन्ध चार भागों में प्रकाशित। (७) आचार्य चाणक्य--(नाटक) ले० जनार्दनराय नागर। (८) पं० कन्हैयालाल ओझा की व्रजभाषा में लिखित 'तुलसीदास' नामक पुस्तक का प्रकाशन। (९) 'नया चीन'--लेखक-हुक्मराज मेहता। (१०) राजस्थान साहित्य तथा 'शोध पत्रिका' नामक दो त्रैमासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन।

भाषण का आयोजन--

(१) 'पूर्व आधुनिक राजस्थान' विषय पर डा० रघुवीर सिंह के तीन भाषण। (२) 'अजमेर का चौहान साम्राज्य तथा शाकम्भरी' पर दशरथ शर्मा के तीन भाषण। (३) 'राजस्थानी भाषा'--डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के भाषण।

ये भाषण पुस्तकाकार-प्रकाशित किये गये हैं।

कलाकेन्द्र के कार्यक्रम—

(१) नाटक एवं संगीत का आयोजन।

लोक शिक्षण—

(१) साक्षरता-दिवस का आयोजन। (२) वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा कवि-सम्मेलन का आयोजन। (३) वाचनालय तथा पुस्तकालय द्वारा हिन्दी का व्यापक प्रचार।

अखिल भारतीय हिन्दी महाविद्यालय, आगरा

परीक्षाएँ तथा शिक्षण कार्य—

(१) हिन्दी परिचय, हिन्दी प्रवेश, हिन्दी प्रबोध, विशारद तथा हिन्दी पारंगत परीक्षाओं का सञ्चालन एवं अध्यापन। (२) शिक्षण कला प्रवीण, पत्रकार कला प्रवीण, शीघ्रलिपि मुद्रालेखन प्रबोध एवं प्रवीण तथा कार्यपालन प्रवीण योग्यता परीक्षा का संचालन।

पत्र-पत्रिका—

(१) हस्तलिखित 'समन्वय' का प्रकाशन।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोह—

(१) रवीन्द्र-जयन्ती उत्सव व भाषण। (२) दशहरा तथा दीपावली पर उत्सव। (३) तुलसी जयन्ती सप्ताह एवं सभाएँ।

व्याख्यानों का आयोजन—

(१) गुलाबराय–हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल। (२) डा० रामविलास–तुलसी की कला, प्रगतिशील साहित्य, भाषा-विज्ञान आदि पर भाषण। (३) डा० सुधीन्द्र का छायावाद पर व्याख्यान इसके अलावा कई साहित्यिकों ने साहित्य संबंधी भाषण दिये गये।

भारत भारती, कलकत्ता

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोह—

(१) तुलसी, निराला, भारतेन्दु, रवीन्द्र-जयन्ती का समारोह एवं भाषण। (२) शरद्पूर्णिमा तथा वसन्तोत्सव का आयोजन एवं संगीत कार्यक्रम। (३) श्री नन्ददुलारे वाजपेयी का सम्मान। (४) संत परम्परा पर श्री परमानन्द शर्मा का भाषण। तथा शिवाधार सिंह का प्रगतिशील साहित्य पर विचार एवं व्याख्यान। गोष्ठियों का आयोजन। (५) 'महात्मा ईसा' का अभिनय संस्था के कलाकारों द्वारा, वाद-विवाद समिति के तत्वावधान में विचार विमर्श।

[पृष्ठ ६४ का शेष,]

व्यास डा० — संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, २७. डा० त्रिलोकीनाथ दीक्षित अवधी और उसका साहित्य, २८. पद्मचन्द अग्रवाल— हिंदी साहित्य के दार्शनिक आधार, २९. शिवकुमार मिश्र — आंसू और उसका कवि, ३०. स्व० डा० सुधीन्द्र — कवि-जायसी और उनका पद्मावत, ३१. उदयनारायण तिवारी—भोजपुरी भाषा और साहित्य, ३२. गणेशदत्त 'इन्द्र'—अक्षर-ज्ञान ३३. रवीन्द्रनाथ टैगोर—रवीन्द्र साहित्य, ३४. शम्भूनाथ सक्सेना—जीवन के प्रश्न, ३५. सुधीन्द्र—काव्य श्री अलंकार:, ३६. अशोककुमार सिंह — काव्य संप्रदाय और वाद, ३७. 'क्षेम' —छायावाद की काव्य साधना, ३८. प्रेमनारायण शुक्ल — हिंदी साहित्य में विविधवाद, ३९. डा० रामविलास शर्मा — प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, ४०. शिवचन्द्र नागर — महादेवी :विचार और व्यक्तित्व, ४१. कृष्णचन्द्र वर्मा — अयोध्याकांड की भूमिका, ४२. राजेन्द्र सिंह गौड़ — हमारे नाटककार, ४३. डा० रामविलास शर्मा — भाषा साहित्य और संस्कृति, ४४. आ० विश्वनाथप्रसाद मिश्र — भूषण, ४५. सम्पादित तुलसी-शब्द सागर, ४६. भोलानाथ शर्मा एम०ए० — भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र, ४७. श्री नन्दकिशोर शर्मा —मानस मराल।

१९५४ के प्रमुख प्रकाशन

[प्रयत्न यही किया गया है कि प्राय: हिंदी के महत्वपूर्ण प्रकाशनों का नाम इस सूची में आ जाय। संभव है ज्ञान का साधन उसमें बाधक हुआ है।]

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी

१. कमला रानी संघी—हैदराबाद के ऐतिहासिक कलास्थल, २. जयचन्द विद्यालकार—मनुष्य की कहानी, ३. वंशीधर विद्यालंकार—बालपद, ४. श्रीराम शर्मा—बालकों की कहानियां, ५. के० एम० मुन्शी अनु० एल० पी० भारद्वाज—बाल सोमनाथ ६. विष्णु प्रभाकर—ऐसे थे सरदार, ७. राकेश—नीति की कहानियां भाग १, ८. रामचन्द्र तिवारी—गंगा जी, ९. लक्ष्मीनारायण मिश्र—किशोर नाटकावली, १०. शूद्रक—मृच्छकटिक, ११. सन्तराम विचित्र—वीर सिपाही, १२. कमला रानी संघी—हैदराबाद के ऐतिहासिक कलास्थान, १३. नागार्जुन—कथामंजरी, १४. बालभट्ट—आटे-बाटे, १५. बालभट्ट—चौबे की चोटी, १६. बालभट्ट—चौमुखा चिराग, १७. बालभट्ट—पत्थर हजम, १८. बालभट्ट—मुल्ला की दाढ़ी, १९. बालभट्ट—झूंझूं भांके, २०. बालभट्ट—सोने की दीवार, २१. विमला लूथरा—दो एकांकी, २२. सन्तराम—विचित्र लोकतन्त्र, २३. हनुमानप्रसाद पोद्दार—दयालु परोपकारी, २४. हनुमानप्रसाद पोद्दार—बाल अमृत कथा, २५. हनुमानप्रसाद पोद्दार—बालचित्र रामायण भाग १, २६. आनन्दकुमार—अमर कथाएँ, २७. आनन्दकुमार—महापुरुषों की कथाएँ, २८. आनन्दकुमार—शिक्षाप्रद कथाएँ, २९. आनन्दकुमार—लोक कथाएँ, ३०. आल्हा ऊदल की कहानी, ३१, इन्द्रनाथ मदान, डा०—लेनिन, ३२. भगवतशरण उपाध्याय—कादम्बरी, ३३. बालभट्ट—काना नाई, ३४. प्रो० अर्जुन चौबे—बाल मनोविज्ञान, ३५. श्री आरसीप्रसाद सिंह—ओना मामी, ३६. हरिकृष्ण देवसरे—सफेद रसगुल्ले, ३७. उषा मित्रा—पंचतन्त्र की कहानियाँ, ३८. अरविन्द गुर्टू—नीली दाढ़ी, ३९. महेश्वरी देवी शर्मा—हवाई परी, ४०. विष्णुप्रसाद व्यास—आत्म निर्माण, ४१. चतुरसेन शास्त्री—आदर्श बालक।

उपन्यास

१. ख्वाजा अहमद अब्बास—अंधेरा उजाला, २. गोर्की, अनु० शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान—तीन पीढ़ी, ३. मोराविया—अतृप्त वासनाएँ, ४. वृन्दावनलाल वर्मा—अमर बेल, ५. नागार्जुन—बाबा बटेसरनाथ, ६. आस्कर वाइल्ड—अपनी छाया, ७. कृष्णचन्द्र—उल्टा वृक्ष, ८. गोपालकृष्ण कौल—जादूगरनी, ९. गोविन्द वल्लभ पन्त—एक सूत्र, १०. टाल्स्टाय, अनु० सूरजनारायण—अन्ना केरानिना, ११. रघुवीरशरण मिश्र—आग और पानी, १२. कमल जोशी—बहता तिनका, १३. जमनादास अख्तर—आग, १४. टाल्स्टाय, अनु० कमल—टाल्स्टाय की डायरी, १५. मैक्सिम गोर्की, अनु० कमल—पूंजीपति, १६. मैक्सिम गोर्की, अनु० राजनाथ—गोर्की की कहानियां १, १७. मैक्सिम गोर्की, अनु० राजनाथ—गोर्की की कहानियां २, १८. मैक्सिम गोर्की, अनु० कामताप्रसाद—मां, १९. रवीन्द्रनाथ ठाकुर—कौन किसी का, २०. रांगेय राघव—उबाल, २१. रांगेय राघव—भारती का सपूत, २२. हावर्ड फास्ट, अनु० नूर अब्बासी—मुक्ति मार्ग, २३. ज्वालाप्रसाद केशर—कसक, २४. रांगेय राघव—देवकी का बेटा, २५. रांगेय राघव—यशोधरा जीत गई, २६. रांगेय राघव—लोई का ताना, २७. श्री विकल जी—देव और नर्तकी, २८. अनन्त गोपाल शेवड़े—निशागीत, २९. हरिकृष्ण वाजपेयी—प्रश्न और शून्य, ३०. यज्ञदत्त शर्मा—मधु, ३१. बलभद्र ठाकुर—राधा और राजन, ३२. विसर्जन व नष्टनीड़, रवीन्द्र—रवीन्द्र साहित्य १४ वां भाग, ३३. देवेन्द्र सत्यार्थी—कठपुतली, ३४. नरेश मेहता—डूबते मस्तूल, ३५. हर्षनाथ—कर्म और जगनी, ३६. अमृतधर नल्ले—नारी, ३७. कृष्णबिहारी दुबे—प्रकृति और प्रारब्ध, ३८. यशोबिमलानन्द—अगली सांझ, ३९. रूपनारायण पांडेय—अनुवादक—संध्या, ४०. अलक्जेण्डर ड्यूमा—तीन तिलंगे, ४१. कन्हैयालाल मुन्शी—

लोमहर्षिणी, ४२. बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० कमल—देवी चौधरानी, ४३. बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० कमल—बंगशार्दूल सीताराम, ४४. यादवेन्द्रनाथ शर्मा 'चन्द्र'—मंयासी और सुन्दरी, ४५. रूपनारायण पांडेय—अमला, ४६. बरुआ—अंखिया निहार के पगधूरि झार के, ४७. कमल शुक्ल—राग और त्याग, ४८. ख्वाजा अहमद अब्बास—आधा इन्सान, ४९. चन्द्रशेखर शास्त्री 'आचार्य'—श्रेणिक बिम्बसार, ५०. नरोत्तम नागर—काले बादल, अनु०, ५१. पृथ्वीनाथ शास्त्री—सिद्धार्थ, ५२. रघुकुल तिलक—घर और बाहर, अनु०, ५३. रमेशचन्द्र झा:—मिट्टी बोल उठी, ५५. एमिली जोला—नाना, ५५. ओंकार बावरा—ई राह, ५६. कमल साहित्यालंकार—नया स्वर्ग, ५७. रजनी पनिकर—पानी की दीवार, ५८. राहुल सांकृत्यायन—मूदखोर की मौत, ५९. लक्ष्मीकान्त—नये अंकुर, ६०. श्रीचन्द्र अग्निहोत्री—हवेली की ईंट ।

इतिहास-राजनीति

१. हावर्ड फास्ट, अनु० रनवीर सक्सेना—नीक स्किल काण्ड, २. फर्डिनण्ड लेविल—आधुनिक यूरोप का इतिहास, ३. एडी आशीर्वादम, अनु० गंगारत्न पांडेय—राजनीति शास्त्र, ४. चंद्रशेखर शास्त्री—आतंकवाद का इतिहास, ५. ओमप्रकाश—हमारी मांग, ६. आर० एन० चतुर्वेदी—विश्व इतिहास की झांकी, ७. रिसर्च विभाग एस० डी० एफ० ए०—रूसी संगीनों की छाया में, ८. रामवृक्ष सिंह—आधुनिक योरोप का इतिहास, ९. विद्यासागर शर्मा—भारतीय सहकारिता का उदय और विकास, १०. विद्यासागर शर्मा—सहकारिता का उदय और विकास, ११. बी० एन० मेहता—आधुनिक यूरोप, १२. एम० आर० शर्मा व सत्यनारायण दूबे—भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास ।

अर्थशास्त्र

१. सरल वाणिज्य प्रणाली—कैलाश बहादुर सक्सेना, विश्वनाथ हुक्कू, २. मुद्रा विनिमय एवं बैंकिंग—दाऊदयाल भार्गव, ३. कैलाशनाथ शर्मा शम्भूरत्न त्रिपाठी—व्यावहारिक समाजशास्त्र, ४. जगमोहन गुप्ता—राजस्थान की जातियाँ, ५. हरीराम केला—आयकर दर्शन, ६. ओंप्रकाश केला—भारतीय अर्थशास्त्र का विवेचन, ७ के० डी० उपाध्याय डा०—अर्थशास्त्र, सिद्धान्त और विश्लेषण, ८. सत्यदेव देशश्री—अर्थशास्त्र की सरल रूपरेखा, ९. सोहनलाल गुप्त डा०—भारतीय कृषि की समस्याएँ, १०. एन० एल० कुलश्रेष्ठ—भारतवर्ष का आर्थिक भूगोल, ११. आर० एल० शर्मा व जे० आर० मेहता—आयकर, १२. डा० सिंह तथा सिंह—हमारी आर्थिक एवं वाणिज्य संबंधी समस्याएँ, १३. लक्ष्मणप्रसाद सिनहा—समाजवाद बनाम पूंजीवाद १४. बी० जी० मिडारन, वी० पी० श्रीवास्तव—प्रायोगिक भौतिक शास्त्र ।

शिक्षा शास्त्र

१. मुरारी लाल शर्मा—शिक्षा शास्त्र की रूपरेखा ।

विज्ञान

१. जगपात चतुर्वेदी—आविष्कारों की कहानी, २. जगपति चतुर्वेदी—शल्य विज्ञान की कहानी, ४. देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय, अनु० प्रबोधकुमार मजूमदार—मन की बात, ४. मधुकर—नवीन मनोविज्ञान, ५. जगपति चतुर्वेदी—कीटाणुओं की कहानी, ६. जगपति चतुर्वेदी—विलुप्त जन्तु, ७. प्रेमनाथ गर्ग, सिद्धनाद्ध मेहरोत्रा—भौतिक और रसायनशास्त्र 'अकार्बनिक', ८. चन्दनाथ मिश्र—भारतीय कृषि विज्ञान ।

विविध

१. डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर—गुप्तकालीन मुद्राएँ, २. डा० देवसहाय त्रिवेदी प्राक्-मौर्य बिहार, ३. रामगोपाल—भारतीय राजनीति 'विक्टोरिया से नेहरू तक', ४. सुरेशराम भाई—विनोबा का मिशन, ५. लक्ष्मीनारायण गर्ग—फिल्म संगीत २४वां भाग, ६. डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—राजनीति शास्त्र, ७. डा० सत्यप्रकाश—वैज्ञानिक

विकास की भारतीय परम्परा, ८. का० न० रामन्ना शास्त्री—विवाह से पहले, ९. भातखंडे विष्णुनारायण—क्रमिक पुस्तक मालिका, १०. रामेश बेदी—नीम 'बकायन', ११. विश्वनाथ सहाय माथुर, शची माथुर—शिक्षण प्रविधि, १२. डा० जगदीशचन्द्र जैन—चीनी जनता के बीच, १३. हरिबाबू बंसल एम० ए०—विश्व-परिचय, १४. कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी—स्वप्नसिद्धि की खोज में, १५. कृष्णदत्त वाजपेयी—उत्तरप्रदेश की ऐतिहासिक विभूति,, १६, प्रकाशरानी भटनागर—मूर्ती शिल्प शिक्षा, १७. मन्मथनाथ गुप्त—सेक्स का स्वभाव, १८. महेशनारायण सक्सेना, लक्ष्मीनारायण गर्ग—राग मंजरी, १९. ए० के० जान्सन, अनु० रणधीर सक्सेना—भारत विभाजन की कहानी, २०. श्री गुरुदत्त वैद्य—अन्तिम यात्रा डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी, २१. श्री गोविन्द—अपने को पहचानो, २२. स० ही० वात्स्यायन—अरे यायावर रहेगा याद, २३. मोहन राकेश—आखिरी चट्टान तक, २४. यज्ञदत्त शर्मा—आदर्श पत्र लेखन, २७. जिम कार्बेट, अनु० रमेशचन्द्र पांडे—कुमाऊँ के क्रूर शेर, २८. रामेश बेदी—देहाती इलाज, २९. अरुण—सचित्र गृहविनोद, ३०. यज्ञदत्त शर्मा—आदर्श भाषण-कला, ३१. जगदीश सहाय कुलश्रेष्ठ—संगीत शास्त्र, ३२. वासुदेवशरण अग्रवाल—हर्षचरित, ३३. निर्मला शेरजंग—मनोविज्ञान, ३४. जगन्नाथप्रसाद मिलिंद—सांस्कृतिक प्रश्न, ३५. जगन्नाथप्रसाद मिलिंद—बिल्ला का नकठेल, ३६. जानकीशरण वर्मा—स्काउट मास्टरी और ट्रिप संचालन, ३७. जानकीशरण वर्मा—स्वस्थ कैसे रहें, ३८. वसंत—संगीत विशारद, ३९. हंसराज अग्रवाल—संस्कृत लोकोक्ति प्रयोग, ४०. हंसराज अग्रवाल—संस्कृत प्रबंध-प्रदीप, ४१. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी—समाचार पत्रों का इतिहास, ४२. महेशप्रसाद श्रीवास्तव—दिल्ली से मास्को, ४३. डा० रामनाथ दुबे,—मानचित्र, ४४. लक्ष्मीनारायण गर्ग—सूर संगीत, ४५. व्यथित हृदय—हिन्दू तीर्थ, ४६. वूल्जले—भारतीय पत्रकार कला, ४७. डा० वासुदेवशरण अग्रवाल,—कल्पवृक्ष, ४८. उमाचरण शर्मा, तेजबहादुर उपाध्याय—मामूदायिक संगठन, ४९. कृष्णानन्दन प्रसाद—समाज स्वास्थ्य और दुर्घटनाएँ, ५०. जगदीश मित्तल, कमला मित्तल—भारतीय कमीदा, ५१. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री—न्याय सिद्धान्त मुक्तावली 'हिन्दी अनुवाद' ५२. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री—भारतीय दर्शनशास्त्र, ५३. नरेन्द्रनाथ बी० एस० सी०—रेडियो सर्विसिंग, ५४. रघुराज गुप्त—भारत में मासिक कल्याण और सुरक्षा, ५५. श्री हरिहर निवास द्विवेदी—त्रिपुरी, ५६. श्री हरिहर निवास द्विवेदी—मानसिंह और मानकुतूहल, ५७. स्वामी शिवानन्द सरस्वती—हिमालय के अंचल से, ५८. श्री बैजनाथ सिंह 'विनोद'—द्विवेदी पत्रावली ।

कहानियाँ

१. श्यामकिशोर झा — इंसान की जिन्दगी, २. विनायक राव विद्यालंकार —नाबुक, ३. निर्गुण —टूटे सपने, ४. हरिशंकर उपाध्याय — राह के रोड़े, ५. द्विजेन्द्र एम० ए० — किरात कन्या ६. राजेन्द्र — आखिरी मंजिल, ७. बेचन — इंसान की लाश, ८. मैक्सिम गोर्की अनु० राजनाथ— चेल्कस, ९. राजगोपालाचार्य — कुब्जा सुन्दरी, १०. कृष्णचन्द्र — काश्मीर की कहानियां, २१. कृष्णचन्द्र — स्वराज्य के पचास वर्ष बाद, १२. कृष्णचन्द्र —काला सूरज, १३. कृष्णचन्द्र — यूक्लिप्टिस की डाली, १४. ब्रह्मानन्द श्रीवास्तव — जमाने की हार, १५. शौकत थानवी अनु० शिवनाथ सिंह शांतिल्य —हंसती बोलती, १६. अनु० रूपकिशोर गंगेरवाला — सहस्र रजनी चरित्र :अलफ लैला,१७. ख्वाजा अहमद अब्बास—मेरा बेटा मेरा दुश्मन, १८. राकेश नई कली :नया पराग, १९. अनु० सन्तोष गार्गी—नीली चिनगारियां, २०. रामकृष्ण—अपना राज अपने आदमी, २१. बेचन-शर्मा पांडेय उग्र—कलाकार का पुरस्कार, २२. तिलक — बीबी के लैक्चर, २३. भाईदयाल जैन — बाहुबली और नेमिनाथ, २४. मार्कन्डेय — पान फूल, २५. ललितकुमार सिंह — दांव पेंच, २६. निर्गुण — प्यार के भूखे, २७. मोहनसिंह सेंगर — मुर्दे की मौत, २८. श्री ज्योतीन्द्रनाथ — प्रेतकी छाया, २९. श्री कमल जोशी — चार के चार , ३०. जितेन्द्र—ये घर ये लोग

नाटक

१. रघुवीरशरण मित्र — धरती माता, २. के० एम० मुन्शी अनु० अमृतलाल नागर — दो फ़क्कड़, ३. डा० कृष्णदत्त भारद्वाज-एम०ए०पीएच०डी — प्रहलाद, ४. डा० कृष्णदत्त भारद्वाज एम०ए०पी०एच० डी—मिथिलम, ५. डा० कृष्णदत्त भारद्वाज-एम०ए०पीएच०डी — वृन्दा, ६. दयावती भारद्वाज प्रभाकर — सोने की वर्षा, ७. डा० लक्ष्मण स्वरूप—नल दमयन्ती, ८.

गोविन्ददास — शेरशाह, ९. रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० धन्यकुमार जैन — रवीन्द्र साहित्य भाग १,९ तपती, १०. विद्यानिवास-मिश्र — पंचशर, ११. वेंकटेश्वरराव अनु० चलसानि सुब्बाराव — रानी रुद्रभा, १२. हरिकृष्ण 'प्रेमी'— प्रकाशन स्तम्भ, १३. अरुणा — रेल का डिब्बा, १४. कान्चनलता सब्बरवाल — लक्ष्मी बाई, १५, डा० सत्येन्द्र — मुक्ति यज्ञ, १६. सीताराम-चतुर्वेदी — अनार कली, १९. श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी — तमाशा,

कविता

१. उग्रनारायण मिश्र — शल्यवध, २. शमी शर्मा—बिखरे कण, ३. सुमित्रानन्दन पंत — बालकृष्ण राव, डा० नगेन्द्रसं०-——— कवि भारती, ४. विद्याधर महाजन — श्री गांधी चरित मानस, ५. अज्ञात संत — मीरा की पदावली, ६. अज्ञात संत — संत दादू और उनकी वाणी, ७. पोद्दार रामावतार अरुण — विदेह, ८. पोद्दार रामावतार अरुण — कोशा, ९. कमल साहित्यालंकार — नया स्वर्ग, १०. जगदीश गुप्त डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी सं० — नयी कविता १., ११. देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'— प्राणोत्सर्ग, १२. नीरज — दो गीत :मृत्यु गीत और जीवन गीत, १३. दुर्गाप्रसाद रस्तोगी —अखण्डविश्व, १४. यतीन्द्र कुमार — शेली, १५. सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव — जागरण के गीत, १६. रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' — गांव की ओर, १७. शलभ १८. सं० फिराक गोरखपुरी — नजीर की बानी, १९. श्री नन्दकिशोर — प्राणदीप, २०. महेन्द्र भटनाकर — बदलता युग, २१. बेढ़ब बनारसी — बेढ़ब की बहक, २२. नन्ददास स० डा० सुधीन्द्र — रास पंचाध्यायी भंवरगीत, २३. फिराक गोरखपुरी-— रागविराग, २४. प्रो० रामचन्द्र श्रीवास्तव — कबीर साखी सुधा, २५, सं० नरोत्तमदास स्वामी — किसन रूकमणी २६. सं० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी और श्री गुलाब राय — हिंदी प्रेमगाथा काव्य संग्रह, २७. डा० देवराज, — धरती और स्वर्ग, २८. बलदेवप्रसाद मिश्र—केशव किशोर, २९. महेश्वरप्रसाद सिंह—अश्रुहास, ३०. राजेश्वरप्रसादनारायण सिंह—अमृतप्रभा ३१. अयोध्याप्रसाद गोयलीय— शेरों सुखन :भाग ५:, ३२. कमला चौधरी — आपन मरन जगत कै हांसी, ३३. जगन्नाथ-प्रसाद 'मिलिंद' — मुक्तिका, ३४. डा० देवराज — धरती और स्वर्ग, ३५. विमलेश — प्राणों की छाया, ३६. विमलेश — वेदना, ३७. कुमुद विद्यालंकार —विद्यापति की पदावली, ३८. चन्द्रसिंह — लू :राजस्थानी काव्य, ३९. चन्द्रसिंह—बादली-:राजस्थानी काव्य: ४०. मनमोहन गौतम — जायसी ग्रन्थावली, ४१. श्रीमन्त कुमार व्यास — अलगोजी, ४२. सच्चिदानन्द-श्रीवास्तव 'आनन्द',— जीवन सरिता, ४३. हरिऔध — मर्म स्पर्श, ४४. श्री नीलकंठ तिवारी — भावना के फूल, ४५. शकुन्तला कुमारी रेणु 'साहित्यरत्न' — उन्मुक्ति, ४६. जीवनराम अग्रवाल 'जीवन' — धरती और आकाश, ४७. श्री सुरेन्द्र — बुझते दीप,

आलोचना साहित्य

१. कृष्णशंकर शुक्ल सं० —बेलि किसन रूकमणी री, २. भगवतस्वरूप मिश्र डा० —हिंदी आलोचना: उद्भव और विकास, ३. सीताराम चतुर्वेदी आचार्य — भाषालोचन, ४. सीताराम चतुर्वेदी आचार्य — समीक्षा शास्त्र, ५. पदुमलाल बख्शी — हिन्दी कथा साहित्य, ६. रामेश्वरलाल खंडेलवाल — कविता में प्रकृति चित्रण, ७. डाक्टर हरवंशलाल शर्मा — सूर और उनका साहित्य, . प्रो० चारूदेव शास्त्री — शब्दापव्द विवेक, ९. जगदीशचन्द्र जैन — भारतीय तत्व चिन्तन, १०. प्रीतम पंछी-बनजारा बेदी — पंजाब की लोक कथाएँ, ११. भगवतीप्रसाद वाजपेयी — अभिनन्दन ग्रन्थ, १२. केदारनाथ शर्मा सारस्वत अनु० — काव्य मीमांसा, १३. डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री — सन्त कवि दरिया, १४. रामावतार शर्मा महामहोपाध्याय-— श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली. १५. जयकिशनप्रसाद एम०ए० — हिंदी साहित्य की प्रवृतियां, १६. रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु० कमलाराय बी०ए० — विचित्र प्रबन्ध, १७. रूपनारायण पांडेय—शरत् ग्रन्थावली, वि० भि० कोलते—मराठी संतों का सामाजिक कार्य, १९. श्याम परमार — मालवी और उसका साहित्य, २०. शिवशेखर मिश्र — भारत का सांस्कृतिक विकास २१. सुधीरकुमार गुप्त — संक्षिप्त दशकुमार चरित, २२ हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' — तेलगु और उसका साहित्य,

२३. फिलिप व्हीलराइट — नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय, २४. कन्हैयालाल सहल और विजयेन्द्र स्नातक — कामायनी दर्शन, २५. प्रो० कौल — निबंधकार रामचन्द्र शुक्ल और चिंतामणि, २६. चन्द्रशेखर पांडेय, शांतिकुमार बाबूराम-

[शेष पृष्ट ६० पर]

कुछ पत्र पत्रिकाएँ—सूची

साधन—मासिक, वार्षिक मू० ४ रु० ८ आ०

सम्पादक—परमसन्त डाक्टर चतुर्भुज सहाय जी। मुद्रक व प्रकाशक—श्री हेमेन्द्रकुमार, साधन प्रेस, डेम्पियर नगर, मथुरा।

आर्थिक-समीक्षा—पाक्षिक—वार्षिक मू० ५ रु०

सम्पादक—श्रीमन्नारायण अग्रवाल। प्रकाशक—श्री बालकृष्णन, अ० भा० कांग्रेस कमेटी, ७ जंतरमंतर रोड, नई दिल्ली। मुद्रक—नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली।

जय-भारती—मासिक—वार्षिक मू० २ रु०

सम्पादक—पं० मु० डांगरे। प्रकाशक—जयभारती कार्यालय, ८६६, सदाशिव पेठ, शनिपार के पास पूना २। मुद्रक—लोक-संग्रह मुद्रणालय।

अमरज्योति—पाक्षिक—

सम्पादक—एम० एस० भारती, लालकुआं, देहली। प्रकाशक—अमरज्योति कार्यालय, लालकुआं, देहली। मुद्रक—श्री महासिंह, जय्यद प्रेस।

रामराज्य—साप्ता०—वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक—रामनाथ गुप्त, नरेशचन्द्र चतुर्वेदी। मुद्रक तथा प्रकाशक—रामनाथ गुप्त 'छाया' प्रेस, कानपुर।

खिलौना—मासिक—वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक—रघुनन्दन शर्मा, खिलौना कार्यालय, लश्कर। प्रकाशक—रघुनन्दन शर्मा, हिन्दी प्रेस, लश्कर।

दीपशिखा—मासिक—वार्षिक मू० १ रु० ८ आ०

सम्पादक—श्यामबिहारी एम० ए०। प्रकाशक—सत्यनारायण मिश्र, मुद्रक—जाब प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ।

धर्मदूत—मासिक—वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक—त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित। प्रकाशक—भिक्षु एम० संघरत्न, महाबोधि सभा, सारनाथ, बनारस। मुद्रक—ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमंडल यन्त्रालय, कबीरचौरा, बनारस।

प्रकाश—मासिक—वार्षिक मू० ७ रु०

सम्पादक—हितैषी अलावलपुरी। मुद्रक एवं प्रकाशक—श्री एल० सी० हितैषी प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, १३७ चहार-बाग, जालन्धर।

हिमानी—पासिक—वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक—परिपूर्णानन्द पैन्थ्यूली। प्रकाशक—परिपूर्णानन्द पैन्थ्यूली। मुद्रक—पुमेधकुमार, भास्कर, प्रेस, देहरादून।

'दीदी'—मासिक—वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादिका—श्रीमती यशोवती तिवारी। मुद्रक, प्रकाशक—श्रीनाथ सिंह, दीदी प्रेस, इलाहाबाद।

ग्रामोत्थान-पत्रिका—मासिक—वार्षिक मू० ५ ०

सम्पादक—मनफूल सिंह, बी० ए०, संगरिया 'राजस्थान'। प्रकाशक—श्री स्वामी केशवानन्द जी ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया से। मुद्रक—सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।

किशोर—मासिक—वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक—जयनारायण पांडेय, बाल-शिक्षा समिति, पटना, ४। प्रकाशक—जयनारायण पांडेय, बाल शिक्षा समिति, पटना ४। मुद्रक—हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना ४।

कथानिका—मासिक—वार्षिक मू० ३ ०

सम्पादक—श्री रामाधार सिनहा 'शांतिप्रिय'। मुद्रक एवं प्रकाशक—श्री देवेन्द्र, बिहार प्रेस, दरियापुर, पटना ५।

खाता-बही--वार्षिक मू० ८ रु०

सम्पादक–रामगोपाल जे० पुरोहित, खाता बही पो० बा० ४८, जयपुर। प्रकाशक–रामगोपाल जे० पुरोहित। मुद्रक–राष्ट्रदूत प्रेस, जयपुर।

जैन-जगत--मासिक--वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक–ऋषभदास रांका। प्रकाशक–जमनालाल जैन, वर्धा। मुद्रक–गं० ना० सर्राफ व्यवस्थापक, श्रीकृष्ण प्रिंटिंग वर्क्स, वर्धा।

अहिंसावाणी--मासिक--वार्षिक मूल्य ४ रु० ८ आ०

सम्पादक–कामताप्रसाद जैन, अहिंसावाणी, अलीगंज, एटा। प्रकाशक–अ० वि० जैन मिशन, अलीगंज, एटा। मुद्रक–महावीर मुद्रणालय प्रेस, अलीगंज, एटा।

दिव्यालोक--त्रैमासिक--वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक–डा० रघुनन्दनप्रसाद शर्मा, एम० ए०, ज्योतिषाचार्य। मुद्रक–विश्वप्रकाश, कला प्रेस, प्रयाग। प्रकाशक–ज्योतिष आलोक गृह, ६२१, दारागंज, इलाहाबाद।

गोपुकार--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–प्रकाशक--वैद्यराज पं० दयाप्रकाश भारद्वाज, गोपुकार कार्यालय,मकान नं० ३०, गंजीपुरा, जबलपुर। मुद्रक–प्रमोद प्रिंटिंग प्रेस, कोतवाली बाजार, जबलपुर।

बिहार शिक्षकव–त्रैमासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–शिवस्वरूप वर्मा एम० ए०, बिहार शिक्षक, महेंद, पटना ६। मुद्रक–संजीवन प्रेस, दीपा घाट, पटना।

आरसी--मासिक--वार्षिक म० ४ रु०

सम्पादिका–लीला प्रकाश। मुद्रक–शुभ कामना प्रेस, ७।३६, तिलकनगर, कानपुर।

पुस्तकालय सन्देश--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–श्री कृष्ण खंडेलवाल, पुस्तकालय संदेश, पो० पटना विश्वविद्यालय, पटना ५। प्रकाशक–श्री कृष्ण खंडेलवाल। मुद्रक–वैशाली प्रेस, पटना ४।

गोरक्षण--मासिक--वार्षिक मू० २ रु० ८ आ०

सम्पादक–श्री महेशदत्त शर्मा, रामनगर, बनारस। प्रकाशक–श्री महेशदत्त शर्मा अध्यक्ष, गोरक्षण साहित्य मन्दिर, पो० रामनगर, बनारस। मुद्रक–काशीराज मुद्रणालय, दुर्ग रामनगर, बनारस।

आवाज--साप्ताहिक--वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक–प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, देहरादून। प्रकाशक, एवं, मुद्रक–राजेन्द्रकुमार द्वारा भास्कर प्रेस, देहरादून।

किसानी-समाचार---मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–श्री रा० अ० रामय्या। प्रकाशक–मध्यप्रदेश कृषि विभाग प्रकाशन। मुद्रक–ह्वी के अय्यर, अधीक्षक, शासन मुद्रणालय, नागपुर।

ग्राम-सेवक--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक–परमेश्वर सिंह। प्रकाशक–ग्राम सेवक प्रकाशन, कदमकुआं, पटना ३। मुद्रक–युनाइटेड प्रेस लि०, पटना ४।

भोपाल समाचार--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–गोवर्द्धनदास मेहता। प्रकाशक–भोपाल शासन, विकास विभाग। मुद्रक–सुप्रिण्टेण्डेण्ट स्टेट प्रेस, भोपाल

कल्पवृक्ष--मासिक--वार्षिक मू० २ रु० ८ आ०

सम्पादक–बालकृष्ण नागर। प्रकाशक–डा० बालकृष्ण नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन, म० भा०। मुद्रक–मोहन प्रिंटिंग प्रेस, माधवनगर, उज्जैन।

सेनानी--साप्ताहिक--वार्षिक मू० ८ रु०

सम्पादक-शम्भूदयाल सक्सेना, बीकानेर। मुद्रक एवं प्रकाशक-शेखरचन्दस क्सेना, एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर।

प्राइमरी स्कूल पत्रिका मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादिका-लक्ष्मी देवी। प्रकाशक-लक्ष्मी पुस्तक भंडार, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद।

बुक ट्रेडर--मासिक--वार्षिक मू० २ रु० ८ आ०

सम्पादक-अक्षय चटर्जी। प्रकाशक-सतीनाथ मुखर्जी, जी० टी० एस० बुक सेण्टर, १४ जदुमित्र लेन, कलकत्ता ४। मुद्रक-नाभाशक्ति प्रेस, ५ आद्वैत मलिक लेन, कलकत्ता ६।

इन्डस्ट्री टुडे--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक-एच० सी० बंजाही। प्रकाशक-एच० सी० बंजाही द्वारा, इन्डस्ट्री टुडे, सोहनगंज। मुद्रक-ग्लैमर प्रिंटिंग प्रेस, लालकुआं, देहली।

राजश्री--मासिक--वार्षिक मू० ५ रु०

सम्पादक-रा० खि० त्रिपाठी 'रुक्म'। प्रकाशक-श्री एस० एल० जुनिवाल राजश्री कला मन्दिर लि०, ५६ बेंटिक स्ट्रीट, कलकत्ता। मुद्रक-श्री भारती प्रेस, ६४ ए० धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता १३।

शिक्षक बन्धु--मासिक--वार्षिक मू० २ रु० ८ आ०

सम्पादक-अध्यापक जगनसिंह सेंगर। प्रकाशक-महाशय रामचन्द्र गुप्त, कटरा, अलीगढ़। मुद्रक-पं० हरप्रसाद शर्मा, प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, अलीगढ़।

नया चीन--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादिका-मनोरमा सैटिन। प्रकाशक-नया चीन प्रकाशन की शान्ति प्रकाश गोयल डी ४७।२११, रामापुरा बनारस। मुद्रक-शारदा मुद्रण, ठठेरी बाजार, बनारस।

एजुकेशन--मासिक--वार्षिक मू० १० रु०

सम्पादक-प्रो० कालीप्रसाद। प्रकाशक-के० के० जोशी द्वारा, टी० सी० ई० जरनल्स एण्ड पब्लिकेशन्स लि०, लखनऊ। मुद्रक-श्री एस० एन० कीर्ति, कीर्ति प्रेस, सुन्दर बाग, लखनऊ।

चाणक्य--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक-शिवनन्दन सांकृत्यायन, सुरेन्द्र कौण्डिल्य। प्रकाशक-चाणक्य, देवेन्द्रनाथ लेन, पटना ४। मुद्रक-ओरियन्ट प्रेस, पटना।

स्वस्थ जीवन--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु० ८ आ०

प्र० सम्पादक-प्रो० गोकुलप्रसाद गुप्त। प्रकाशक-गोकुलप्रसाद गुप्त, स्वास्थ्य मन्दिर, दानापुर कैण्ट। मुद्रक-भारत-भूषण प्रेस, पटना १।

श्री वेंकटेश्वर समाचार--साप्ता०--वार्षिक मू० ५ रु०

सम्पादक-पं० देवेन्द्र शर्मा शास्त्री। प्रकाशक-पं० भगवतीप्रसाद अवस्थी, मैनेजर, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई। मुद्रित-३६।४८, खेतवाड़ी बैंक रोड, ७वीं गली बम्बई।

नया-पथ--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक-शिव वर्मा। मुद्रक-शिव वर्मा द्वारा न्यू-एज प्रिंटिंग प्रेस, १९० बी खेतवाड़ी मेन रोड। प्रकाशक ३१४, वल्लभ भाई पटेल रोड, बम्बई ४।

सेवा ग्राम--साप्ताहिक--वार्षिक मू० ५ ०

सम्पादक-ज्ञानेन्द्रप्रसाद जैन। स्थानापन्न संपादक-प्रद्युम्न कृष्ण दीक्षित, १, दरियागंज, दिल्ली द्वारा संपादित व प्रकाशित। मुद्रक-टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, १०, दरियागंज, दिल्ली।

शिक्षा-सुधा--मासिक--वार्षिक मू० १ रु०

सम्पादक–वीरेन्द्रकुमार, बी० ए०, विशारद, मंडी धनौरा, मुरादाबाद । मुद्रक, प्रकाशक--सागरमल गर्ग, गुप्ता ब्रदर्स प्रिंटिंग वर्क्स, मंडी, धनौरा, मुरादाबाद ।

नई शिक्षा--मासिक--वार्षिक मू० ४ रु० ८ आ०

सम्पादक–रघुवीर चतुर्वेदी, नई शिक्षा, तहसीलदारों का रास्ता, जयपुर । मुद्रक–अवैं० सं० रघुबीर चतुर्वेदी के राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स में मुद्रित ।

'पुस्तक-जगत'--मासिक--वार्षिक मू० २ रु०

सम्पादक और प्रकाशक–वीरेन्द्रकुमार, पुस्तक जगत् कार्यालय, अशोक राजपथ, पटना ६ । मुद्रक–राष्ट्रभाषा प्रेस, पटना ४ ।

'प्रसाद'--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु०

सम्पादक–कृष्णदेवप्रसाद गौड़, 'बेढब बनारसी' । प्रकाशक–प्रसाद परिषद, ६५।२०६, बड़ी पियरी, बनारस ।

भव्य-भारत--मासिक--वार्षिक मू० १ रु

सम्पादक–पद्मप्रकाश 'संतोष' । मुद्रित एवं प्रकाशित–श्री पद्मप्रकाश संतोष के प्रबंध से श्री लक्ष्मी मुद्रणालय, सहारनपुर में ।

'वालण्टियर'--मासिक--वार्षिक चन्दा ३ रु० ८ आ०

'सम्पादिका–सुखदेवी चौधरी । मुद्रक–चंद्रोदय प्रेस, लश्कर । प्रकाशक–श्री कल्याणप्रसाद कुलश्रेष्ठ, डायरेक्टर, वालण्टियर ट्रस्ट मंडल, लश्कर ।

चिनगारी--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु० ६ आ०

सम्पादक–जयन्त कुशवाहा, ज्वालाप्रसाद 'केशर' । मुद्रक, एवं प्रकाशक–जे० पी० कुशवाहा, चिनगारी प्रेस एवं प्रकाशन, बनारस ।

नोक-झोंक--मासिक--वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक–केदारनाथ भट्ट, एम० ए०, एल० एल० बी०, नोक-झोंक कार्यालय, अस्पताल रोड, आगरा । मुद्रक–अमृत इलैक्ट्रिक प्रेस, आगरा ।

रंगीला-मुसाफिर--मासिक--वार्षिक मू० २ रु०

सम्पादक–पं० प्यारेलाल शर्मा सम्पादक प्रिंटर पब्लिशर रंगीला मुसाफिर कार्यालय, जगाधरी । मुद्रक–अशोक प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी, ई० पी० ।

जनवाणी--साप्ताहिक--वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक–इन्द्रदत्त 'स्वाधीन', कोटा । प्रकाशक–श्री इन्द्रदत्त स्वाधीन, कोटा । मुद्रक –श्री उम्मेद प्रेस, कोटा 'राजस्थान' ।

प्रगति--साप्ताहिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–श्रीधर नाहुद्वार, बी० ए०, जालना । प्रकाशक–श्री मदनलाल जी चौविसिया, प्रगति-कार्यालय, पांजरापोल भवन, काली कुर्ती रोड, जालना । मुद्रक–श्री अमरचंद गंगाराम पवार, गंगासागर आर्ट प्रेस, जालना ।

राष्ट्र-निर्माता--पाक्षिक--वार्षिक मू० ५ रु०

सम्पादक–भुवनेश्वर मिश्र, कार्यालय, बिहार शिक्षक संघ, ब्रजकिशोर पथ, पटना १ । प्रकाशक व मुद्रक–श्री अयोध्या ठाकुर, राष्ट्रनिर्माता प्रेस, पूर्णियां ।

'जन-साहित्य'--द्वैमासिक--वार्षिक मू० ३ रु० ८ आ०

सम्पादक–भगवान सिंह 'विमल' । प्रकाशक–देवकीनन्दन 'विकल' द्वारा जैन-साहित्य प्रकाशन, हाथरस । मुद्रक–चन्द्रपाल आजाद, हिन्दू प्रेस, हाथरस ।

संगम--मासिक--वार्षिक मू० ३ रु०

सम्पादक–सूरजचन्द्र सत्यप्रेमी, सत्यालंकार, बड़ी सादड़ी, राजस्थान। मुद्रक, प्रकाशक–साहु रघुनन्दनप्रसाद 'विनीत' सत्याश्रम वर्धा।

शान्ति-सन्देश--मासिक--वार्षिक मू० ४ रु०

सम्पादक–प्रो० विश्वानन्द एम० ए०, बी० एल०, कोशी कालेज, खगड़िया, मुँगेर। प्रकाशक–डा० रामप्रसाद वैद्य भूषण, उपसभापति, अखिल भारतीय सन्त मत-सत्संग। मुद्रक–दि ओरिएन्ट प्रिंटिंग वर्क्स, जमालपुर।

सोवियत--पचित्र पाक्षिक--वार्षिक मू० २ रु० ८ आ०

सम्पादित व प्रकाशित--भारत में तास प्रतिनिधि ग एफीमोव, २५, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली। मुद्रित–न्यू इंडिया प्रेस, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

चरित्र-निर्माण--मासिक--वार्षिक मू० ६ रु० ४ आ०

सम्पादक–चन्द्रप्रकाश सक्सेना, सत्यमित्र ब्रह्मचारी, निर्माण कार्यालय, ऋषिकेश 'देहरादून'। मुद्रक तथा प्रकाशनाध्यक्ष, देवेन्द्र विशारद, विज्ञान प्रेस, ऋषिकेश, देहरादून।

संगीत--पचित्र मासिक--वार्षिक मू० ५ रु० १० आ०

सम्पादक–महेशनारायण सक्सेना एम० ए०, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस। मुद्रक–ठा० भरत सिंह, संगीत प्रेस, हाथरस।

नई दिशा--मासिक--वार्षिक मूल्य ५ रुपया

संपादक– शिवनारायण गौड़। प्रकाशक– ज्ञान मन्दिर, छावनी नीमच। मुद्रक– ज्ञानोदय मुद्रणालय, छावनी नीमच।

सरस्वती संवाद--मासिक– वार्षिक मूल्य ४ रुपया

सम्पादक– डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, मोती कटरा, आगरा। प्रकाशक– फूलचन्द्र गुप्ता। मुद्रक– राकेशचन्द उपाध्याय, आगरा पापूलर प्रेस, मोती कटरा, आगरा।

जीवन-साहित्य--मासिक--वार्षिक--मूल्य ४ रु०

सम्पादक– हरिभाऊ उपाध्याय, यशपाल जैन। प्रकाशक– मार्तन्ड उपाध्याय, मंत्री सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। मुद्रक– हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली।

आधुनिक शिक्षा--त्रैमासिक--वार्षिक–मूल्य ५ रु०

सम्पादक– वी० एस० माथुर,सचीन माथुर। प्रकाशक– श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर राजकमल पब्लिकेशन्स लि० बम्बई। मुद्रक – श्री गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

पंचायत--मासिक--वार्षिक–मूल्य ४ रु०

संपादक – श्री चन्द्रदेव नारायण। मुद्रक– प्रकाशक– श्री चन्द्रदेव नारायण युगान्तर प्रेस व प्रकाशन, मोतीहारी।

गुरुकुल पत्रिका--मासिक--वार्षिक–मूल्य ४ रु०

संपादक– श्री सुखदेव, श्री रामेश वेदी। प्रकाशक– मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार। मुद्रक– श्री रामेश वेदी गुरुकुल मुद्रणालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार।

ज्ञान धारा—षण्मासिक पत्रिका

संपादक – मुकुंद वीरकर। प्रकाशक – मकुंद वीरकर प्रकाशन विभाग प्रमुख, ज्ञानलता मंडल १९४ गायावाड़ी, बम्बई ४। मुद्रक– रघुनाथ के. विश्वासराव, सुलभा प्रिन्टरी, मुगभाट बम्बई ४।

टिस्को--समाचार

संपादक– श्री कमल जोशी। प्रकाशक– श्री कमल जोशी द्वारा टाटा आयरन एन्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड, जमशेदपुर। मुद्रक– खान साहेब जे. एन. गिल्टर, कमरशियल स्टेशनरी मार्ट एन्ड प्रिंटिंग वर्क्स, जमशेदपुर।

देशबन्धु---मासिक---वार्षिक मूल्य ३ रु०

सम्पादक– बैजनाथ दानी, देशबन्धु पुस्तकालय, मथुरा । प्रकाशक– दीनानाथ दानी । मुद्रक– बैजनाथ दानी, लोक साहित्य प्रेस, मथुरा ।

गल्प भारती---कहानी मासिक---वार्षिक मूल्य–साढ़े चार रुपया

संपादक – काशीनाथ ८ इण्डियन मेरर स्ट्रीट कलकत्ता १३ । मुद्रक प्रकाशक– भागवत प्रसाद तिवारी ईस्ट इन्डिया प्रेस ८ - इन्डियन मेरर स्ट्रीट कलकत्ता ।

चंडी-शाक्त---सम्मेलन मुख पत्रिका---वार्षिक मूल्य साढ़े पांच रुपया

संपादक– राणा पराक्रम जंग बहादुर । मुद्रक प्रकाशक– चण्डी कार्यालय, १६ एडवान्सटन रोड प्रयाग ।

पत्र-पत्रिका का नाम	संपादक	प्रकाशक	वार्षिक मूल्य
साहित्य	शिवपूजन सहाय नलिनविलोचनशर्मा	बिहार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन पटना, ३	८)
नई धारा	रामवृक्ष बेनीपुरी	अशोक प्रेस पटना ६	१०)
कल्पना	आर्येन्द्र शर्मा	मधुसूदन चतुर्वेदी, ८३१, बेगम बाजार हैदराबाद (दक्षिण)	१२)
जीवनसाहित्य	हरिभाऊ उपाध्याय	सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली	४)
बाल भारती	श्री राम लोचन शरण	पुस्तक भंडार पटना, ४	४)
किशोर	रघुवंश पाण्डेय	बालशिक्षा समिति, पटना ४	४)
आजकल		पब्लिकेशन डिवीजन मिनिस्ट्री आफ इन्फार्मेशन, दिल्ली	८)
आलोचना		राजकमल प्रकाशन दिल्ली	१२)
आदिवासी	राधाकृष्ण	बिहार जनसंपर्क विभाग, रांची	१॥)
साहित्य संदेश	महेन्द्र	साहित्य रत्न भंडार, आगरा	४)
विशाल भारत	श्रीराम शर्मा	विशाल भारत कार्यालय, कलकत्ता	६)
आरोग्य	टिबलदास मोदी	आरोग्य कार्यालय, गोरखपुर	--
नागरीप्रचारिणी पत्रिका		नागर प्रचारिणी सभा, काशी	१०)
राष्ट्रभारती		राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, वर्धा	६)
चन्दामामा	चन्दामामा	चन्दा प्रकाशन, पो० बाक्स १६८६, मद्रास १	४॥)
अजन्ता	हैदराबादराज्य हिन्दी प्रचार सभा	नीमपल्ली रोड, हैदराबाद (दक्षिण)	--
राष्ट्रभाषा	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	हिन्दी नगर, वर्धा (म० प्र०)	३)
कल्याण	हनुमान प्रसाद पोद्दार	गीता प्रेस गोरखपुर	७॥)
प्रकाशन समाचार	ओंमप्रकाश	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	२॥)

जीवनसाहित्य	हरिभाऊ उपाध्याय	सस्ता साहित्य मंडल,कनाट सरकस, नई दिल्ली	मासिक	४-०-०
मंगल-प्रभात	काका कालेलकर	हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा	मासिक	३-०-० २-०-० ०-५-०
राष्ट्र भारती	मोहनलाल भट्टमौर ऋषिकेश वर्मा	राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा पो० हिन्दी नगर (मध्य प्रदेश		६-०-०
अनुशीलन	धीरेन्द्र वर्मा	भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग	त्रैमासिक	३-०-०
अवन्तिका	लक्ष्मीनारायणसुधांशु	अजन्ता प्रेस लिमिटेड,पटना-४	मासिक	१०-०-०
नया जीवन	कन्हैयालाल मिश्र	विकास लिमिटेड, सहारनपुर (उ० प्र०)	मासिक	५-०-०

त	रतनलाल जोशी	नवनीत प्रकाशन, ३४१ तारदेव बम्बई–७	त्रैमासिक	१०-०-०
	रामदयाल पांडेय	मोहन प्रेस, पटना–३	मासिक	७-०-०
	शिवचन्द्र नागर	व्यवस्थापक, प्रवाह कार्यालय, राजस्थान भवन, भवन, अकोला (म० प्र०)	मासिक	६-०-०
	कमल कोठारी	सोजाती गेट, जोधपुर	मासिक	१४-०-०
ारती		ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा	त्रैमासिक	३-०-०
	कमलाशंकर मिश्र	मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, प्रिंटींग प्रेस, इन्दौर	,,	५-०-०
ज्योति	सन्त राम	वैदिक रिसर्च इन्स्टीच्यूट, प्रेस, साधु आश्रम होशियारपुर	,,	८-०-०
लनपत्रिका	रामनाथ सुमन	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	त्रैमासिक	८-०-०
ा	विश्वनाथ	कनाट सर्कस, नई दिल्ली	मासिक	१०-०-०
वती	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	इण्डियन प्रेस, प्रयाग	,,	७-८-०
वती संवाद	डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी	मोतीकटरा, आगरा	,,	४-०-०
ागर	डा० नगेन्द्र और श्री अज्ञेय	संसदीय हिन्दी परिषद, दिल्ली द्वारा आत्मारामएन्ड संस काश्मीरीगेट, दिल्ली	त्रैमासिक	६-०-०
णभारत		दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागराज नगर, मद्रास १७	,,	६-०-०
ण हिन्द	रामानन्द शर्मा	डाइरेक्टर आफ इन्फारमेशन एन्ड पब्लिसिटी, फोर्ट सेंट जार्ज, मद्रास	,,	४-०-०
समाज	मोहनसिंह सेंगर	३३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता	,,	८-०-०
म	वि. ना. वाडेगांवकर	उद्यम कार्यालय, धर्म पेठ, नागपुर	,,	७-०-०
ाग व्या- : पत्रिका		व्यापार और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली	,,	६-०-[illegible]
पुरी	रघुवंशनारायण सिंह	भोजपुरी कार्यालय, आरा	मासिक	५-[illegible]
रमा		११ मोतीलालनेहरू रोड मुट्ठीगंग प्रयाग	,,	[illegible]-०
मुन्नू	वैद्यनाथ मिश्र	व्यवस्थापक, अजन्ता प्रेस पटना–४	,,	४-०-०
न-भारती	मन्मथनाथ गुप्त	पब्लिकेशन डिविजन ओल्डसेक्रेटेरियट दिल्ली ८	,,	४-०-०
मोहन	सत्यव्रत	माया प्रेस, इलाहाबाद	,,	३-१२-०
शु	सत्यवान शर्मा	शिशु कार्यालय, प्रयाग	,,	३-०-०
ीम व तरक्की	बरकत अली	इदारा तालीम व तरक्की जामिया, मटिया महल, दिल्ली	,,	३-०-०
क्षा		शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रयाग	त्रैमासिक	३-०-०
तक-जगत	वीरेन्द्र कुमार	पुस्तक जगत कार्यालय, पटना–६	त्रैमासिक	२-०-०
तकालय	श्रीकृष्ण खंडेलवाल	पो० पटना विश्वविद्यालय, पटना–५	,,	३-०-०
णक्य	शिवनंदनसांकृत्यायन	देवेन्द्रदास लेन, पटना	,,	३-०-०
र्मवीर	माखनलाल चतुर्वेदी	कर्मवीर, खण्डवा, मध्य प्रदेश	साप्ता०	६-०-०
र्मयुग	सत्यकाम विद्यालंकार	व्यवस्थापक, बम्बई	,,	१५-०-०
हिन्दुस्तान	मुकुट बिहारी शर्मा	हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली	,,	६-१२-०

१९५४ के साथ प्रकाशन के क्षेत्र में

हिन्दी साहित्य और साहित्यकार

सदैव

स्मरणीय

रहेगा !

क्योंकि इस रचना का जैसा स्वागत हुआ

वैसा किसी का नहीं ।

१९५५ में उसी लेखक की

प्रसाद की कविताएँ

पढ़िये

—: पो० ब० नं० ७०, बनारस :—

---:०:---

मु०—श्रीकृष्णचन्द्र बेरी, विद्यामन्दिर प्रेस लि०, मानमन्दिर, बनारस ।